CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥ श्रीहरिः ॥

गीता-दैनन्दिनी

सन् १९९७ ई०

(संवत् २०५३-५४)

गीताप्रेस, गोरखपुर

RajGuru Math, Swami [illegible] Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"नाम-विचार"—

श्री विष्णु और श्री शिव के प्रसिद्ध नाम 'हरि' और 'हर' हैं। इन दोनों का संस्कृत भाषा की व्युत्पत्ति से मूलतः एक ही अर्थ है— 'चुरानेवाला'। पाण्डव-गीता में कहा है:—

"नारायणो नाम नरो नराणां
प्रसिद्ध चौरः कथितः पृथिव्याम्।
अनेक जन्मार्जित पापपुञ्जं
हरत्यशेषं स्मरणेन पुंसाम्॥

अर्थात् भू मण्डल के मनुष्यों के बीच में 'नारायण' नाम का चोर बहुत प्रसिद्ध है जो मनुष्य के हजारों जन्मों के कमाये हुए पापपुञ्ज को स्मरणमात्र से एकदम और निःशेषरूप से चुरा लेता है। 'गोपालसहस्रनाम' में भगवान् श्रीकृष्ण को चोरशिरोमणि बताया गया है। इसी प्रकार यजुर्वेद के रुद्राध्याय में तो भगवान् शिव को— 'स्तेनानां पतिः' तथा 'तस्कराणां पतिः' कहा है।

'श्री शिवसहस्रनाम' और श्री 'विष्णुसहस्रनाम' एक ही भगवान् वेदव्यास के बनाये हुए महाभारत के 'अनुशासनपर्व' के अन्तर्गत हैं और दोनों सहस्रनामों के अनेक प्रकरण अति सुंदर हैं। प्रथम तो श्री शिवसहस्रनाम का प्रकरण आता है। कुरुक्षेत्र युद्ध के बाद शरशय्या में लेटे हुए पितामह श्री भीष्मजी से राजा युधिष्ठिर ने पूछा कि— 'सब देवताओं में सर्वश्रेष्ठ कौन है जिसकी उपासना से लौकिक, पारलौकिक तथा पारमार्थिक कल्याण प्राप्त हो सकता है'। इस पर श्री भीष्मजी ने [illegible]

Raj Guru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देनेका अधिकारी नहीं हूँ।। भगवान् श्री कृष्ण स्वयं यहीं विराजमान हैं। उन्हीं से पूछो।'

तदनन्तर राजा युधिष्ठिर द्वारा पूछे जाने पर श्रीकृष्ण ने यह कहकर कि—
'भगवान् श्री शिवजी ही सब देवताओं में सर्वथा श्रेष्ठ और पूज्य हैं। मैंने भी उन्हीं की उन्हीं की घोर तपस्यापूर्वक उपासना करनेसे अमुक अमुक वरदान आदि लाभों को प्राप्त किया था'— कहकर भगवान् शिवकी खूब महिमा गायी है और अंत में पाण्डवों को श्री शिवसहस्त्र नाम का उपदेश किया है।

इसी महाभारत के इसी अनुशासन पर्व में कुछ आगे चलकर दूसरा प्रसंग श्री विष्णुसहस्त्रनाम के बारे में यह आता है कि भगवती पार्वती ने भगवान् श्री शिवजी से यह पूछा कि सब देवताओं में सर्वथा श्रेष्ठ कौन है? जिसकी उपासना से ऐहिक, पारलौकिक तथा पारमार्थिक श्रेय प्राप्त हो सकता है?'
भगवान् शङ्कर ने कहा— सब देवताओं में भगवान् विष्णु ही सर्वश्रेष्ठ हैं, मैंने भी इन्हीं की उपासना से अमुक अमुक वरदान आदि लाभों को प्राप्त किया है और श्री नारायण की महिमा का खूब गायन करके अन्त में पार्वती जी को श्री विष्णुसहस्त्रनाम का उपदेश किया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नित्य-प्रार्थना

वंशीविभूषितकरान्नवनीरदाभात्
पीताम्बरादरुणबिम्बफलाधरोष्ठात्।
पूर्णेन्दुसुन्दरमुखादरविन्दनेत्रात्
कृष्णात् परं किमपि तत्त्वमहं न जाने॥

जिनके करकमल वंशीसे विभूषित हैं, जिनकी नवीन मेघकी-सी आभा है, जिनके पीत वस्त्र हैं, अरुण बिम्बफलके समान अधरोष्ठ है; पूर्णचन्द्रके सदृश सुन्दर मुख और कमलके-से नयन हैं ऐसे भगवान् श्रीकृष्णको छोड़कर अन्य किसी भी तत्त्वको मैं नहीं जानता।

☆

कर प्रणाम तेरे चरणोंमें लगता हूँ अब तेरे काज।
पालन करनेको आज्ञा तव मैं नियुक्त होता हूँ आज॥
अन्तरमें स्थित रहकर मेरे बागडोर पकड़े रहना।
निपट निरंकुश चंचल मनको सावधान करते रहना॥
अन्तर्यामीको अन्तःस्थित देख सशङ्कित होवे मन।
पाप-वासना उठते ही हो नाश लाजसे वह जल-भुन॥
जीवोंका कलरव जो दिनभर सुननेमें मेरे आवे।
तेरा ही गुणगान जान मन प्रमुदित हो अति सुख पावे॥
तू ही है सर्वत्र व्याप्त हरि! तुझमें यह सारा संसार।
इसी भावनासे अन्तरभर मिलूँ सभीसे तुझे निहार॥
प्रतिपल निज इन्द्रियसमूहसे जो कुछ भी आचार करूँ।
केवल तुझे रिझानेको, बस तेरा ही व्यवहार करूँ॥

☆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥ श्रीहरिः ॥

गीताप्रेसकी निजी दूकानें तथा स्टेशन-स्टाल

गीताप्रेस, गोरखपुर—२७३००५, फोन (०५५१) ३३४७२१; फैक्स (०५५१) ३३६९९७

कलकत्ता-	गोविन्दभवन-कार्यालय;	©(०३३) २३८६८९४
पिन-७००००७	१५१, महात्मा गाँधीरोड	२३८०२५१
दिल्ली-	गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान;	©(०११) ३२६९६७८
पिन-११०००६	२६०९, नयी सड़क	
पटना-	गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान;	©(०६१२) ६६२८७९
पिन-८००००४	अशोक राजपथ, बड़े अस्पतालके सदर फाटकके सामने	
कानपुर-	गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान;	©(०५१२) ३५२३५१
पिन-२०८००१	२४/५५, बिरहाना रोड	
वाराणसी-	गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान;	©(०५४२) ३५३५५१
पिन-२२१००१	५९/९, नीचीबाग	
हरिद्वार-	गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान;	©(०१३३) ४२२६५७
पिन-२४९४०१	सब्जीमण्डी, मोतीबाजार	
ऋषिकेश-	गीताभवन, गङ्गापार, पो० स्वर्गाश्रम	©(०१३५) ४३०१२२
पिन-२४९३०४		

स्टेशन-स्टाल [प्लेटफार्म नं० (कोष्ठ) में]

दिल्ली जंक्शन (प्लेटफार्म नं० १२); नयी दिल्ली (नं० ८-९); **अन्तर्राज्यीय बस-अड्डा, दिल्ली;** हजरत निजामुद्दीन [दिल्ली] (नं० ४-५); **कानपुर (नं० १);** गोरखपुर (नं० १); **वाराणसी (नं० ४-५);** हरिद्वार (नं० १); **कोटा [राजस्थान] (नं० १);** पटना जंक्शन, पुस्तक-ट्राली; **हावड़ा, न्यू कॉम्पलेक्स (नं० १८ के पास);** मुगलसराय जं० (नं० ३-४); **लखनऊ [एन० ई० रेलवे];** सिकन्दराबाद (नं० १); **सियालदा मेन (नं० ८);** धनबाद (नं० २-३); **आसनसोल (नं० ५);** मुजफ्फरपुर (नं० १)।

अन्य अधिकृत पुस्तक-विक्रेता—श्रीगीताप्रेस पुस्तक-प्रचारकेन्द्र, 'बुलियन बिल्डिंग', जौहरी बाजार, जयपुर-३०२००३ © (०१४१) ५६३३७९

अँग्रेजी एवं दक्षिण भारतीय भाषा प्रकाशनके प्रमुख विक्रेता

गोपाल-सेवा ट्रस्ट-८२, कृष्णा टाकीज रोड, इरोड-६३८००३ © (०४२४) २१३९७६

सन् १९९३ से १९९६ तक प्रथमसे चतुर्थ संस्करण	३,१०,०००
सन् १९९७ पञ्चम संस्करण	१,००,०००

मूल्य—पचीस रुपये

प्रकाशक-मुद्रक—गोविन्दभवन-कार्यालय, गीताप्रेस, गोरखपुर-२७३००५

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥ श्रीहरिः ॥

गीता-दैनन्दिनी

वर्ष १९९७ में सम्पूर्ण गीताका पाठ और मनन करनेकी दैनिक चर्या

दण्डि स्वामी विमलानन्द सरस्वती

(१) पता:— बी ३/
पड़दू. राजगुरुमठ
शिवालाघाट-वाराणसी (उ॰प्र॰)

(२) श्री स्वामी सहजानन्द सरस्वती-आश्रम,
बक्सर, बिहार

यूनियन बैंक आफ इण्डिया • सोनारपुरा-शाखा
फिक्सड खाता- संख्या- 5368 वाराणसी
(उ॰प्र॰)

राजगुरुमठ-न्यास-समिति-खाता- 5374
यूनियन बैंक आफ इण्डिया-शाखा- सोनारपुरा
वाराणसी

× × ×

"अन्तरात्मा जैविक बुद्धि या ईश्वरीय बुद्धि है।"

"अहं निर्विकल्पो निराकार रूपो,
विभुर्व्याप्य सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणाम्।
सदा मे समत्वं न मुक्तिर्न बन्धः,
चिदानन्द रूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम्॥

(315019)

(315012)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥ श्रीहरिः ॥

श्रीमद्भगवद्गीता एक परम रहस्यका विषय है

"श्रीमद्भगवद्गीता" यह एक परम रहस्यका विषय है। इसको परम कृपालु श्रीकृष्णभगवान्‌ने अर्जुनको निमित्त करके सभी प्राणियोंके हितके लिये कहा है। परन्तु इसके प्रभावको वे ही पुरुष जान सकते हैं कि जो भगवान्‌के शरण होकर श्रद्धा, भक्तिसहित इसका अभ्यास करते हैं। इसलिये अपना कल्याण चाहनेवाले मनुष्योंको उचित है कि जितना शीघ्र हो सके अज्ञाननिद्रासे चेतकर एवं अपना मुख्य कर्तव्य समझकर श्रद्धा, भक्तिसहित सदा इसका श्रवण, मनन और पठन-पाठनद्वारा अभ्यास करते हुए भगवान्‌के आज्ञानुसार साधनमें लग जायँ। क्योंकि जो मनुष्य श्रद्धा, भक्तिसहित इसका मर्म जाननेके लिये इसके अन्दर प्रवेश करके सदा इसका मनन करते हैं, एवं भगवत्-आज्ञानुसार साधन करनेमें तत्पर रहते हैं, उनके अन्तःकरणमें प्रतिदिन नये-नये सद्भाव उत्पन्न होते हैं और वे शुद्धान्तःकरण हुए शीघ्र ही परमात्माको प्राप्त हो जाते हैं।

जयदयाल गोयन्दका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

श्रीमद्भगवद्गीता

अथ प्रथमोऽध्यायः

धृतराष्ट्र उवाच

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः। मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय॥१॥

सञ्जय उवाच

दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा। आचार्यमुपसङ्गम्य राजा वचनमब्रवीत्॥२॥

dhṛtarāṣṭra uvāca

dharmakṣetre kurukṣetre samavetā yuyutsavaḥ māmakāḥ pāṇḍavāścaiva kimakurvata sañjaya

sañjaya uvāca

dṛṣṭvā tu pāṇḍavānīkaṁ vyūḍhaṁ duryodhanastadā ācāryamupasaṅgamya rājā vacanamabravīt

सूर्यो० ६।४६, सूर्या० ५।१४ *(Ch. 1/1-2)*

आज पं॰ रामचन्द्र शर्मा, भ्रातृज पूज्यपाद श्री स्वामी सहजानंद सरस्वती जी, गाजीपुर से आये, मिले। विभिन्न विन्दुओं पर विचार विमर्श होता रहा। वे प्रसाद से दक्षिणा 'गीताहृदय' की पुस्तक प्राप्त पांच प्रतियों के पांच सौ नगद रुपये मुझे दे गये। आज ही उसके बाद, स्वामी सहजानंद सरस्वती विद्यापीठ के वर्तमान प्राचार्य श्री मान्धाता राय तथा दिवंगत श्री केदार प्रसाद शर्मा के पुत्र कवीन्द्र नारायण शर्मा साथ-साथ आये, मिले और उन्होंने मुझे गाजीपुर के अपने महाविद्यालय में कार्यक्रम के लिये अनुरोध किया।

x x x

आज पन्द्रहवां दिन व्यतीत हो रहे हैं, और प्रमोद कुमार दीक्षित अनन्त सिंह और सहारा नहीं लौटे, अपनी कार की यात्रा से। आज ही मोटर में ~~[illegible]~~ लघुभाई श्री प्रेमनारायण आ गये।

मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं, सिर में चक्कर आता है। पैर भी स्वस्थ नहीं। देखभाल और व्यवस्था करनेवाला कोई नहीं।

पौष कृष्ण ७, वि० सं० २०५३, बुधवार, 'विरोधीनाम' संवत्सर, शक-सं० १९१८,
श्रीकृष्ण-सं० ५२२२, JAN.1.1997

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ततः शङ्खाश्च भेर्यश्च पणवानकगोमुखाः। सहसैवाभ्यहन्यन्त स शब्दस्तुमुलोऽभवत्।१३।
ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते महति स्यन्दने स्थितौ। माधवः पाण्डवश्चैव दिव्यौ शङ्खौ प्रदध्मतुः।१४।

tataḥ śaṅkhāśca bheryaśca paṇavānakagomukhāḥ sahasaivābhyahanyanta sa śabdastumulo'bhavat
tataḥ śvetairhayairyukte mahati syandane sthitau mādhavaḥ pāṇḍavaścaiva divyau śaṅkhau pradadhmatuḥ
(Ch. 1/13-14)

सूर्यो० ६।४७, सूर्या० ५।१९

आज प्रमोद जी बच्चों के लिये मुबाइ्ली
शकरगंजी तथा अन्य सामानों के लिये २७५ रुपये
दिया। आज किशोर धोबी आया, आज किशोर भी
भी आया। पोस्टकार्ड लिखाके ८ रुपये।

जो प्रेम निरन्तर बना रहता है, उसीकी महिमा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनञ्जयः। पौण्ड्रं दध्मौ महाशङ्खं भीमकर्मा वृकोदरः।१५।
अनन्तविजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः। नकुलः सहदेवश्च सुघोषमणिपुष्पकौ।१६।

pāñcajanyaṁ hṛṣīkeśo devadattaṁ dhanañjayaḥ pauṇḍraṁ dadhmau mahāśaṅkhaṁ bhīmakarmā vṛkodaraḥ
anantavijayaṁ rājā kuntīputro yudhiṣṭhiraḥ nakulaḥ sahadevaśca sughoṣamaṇipuṣpakau
(Ch.1/15-16)

सूर्यो० ६।४७, सूर्या० ५।२० **अमावास्या**

आज न्यास समिति की १५-१-९७ की बैठक के लिये
श्री राजगुरुमठ, वाराणसी में होगी। पांच पत्र लिखवा कर
भेजा - दौड़ लगाया। राज ज्योतिषी, रघु, मणि, किशन जी
श्री हरिकृष्ण ठाकुर, डा० गोविन्द नाथ शास्त्री एवं
पं० सकलदेव राय रमेश त्रिवेदी।

आज सहसा वरिष्ठ पत्रकार के रामजीदेव वर्मा जी
कारवाँ, अग्नि आवरण के सदस्य आ। पहुंचे। बहुत सी
बातें हुईं। वे वयस्क भी कम नहीं - पहिले [illegible]
[illegible] में गये थे [illegible]
है राजकुमार कालिदास के, [illegible]
[illegible] की बातें उन्होंने कहीं।
२० रुपये गुड़, दूध आदि के लिये दिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

काश्यश्च परमेष्वासः शिखण्डी च महारथः। धृष्टद्युम्नो विराटश्च सात्यकिश्चापराजितः।१७।
द्रुपदो द्रौपदेयाश्च सर्वशः पृथिवीपते। सौभद्रश्च महाबाहुः शङ्खान्दध्मुः पृथक् पृथक्।१८।

kāśyaśca parameṣvāsaḥ śikhaṇḍī ca mahārathaḥ dhṛṣṭadyumno virāṭaśca sātyakiścāparājitaḥ
drupado draupadeyāśca sarvaśaḥ pṛthivīpate saubhadraścamahābāhuḥ śaṅkhāndadhmuḥ pṛthakpṛthak
(Ch.1/17-18)

सूर्यो० ६।४७, सूर्या० ५।२१

आज अपराह्न तीन बजे खरौंआ के उदार एवं परोपकारी रईस श्री ध्यानेश्वरी प्रसाद सिंह एवं रत्नेश्वरी प्रसाद सिंह और उनके मुजफ्फरपुर के समधी श्री त्रिवेणी प्रसाद सिंह आ पहुँचे। वे लोग बबई आश्वेश्वर होते गोदा गये थे। वहां सम्भवतः इन लोगों ने उपरौली मार्ग के श्री सम्मान्य संबंधी राजेन्द्र प्रसाद सिंह से आश्रम के निर्माण कार्य की विधिवत चर्चा चलायी। वे आश्वस्त हुए हैं और घर जाने पर मठ में निर्माण देखने आवेंगे और कुछ जरा सहायता करेंगे। मन्ना बाबू एवं उनके भाई ने संकेत किया कि एक लाख से कम नहीं देंगे। उन्हें इतना देना ही है, बलवान है। त्रिवेणी प्रसाद सिंह ने नक्शा और प्राक्कलन (एस्टीमेट) की चर्चा की। मैंने कहा कि सांठ के अभियन्ता धर्मनारायण साही बना रहे हैं। त्रिवेणी प्रसाद जी उन्हें भलीभांति

प्रेमको पाकर प्रेमी सदा आनन्दमें मस्त रहता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत्। नभश्च पृथिवीं चैव तुमुलो व्यनुनादयन्।१९।
अथ व्यवस्थितान्दृष्ट्वा धार्तराष्ट्रान् कपिध्वजः। प्रवृत्ते शस्त्रसम्पाते धनुरुद्यम्य पाण्डवः।२०।

sa ghoṣo dhārtarāṣṭrāṇāṁ hṛdayāni vyadārayat nabhaśca pṛthivīṁ caiva tumulo vyanunādayan
atha vyavasthitāndṛṣṭvā dhārtarāṣṭrān kapidhvajaḥ pravṛtte śastrasampāte dhanurudyamya pāṇḍavaḥ
(Ch. 1/19-20)

सूर्यो० ६।४७, सूर्या० ५।२२

आज [illegible] से धर्मराज का पुत्र पधारे। [illegible] जगन्नाथ का [illegible] दीक्षा देने के प्रेम को आया ठहरा। [illegible] का [illegible] का समाचार [illegible]। [illegible] का एक फोटो [illegible] मंगाया। [illegible] के लिये।
दो लिफाफा मंगाया।

पौष शुक्ल ४, रविवार, 12 JAN.
सूर्यो० ६।४७, सूर्या० ५।२३

आज पप्पू [illegible] कानपुर आये
[illegible] सहगल जी [illegible] भेजा। [illegible]
[illegible] भी [illegible] भेजा तथा
[illegible] में [illegible] आग्रह किया।
पं. [illegible] शर्मा आये। [illegible] के लिये [illegible]
उनसे पूरा विचार [illegible] किया। [illegible]
राय [illegible] को सूचना भेजना है उसके पूर्व।
[illegible] के पं. रामजतन शर्मा आये। बहुत [illegible]
होती रहीं। [illegible] को [illegible]
[illegible]
मंगाया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हृषीकेशं तदा वाक्यमिदमाह महीपते।
अर्जुन उवाच सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत।२१।
यावदेतान्निरीक्षेऽहं योद्धुकामानवस्थितान्। कैर्मया सह योद्धव्यमस्मिन्रणसमुद्यमे।२२।

hṛṣīkeśaṁ tadā vākyamidamāha mahīpate
arjuna uvāca senayorubhayormadhye rathaṁ sthāpaya me'cyuta
yāvadetānnirīkṣe'haṁ yoddhukāmānavasthitān kairmayā saha yoddhavyamasminraṇasamudyame
(Ch.1/21-22)

सूर्यो० ६।४७, सूर्या० ५।२३

आज [illegible] शर्मा ज्योतिषी पंडित आये। उनके पैर में चोट लगी है। मोटरसाइकिल वाले ने धक्का दे दिया था जो भिड़ गया था।

कर्फ्यू रहा मदनपुरा में। पंडित जी के पड़ोसी के घर में बैठक थी, कई मुसलमानों के लड़कों की उत्पात से उपद्रव होने में पड़ी है। शुभ्र रूप शान्ति स्थापित हो गई है। श्रीमा के [illegible] मानो पड़ा पारायण को स्थिर मन - विनायक को समर्पित उसका संबंध ही है। संभवतः आज शाम के बाद कहा होगा जो भावों का नाता है। विनायक में रमणीय लगता है।

हेतु या कामना ही प्रेमका दूषण है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भीष्मद्रोणप्रमुखतः सर्वेषां च महीक्षिताम्। उवाच पार्थ पश्यैतान्समवेतान्कुरूनिति। २५।
तत्रापश्यत्स्थितान्पार्थः पितॄनथ पितामहान्।आचार्यान्मातुलान्भ्रातॄन्पुत्रान्पौत्रान्सखींस्तथा। २६।

bhīṣmadroṇapramukhataḥ sarveṣāṁ ca mahīkṣitām uvāca pārtha paśyaitānsamavetānkurūniti
tatrāpaśyatsthitānpārthaḥ pitṝnatha pitāmahān ācāryānmātulānbhrātṝnputrānpautrānsakhīmstathā
(Ch. 1/25-26)

सूर्यो० ६। ४७, सूर्या० ५। २५

आज [illegible] गाँव के दो लड़के [illegible] पीड़ित से, काशिराज के पास से देखकर चले आये। दरबान को उलाहना देने प्रमोदकी कोठी गई। इस्टेट के [illegible] उन्होंने पहले मानना [illegible] किया। तो वे [illegible] कहा। [illegible] कि मैं उनसे लड़ाई नहीं करूंगा। मुझे हस्तक्षेप करने को कहना पड़ा कि [illegible] तथा [illegible] संरक्षक [illegible] विरोध करना, उलाहना देना लड़ना नहीं है। इसका [illegible] जा सकेगा। [illegible] किया गया। [illegible] श्री [illegible] शर्मा का।

निरन्तर ही भगवान्‌की पूर्ण कृपा मानते रहना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्वशुरान्सुहृदश्चैव सेनयोरुभयोरपि । तान्समीक्ष्य स कौन्तेयः सर्वान्बन्धूनवस्थितान् । २७ ।
कृपया परयाविष्टो विषीदन्निदमब्रवीत् ।
अर्जुन उवाच दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण युयुत्सुं समुपस्थितम् । २८ ।

śvaśurānsuhṛdaścaiva senayorubhayorapi tānsamīkṣya sa kaunteyaḥ sarvānbandhūnavasthitān
kṛpayā parayāviṣṭo viṣīdannidamabravīt
arjuna uvāca dṛṣṭvemaṁ svajanaṁ kṛṣṇa yuyutsuṁ samupasthitam
(Ch. 1/27-28)

सूर्यो० ६ । ४७, सूर्या० ५ । २६

आज प्रातः हेरम्ब ने [illegible] प्रमाण[illegible]
वाली से कल की लड़की के [illegible] चले जाने की
बात कहा तो उसने उत्तर दिया कि शिवाला के [illegible]
से काम चलेगा। [illegible] मालूम था।
पर उत्तर सन्तोषजनक नहीं प्राप्त है। इस सम्बन्ध में
श्री [illegible] राम एवं [illegible] के [illegible]
[illegible] [illegible] अवकाश होगा।
श्री [illegible] प्रसाद सिंह [illegible] आये। उन्होंने [illegible]
के [illegible] [illegible], प्रत्येक [illegible]
दे दिये। फिर आयेंगे तो अपने पैसे लेकर [illegible]
होगा। लिफाफा [illegible] द्वारा भेज दिया।

आज [illegible] [illegible] श्री [illegible]
श्री हरिकृष्ण ठाकुर को [illegible] पत्र [illegible] [illegible] [illegible]
में भेजा।

श्री सत्य नारायण पाण्डेय जी खड़गपुर [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] को, उनके पत्र का
उत्तर दिया।

भक्तिमें ही सुख है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तस्मान्नार्हा वयं हन्तुं धार्तराष्ट्रान्स्वबान्धवान्। स्वजनं हि कथं हत्वा सुखिनः स्याम माधव। ३७।
यद्यप्येते न पश्यन्ति लोभोपहतचेतसः। कुलक्षयकृतं दोषं मित्रद्रोहे च पातकम्। ३८।

tasmānnārhā vayaṁ hantuṁ dhārtarāṣṭrānsvabāndhavān svajanaṁ hi kathaṁ hatvā sukhinaḥ syāma mādhava
yadyapyete na paśyanti lobhopahatacetasaḥ kulakṣayakṛtaṁ doṣaṁ mitradrohe ca pātakam
(Ch. 1/37-38)

सूर्यो० ६।४६, सूर्या० ५।३०

"किं वेदैः स्मृतिभिः पुराण पठनैः शास्त्रैर्महाविस्तरैः
स्वर्गग्राम कुटी निवास फलदैः ....
मुक्त्वैकं भवबन्ध दुःख रचना विध्वंस कालानलं
स्वात्मानन्द प्रवेश कलनं शेषा वणिग्वृत्तयः ॥"

x x x

(१) अमृतत्व का इच्छुक, विषयों का भिक्षुक कैसे ?
(२) राग का दास, काम का किंकर कैसे ?
संसार मार्ग से पार होने की इच्छा करने वाला, उसी के मार्गों में भटकने वाला कैसे ?
आचार्य शंकर ने यह दो टूक बात कही है कि एक ही पुरुष के लिये बाह्य विषयों की उधेड़बुन में लगे रहना और प्रत्यगात्मा का भी साक्षात्कार करना, ये दोनों बातें साथ-साथ कभी सम्भव नहीं हो सकतीं।

(१) "न ह्येकस्य विषयालोचनपरत्वं प्रत्यगात्मेक्षणं चैकस्य सम्भवति ॥
— कठ० उप० पर शांकरभाष्य २।१।१॥
(२) अज्ञानस्याप्तेरस्य चित्ते —
न जायते परमार्थ संवि-
— योगवाशिष्ठ।

"मोक्षस्य कांक्षा यदि वै तवास्ति त्यजाति दूरात् विषयान् विषं यथा ।" → विवेकचूडामणि - आचार्यशंकर.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कथं न ज्ञेयमस्माभिः पापादस्मान्निवर्तितुम्। कुलक्षयकृतं दोषं प्रपश्यद्भिर्जनार्दन। ३९।
कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः। धर्मे नष्टे कुलं कृत्स्नमधर्मोऽभिभवत्युत। ४०।

kathaṁ na jñeyamasmābhiḥ pāpādasmānnivartitum kulakṣayakṛtaṁ doṣaṁ prapaśyadbhirjanārdana
kulakṣaye praṇaśyanti kuladharmāḥ sanātanāḥ dharme naṣṭe kulaṁ kṛtsnamadharmo'bhibhavatyuta
(Ch. 1/39-40)

सूर्यो० ६।४६, सूर्या० ५।३० **पूर्णिमा, माघस्नानारम्भ**

स्नान, यज्ञ, क्रिया, दर्शन, श्रवण आदि सब साधन,
दुष्ट भाव वाले मनुष्य के निष्फल होते हैं।
→ वेदास्त्यागश्च, यज्ञाश्च, नियमाश्च तपांसि च।
न विप्रदुष्टभावस्य सिद्धिं गच्छन्ति कर्हिचित्॥
— मनु० २।९७।
आचारहीन को वेद पवित्र नहीं कर सकते।
'आचारहीनं न पुनन्ति वेदाः',
'आचाराद्विच्युतो विप्रो न वेदफलमश्नुते।
आचारेण तु संयुक्तः सम्पूर्णफलभाग्भवेत्॥ मनु०

भक्तके चाहनेपर ही भगवान् उसे चाहते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः । स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसङ्करः ।४१।
सङ्करो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च । पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्तपिण्डोदकक्रियाः ।४२।

adharmābhibhavātkṛṣṇa pradusyanti kulastriyaḥ strīṣu duṣṭāsu vārṣṇeya jāyate varṇasaṅkaraḥ saṅkaro narakāyaiva kulaghnānāṁ kulasya ca patanti pitaro hyeṣāṁ luptapiṇḍodakakriyāḥ
(Ch.1/41-42)

सूर्यो० ६।४५, सूर्या० ५।३१

मलिन चित्त में उपदेश के बीज का प्ररोह कभी नहीं देखा गया। अध्यात्म विद्या का पुष्प तो तपोनिष्ठ जीवन में ही खिलता है, और उसकी सुगन्ध "स्वर्ग की दुहिता" उषा के समान सदाचरण के ज्योतिर्मय प्रभात में ही अंधकार को हटाती हुई, और ज्ञान रूपी सूर्य के द्वारा अनुगमन की जाती हुई, चमकती है।

तपस्या से ही ब्रह्म खोजा जाता है।
— तपसा चीयते ब्रह्म - कठ०उप०।
तपस्या से ही ब्रह्म को जानो —
"तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व" — तैत्तिरीय० ३।२।३,४,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वेदाविनाशिनं नित्यं य एनमजमव्ययम्। कथं स पुरुषः पार्थ कं घातयति हन्ति कम्। २१।

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि। तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही। २२।

vedāvināśinaṁ nityaṁ ya enamajamavyayam kathaṁ sa puruṣaḥ pārtha kaṁ ghātayati hanti kam
vāsāṁsi jīrṇāni yathā vihāya navāni gṛhṇāti naro'parāṇi tathā śarīrāṇi vihāya jīrṇānyanyāni saṁyāti navāni dehī
(Ch.2/21-22)

सूर्यो० ६।३७, सूर्या० ५।४४

आज वाराणसी से महर्षि [illegible]
जगन्नाथ पीठ के समारोह में भाग लेने के लिये
देहरादून एक्सप्रेस ट्रेन से प्रमोद तथा [illegible]
पत्नी [illegible] सहित प्रस्थान किया।

संतोंकी चराचर सब जीवोंमें समता रहती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः । न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः । २३ ।
अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च । नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः । २४ ।

nainaṁ chindanti śastrāṇi nainaṁ dahati pāvakaḥ na cainaṁ kledayantyāpo na śoṣayati mārutaḥ
acchedyo'yamadāhyo'yamakledyo'śoṣya eva ca nityaḥ sarvagataḥ sthāṇuracalo'yaṁ sanātanaḥ
(Ch.2/23-24)

सूर्यो० ६ । ३६, सूर्या० ५ । ४५

प्रातः ५ बजे होल्डाल उठाते. ५।० चन्द्रशेखर
गेस्ट हाउस से चलकर काशी एक्स. गाजीपुर. मऊ होकर के
औड़िहार से गाड़ी [illegible] रात पर [illegible] के।
इस रात्रि आठ बजे [illegible] [illegible] होकर
कैलाश आश्रम पहुँचे।
वहाँ साधुगण या स्वामी लालदिगम्बर जी
तथा रामजी आश्रमवासी सब मिले।
रहने की व्यवस्था [illegible] में हुई।
रात्रि [illegible] [illegible] से मिलकर, [illegible] [illegible]
[illegible] - [illegible] [illegible] हुए।

महात्मा पुरुषोंके इच्छानुसार चलनेमें ही लाभ है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेनमाश्चर्यवद्वदति तथैव चान्यः। आश्चर्यवच्चैनमन्यः शृणोति श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित्। २९।
देही नित्यमवध्योऽयं देहे सर्वस्य भारत। तस्मात्सर्वाणि भूतानि न त्वं शोचितुमर्हसि। ३०।

āścaryavatpaśyati kaścidenamāścaryavadvadati tathaiva cānyaḥ āścaryavaccainamanyaḥ śṛṇoti śrutvāpyenaṁ veda na caiva kaścit
dehī nityamavadhyo'yaṁ dehe sarvasya bhārata tasmātsarvāṇi bhūtāni na tvaṁ śocitumarhasi
(Ch.2/29-30)

सूर्यो० ६।३५, सूर्या० ५।४७ — **रथसप्तमी, भीष्माष्टमी**

आज यह सिक्रेट्री ब्रह्मविद्यापीठ से दिया हुए-
१५००० रुपये दक्षिणा · अर्ची, २००० रुपये कम्प्यूटर के
अकाउन्ट जोड़े। [illegible] - कम्प्यूटर की
शिव महिम्न स्तोत्र, शांति पाठ आदि [illegible])
ये पैसे कल्याण के काम में लगेंगे - ऐसा
महामण्डलेश्वर स्वामी का आदेश था।

अहंकार व्यक्ति को कठोर बना देता है।

भगवद्भक्त स्वयं तीर्थरूप है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वधर्ममपि चावेक्ष्य न विकम्पितुमर्हसि। धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते।३१।
यदृच्छया चोपपन्नं स्वर्गद्वारमपावृतम्। सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्धमीदृशम्।३२।

svadharmamapi cāvekṣya na vikampitumarhasi dharmyāddhi yuddhācchreyo'nyatksatriyasya na vidyate
yadṛcchayā copapannaṁ svargadvāramapāvṛtam sukhinaḥ kṣatriyāḥ pārtha labhante yuddhamīdṛśam
(Ch.2/31-32)

सूर्यो० ६।३४, सूर्या० ५।४८

आज सायंकाल सब समाज सहित सात बजे संध्या [illegible] में [illegible] को पहुँचे। [illegible] आनन्द था।

माघ शुक्ल ९, रविवार, 16 FEB.

सूर्यो० ६।३३, सूर्या० ५।४९

आज न्यास-समिति के [illegible] तथा अन्य [illegible] [illegible] पदाधिकारियों की बैठक [illegible] श्री [illegible] आदि [illegible] [illegible] १३ अप्रैल को [illegible] १५ अप्रैल तक [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के लिये किये [illegible]।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant 2

अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं सङ्ग्रामं न करिष्यसि। ततः स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि। ३३।
अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम्। सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते। ३४।

atha cettvamimaṁ dharmyaṁ saṅgrāmaṁ na kariṣyasi tataḥ svadharmaṁ kīrtiṁ ca hitvā pāpamavāpsyasi
akīrtiṁ cāpi bhūtāni kathayiṣyanti te'vyayām sambhāvitasya cākīrtirmaraṇādatiricyate
(Ch.2/32-34)

सूर्यो० ६।३२, सूर्या० ५।४९

आज डा० योगीन्द्र नाथ शर्मा · राजनैतिक [illegible]
श्री रामनरेश पाण्डेय ने [illegible]
की [illegible] तथा न्याय समिति की बैठक की सूचना
दिया। श्री राजेन्द्र शर्मा - [illegible] प्रातः मिले -
[illegible] कोई [illegible] में करवाते हैं। उन्हें
श्री[illegible] अवतारों में [illegible]
उन्हें। [illegible] - [illegible] - तथा
शिवमहिम्न स्तोत्र आदि [illegible] दी [illegible]।
स्वामी हरि[illegible]नन्द [illegible] - [illegible]
[illegible] पहुंचेगी।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] - [illegible] को दिये गये।

शास्त्रानुकूल सम्पूर्ण विहित कर्मोंका नाम सदाचार है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भयाद्रणादुपरतं मंस्यन्ते त्वां महारथाः । येषां च त्वं बहुमतो भूत्वा यास्यसि लाघवम् । ३५ ।
अवाच्यवादांश्च बहून्वदिष्यन्ति तवाहिताः । निन्दन्तस्तव सामर्थ्यं ततो दुःखतरं नु किम् । ३६ ।

bhayādraṇāduparataṁ maṁsyante tvāṁ mahārathāḥ yeṣāṁ ca tvaṁ bahumato bhūtvā yāsyasi lāghavam
avācyavādāṁśca bahūnvadiṣyanti tavāhitāḥ nindantastava sāmarthyaṁ tato duḥkhataraṁ nu kim
(Ch.2/35-36)

सूर्यो० ६।३१, सूर्या० ५।५० **जया एकादशीव्रत**

आज चौ० रामनारायण शर्मा श्री [illegible] का लिखा पत्र
मिला जिसमें पं० रामचन्द्र वर्मा के पत्र की सूचना के
आधार पर राजगुरुमठ के विशाल [illegible] संग्रहालय के
निर्माण की चर्चा है तथा पं० [illegible] विद्यार्थी के [illegible]
की चर्चा है जो [illegible] ब्राह्मणों [illegible]
तुले हैं। [illegible] की [illegible] है [illegible]
है जो [illegible] प्रस्ताव [illegible] है।
[illegible] दिया
गया तथा [illegible]
[illegible] गये।

यदि शान्ति चाहते हो तो कामनाका त्याग करो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एषा तेऽभिहिता साङ्ख्ये बुद्धिर्योगे त्विमां शृणु। बुद्ध्या युक्तो यया पार्थ कर्मबन्धं प्रहास्यसि।३९।
नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते। स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्।४०।

eṣā te'bhihitā sāṅkhye buddhiryoge tvimāṁ śṛṇu buddhyā yukto yayā pārtha karmabandhaṁ prahāsyasi
nehābhikramanāśo'sti pratyavāyo na vidyate svalpamapyasya dharmasya trāyate mahato bhayāt
(Ch.2/39-40)

सूर्यो० ६।२९, सूर्या० ५।५१ जयन्ती का निर्मलाकाई पे पाया गया।
फरवरी समग्री सातवाँ रुपये की बजट भेजी गई।

सेवाका अभ्यास डालना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह कुरुनन्दन। बहुशाखा ह्यनन्ताश्च बुद्धयोऽव्यवसायिनाम्। ४१।
यामिमां पुष्पितां वाचं प्रवदन्त्यविपश्चितः। वेदवादरताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः। ४२।

vyavasāyātmikā buddhirekeha kurunandana bahuśākhā hyanantāśca buddhayo'vyavasāyinām
yāmimāṁ puṣpitāṁ vācaṁ pravadantyavipaścitaḥ vedavādaratāḥ pārtha nānyadastīti vādinaḥ
(Ch.2/41-42)

सूर्यो० ६।२८, सूर्या० ५।५२ — **व्रत-पूर्णिमा**

डा० रामअवध शर्मा, श्री विक्रमादित्य, वेणीमाधव शर्मा
एवं श्री विश्वनाथ पाण्डेय तथा श्री शिवकुमार पाण्डेय-नीचा पांडे
के जौनपुर को पत्र भेजे गये। आज डा० रामकिशोर त्रिपाठी
मुजफ्फरपुर को भी पत्र भेजा गया। श्री ज्योतिर्मय राय
लिखा सिवान आये और वापस गये। उन्हें श्रद्धाञ्जलि की
प्रति 50 लेकर दी गई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान् । आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ।५५।
दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः । वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ।५६।

śrībhagavānuvāca

prajahāti yadā kāmānsarvānpārtha manogatān ātmanyevātmanā tuṣṭaḥ sthitaprajñastadocyate
duḥkheṣvanudvignamanāḥ sukheṣu vigataspṛhaḥ vītarāgabhayakrodhaḥ sthitadhīrmunirucyate

(Ch.2/55-56)

सूर्यो० ६।२१, सूर्या० ५।५७ आज पं० रामविलास मिश्र की वृद्धा धर्मपत्नी काशी आयीं - नारायण की धर्मपत्नी के साथ

फाल्गुन कृष्ण ८, रविवार, 2 MARCH
सूर्यो० ६।२०, सूर्या० ५।५८

श्रीजानकी-जयन्ती

आज हेरम्ब द्वारा पं० कैलासपति मिश्र को पत्रादि निमंत्रण तथा ॐ स्वामी करपात्रीजी की जयन्ती समारोह का निमंत्रण दिया पटना केपिटल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते। प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते।६५। नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना। न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम्।६६।

prasāde sarvaduḥkhānāṁ hānirasyopajāyate prasannacetaso hyāśu buddhiḥ paryavatiṣṭhate nāsti buddhirayuktasya na cāyuktasya bhāvanā na cābhāvayataḥ śāntiraśāntasya kutaḥ sukham

(Ch.2/65-66)

सूर्यो० ६।१६, सूर्या० ६।०० — **महाशिवरात्रिव्रत**

डॉ० चन्द्रशेखर मिश्र. कार्यकारी [illegible]
श्री [illegible] में पूज्यपाद स्वामी जी की जयन्ती का समारोह
[illegible] [illegible] मुख्य अतिथि [illegible] महाविद्यालय
[illegible] [illegible] [illegible] शिव [illegible]
आदि उपस्थित थे। स्वामी हरिदेवानन्द सरस्वती [illegible]
के [illegible] [illegible] के साथ [illegible]
बड़े चतुर खिलाड़ी [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] आनन्द [illegible] [illegible]। [illegible] शर्मा।
[illegible] के पुत्र [illegible] से [illegible] पांडे
श्री [illegible] पांडे [illegible] राम [illegible] पांडे के पुत्र [illegible]
शर्मा [illegible] [illegible] शर्मा आदि आये थे।
[illegible] शर्मा की व्यवस्था उत्तम थी। [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] का [illegible] भी [illegible]
[illegible] शर्मा के [illegible] में [illegible] [illegible] किया।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
दिये। [illegible] [illegible] [illegible] आदि [illegible]
[illegible] भी [illegible]
[illegible] शर्मा [illegible] [illegible]
प्रो० [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible]
आदि [illegible]। [illegible] के [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
दिये। [illegible] [illegible]

सन्तोषसे सर्वोत्तम सुखकी प्राप्ति होती है।

[illegible] [illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनुविधीयते। तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि।६७।
तस्माद्यस्य महाबाहो निगृहीतानि सर्वशः। इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।६८।

indriyāṇāṁ hi caratāṁ yanmano'nuvidhīyate tadasya harati prajñāṁ vāyurnāvamivāmbhasi
tasmādyasya mahābāho nigṛhītāni sarvaśaḥ indriyāṇīndriyārthebhyastasya prajñā pratiṣṭhitā
(Ch.2/67-68)

सूर्यो० ६।१४, सूर्या० ६।१ — [illegible] नहीं मजबूरी [illegible] रुपये
मौलिक [illegible] शास्त्री को दिये, [illegible]
के पहले दिया था तथा सात [illegible]।
फोटो खींचने वाले को २०० रुपये [illegible]।
[illegible] शर्मा [illegible] मेरे [illegible]
[illegible]
को [illegible] हुई। [illegible]
[illegible]
[illegible] नहीं रहेंगे।

फाल्गुन कृष्ण ३०, रविवार, 9 MARCH
सूर्यो० ६।१३, सूर्या० ६।१

अमावास्या, सूर्यग्रहण

आज गाजीपुर श्री स्वामी सहजानन्द सरस्वती-विद्यापीठ
के समारोह में सम्मानार्थ आमंत्रित पहुँचे किन्तु देर से।
समारोह के आरम्भ। प्रधानमंत्री [illegible] किये तथा
पूर्व प्रधानमंत्री [illegible] [illegible]
[illegible] गौरव [illegible]। [illegible]
[illegible] [illegible]
दुर्घटना से मृत्यु की आकस्मिकता [illegible]। [illegible]
[illegible] शास्त्री [illegible]
[illegible] पहुँचे।

मौज [illegible]।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी। यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः।६९।
आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत्। तद्वत्कामा यं प्रविशन्ति सर्वे स शान्तिमाप्नोति न कामकामी।७०।

yā niśā sarvabhūtānāṁ tasyāṁ jāgarti saṁyamī yasyāṁ jāgrati bhūtāni sā niśā paśyato muneḥ
āpūryamāṇamacalapratiṣṭhaṁ samudramāpaḥ praviśanti yadvatt advatk āmā yaṁ praviśanti sarve sa śāntimāpnoti na kāmakāmī
(Ch.2/69-70)

सूर्यो० ६।१२, सूर्या० ६।२

श्री विज्ञानचैतन्य ब्रह्मचारी जी इच्छा हुई कि [illegible] यहां [illegible] आगे कुछ दिन तथा सामान ले आवें तो अच्छा था। मैंने व्यवस्था करवी कि कल भोर में [illegible] जी साथ [illegible] श्री [illegible] शर्मा [illegible] रिक्शे के यहां पहुंचाकर लौट आयेंगे।

कल से चूना लगाने की व्यवस्था की गई। सत्संगभवन में [illegible] चूना पोता जायेगा। बाद में [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] वहीं [illegible] का प्रबन्ध हुआ।

[illegible]

कोई भी काम छोटा-बड़ा नहीं होता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः। निर्ममो निरहङ्कारः स शान्तिमधिगच्छति।७१।
एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति। स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति।७२।

vihāya kāmānyaḥ sarvānpumāṁścarati niḥspṛhaḥ nirmamo nirahaṅkāraḥ sa śāntimadhigacchati
eṣā brāhmī sthitiḥ pārtha naināṁ prāpya vimuhyati sthitvāsyāmantakāle'pi brahmanirvāṇamṛcchati

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे साङ्ख्ययोगो नाम द्वितीयोऽध्यायः।२।
(Ch.2/71-72)

सूर्यो० ६।११, सूर्या० ६।३

आज नारायण जी · [illegible] को लेकर प्रातः [illegible] बजे [illegible] होते हुए [illegible] गये। उन्हें एक सौ [illegible] के लिए दिया। तथा [illegible] को [illegible]।

आज [illegible] वर्णी - [illegible] को [illegible] फहराया - कल जायेंगे।

[illegible]

बच्चोंको बुरी लतमें पड़नेसे बचाना मनुष्य-जातिकी बड़ी सेवा है।

RajGuru Math: Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथ तृतीयोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

ज्यायसी चेत्कर्मणस्ते मता बुद्धिर्जनार्दन। तत्किं कर्मणि घोरे मां नियोजयसि केशव।१।
व्यामिश्रेणेव वाक्येन बुद्धिं मोहयसीव मे। तदेकं वद निश्चित्य येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम्।२।

arjuna uvāca

jyāyasī cetkarmaṇaste matā buddhirjanārdana tatkiṁ karmaṇi ghore māṁ niyojayasi keśava
vyāmiśreṇeva vākyena buddhiṁ mohayasīva me tadekaṁ vada niścitya yena śreyo'hamāpnuyām

(Ch.3/1-2)

सूर्यो० ६।१०, सूर्या० ६।३

आज प्रातः नारायण जोशी - सामने श्री ब्रह्मानन्द [illegible] गये। मैंने उनसे कहा कि आप यहां बुढ़ापे में पड़े [illegible] नहीं। उन्होंने कहा कि नहीं ठीक है।

आज गुप्ता [illegible] [illegible] प्रमोद [illegible]
[illegible] - [illegible]
[illegible] में [illegible] - महादेव [illegible]
[illegible] [illegible]
[illegible] गये।

[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] पहुंचे। उन्होंने [illegible] की [illegible]
[illegible] मेरे संबंध में [illegible]
मैंने उसे [illegible] की [illegible]।

[illegible] विभिन्न [illegible] पर आध्यात्मिक - सामाजिक
[illegible], [illegible] रही। वे [illegible] में
[illegible] के काम में आये थे।

सायंकाल [illegible] [illegible] [illegible] में लौटे।
[illegible] [illegible]
[illegible] - श्री [illegible] पहुंचे।
वे [illegible]
[illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

लोकेऽस्मिन्द्विविधा निष्ठा पुरा प्रोक्ता मयानघ । ज्ञानयोगेन साङ्ख्यानां कर्मयोगेन योगिनाम्।३।
न कर्मणामनारम्भान्नैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते । न च सन्न्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति।४।

śrībhagavānuvāca

loke'smindvividhā niṣṭhā purā proktā mayānagha jñānayogena sāṅkhyānāṁ karmayogena yogināṁ
na karmaṇāmanārambhānnaiṣkarmyaṁ puruṣo'śnute na ca sannyasanādeva siddhiṁ samadhigacchati
(Ch.3/3-4)

सूर्यो० ६।९, सूर्या० ६।४

आज मालिक अपनी धामसे मठमें लौटे।
सभी लोगोंने शाम [illegible] समय [illegible] बजाए
आश्रम की मड़ई नहीं [illegible]
[illegible] नहीं [illegible] है।
[illegible]
को सौंप आये।

[illegible]

लज्जा ही स्त्रियोंका भूषण है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्। कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः।५।
कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्। इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते।६।

na hi kaścitkṣaṇamapi jātu tiṣṭhatyakarmakṛt kāryate hyavaśaḥ karma sarvaḥ prakṛtijairguṇaiḥ
karmendriyāṇi saṁyamya ya āste manasā smaran indriyārthānvimūḍhātmā mithyācāraḥ sa ucyate
(Ch.3/5-6)

सूर्यो० ६।८, सूर्या० ६।४

आज नारायण को उनके पारिश्रमिक के ५०० रुपये दे दिया। साथ ही ५०० रुपये दिये कि आवश्यकता हो, थोड़ा, लावेंगे और बीज बेचें - प्रमोद को लगभग एक [illegible] थोड़ा [illegible] विभिन्न कार्य के लिये दे दूंगा।

आज श्रीविश्वनाथ [illegible] कन्या के काम का आयोजन आनंदमयी में हुआ है, पंकज संध्या सेठी मठ में आये हैं।

आज केदारनाथ द्वारा खड्गधारी बाबा को औषधि [illegible] पहुंचाने के लिये [illegible] पत्र लिखा।

आज पूर्व [illegible] सिंह-भामा [illegible] मठ में आये [illegible] की जाति के संबंध में [illegible] १८०० [illegible] राम के [illegible] की चर्चा हुई। उन्होंने उनका [illegible] पता लिया कि उनसे [illegible] मिलूंगा। [illegible] साहित्य [illegible] है। मैंने उन्हें [illegible] भेंट की।

[illegible] भेंट में दी गई। [illegible] करेंगे। [illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यस्त्वात्मरतिरेव स्यादात्मतृप्तश्च मानवः। आत्मन्येव च सन्तुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते।१७।
नैव तस्य कृतेनार्थो नाकृतेनेह कश्चन। न चास्य सर्वभूतेषु कश्चिदर्थव्यपाश्रयः।१८।

yastvātmaratireva syādātmatṛptaśca mānavaḥ ātmanyeva ca santuṣṭastasya kāryaṁ na vidyate
naiva tasya kṛtenārtho nākṛteneha kaścana na cāsya sarvabhūteṣu kaścidarthavyapāśrayaḥ
(Ch.3/17-18)

सूर्यो० ६।००, सूर्या० ६।१८ — प्रदोषव्रत

आज श्री धरसनौ मिश्री परका गुरु जयन्तीका
गंगासागर - अतिथि देवाय [illegible] काली मां [illegible]
हैं। ब्रह्मत्व का [illegible] में [illegible] नहीं। [illegible]
[illegible] में हैं। यह उन्हीं का [illegible] [illegible]
में करने के [illegible] तथा [illegible]
मिलान में शामिल हुए। वे संगीत आदि के [illegible] भी [illegible]
पढ़ रहे हैं। आज पं० श्यामसाही जी को पत्र [illegible] उनके [illegible]
पर भेज दिया। आज पं० रामनरेश पांडे - दीनानाथ पाण्डेय जी
सिमटी कोलकाता मुकुन्द ब्रह्मचारी रामलखनसिंह जी को
गायत्री आश्रम - सिकन्दरा नालन्दा के पते पर पत्र भेजा।

शूरतामें प्राणत्याग करना लाभजनक और धर्म है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर। असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरुषः।१९।
कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः। लोकसङ्ग्रहमेवापि सम्पश्यन्कर्तुमर्हसि।२०।

tasmādasaktaḥ satataṁ kāryaṁ karma samācara asakto hyācarankarma paramāpnoti pūruṣaḥ
karmaṇaiva hi saṁsiddhimāsthitā janakādayaḥ lokasaṅgrahamevāpi sampaśyankartumarhasi
(Ch.3/19-20)

सूर्यो० ५।५९, सूर्या० ६।८ आज दीनानाथ पाण्डेय, महर्षि देवराज
शर्मा के साथ सूर्यदेव शास्त्री [illegible] [illegible] निमंत्रण
के कारण [illegible] सत्संग करना [illegible]
सरोज सबको [illegible] दीनानाथ पाण्डेय [illegible]
[illegible] [illegible] शब्दों में [illegible]
[illegible] लोगों [illegible] [illegible]
तथा [illegible] संभव हो सके।
[illegible] तौल [illegible] लोगों [illegible]
परिचित [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] होगी। यहां
के [illegible] लोगों से [illegible] के सम्बन्ध
में [illegible] है। [illegible] होगा।

फाल्गुन शुक्ल १४, रविवार, 23 MARCH
सूर्यो० ५।५८, सूर्या० ६।९

व्रत-पूर्णिमा
होलिकादाह (रात्रि ८।२६ के बाद)

आज प्रमोद सपरिवार
[illegible] १२ बजे। [illegible]
[illegible] के लिये [illegible]
[illegible] भोजन [illegible] हो गया।
[illegible] आज [illegible] हुई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः। स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।२१।
न मे पार्थास्ति कर्तव्यं त्रिषु लोकेषु किञ्चन। नानवाप्तमवाप्तव्यं वर्त एव च कर्मणि।२२।

yadyadācarati śreṣṭhastattadevetaro janaḥ sa yatpramāṇaṁ kurute lokastadanuvartate
na me pārthāsti kartavyaṁ triṣu lokeṣu kiñcana nānavāptamavāptavyaṁ varta eva ca karmaṇi
(Ch.3/21-22)

सूर्यो० ५।५८, सूर्या० ६।१ — **पूर्णिमा**

काशी नगर एवं निकटवर्ती क्षेत्र में आज ही होली मनाई गई। श्री लक्ष्मीकान्त शर्मा के घर से पुआ-पूड़ी मिठाई तथा सब्जी [illegible] आया। श्री कमला कान्त शर्मा के पुत्र - रामजी शर्मा के घर से भी पूड़ी एवं कई सब्जी भोजन आया। सायंकाल- रामजी स्वयं आये और उनकी पत्नी भी थी। लड़की का विवाह पारस पांडे के संबंधी किसी [illegible] के यहाँ होगा। [illegible] गोवाली [illegible] के साथ में तय हुआ है। लक्ष्मीकान्त शर्मा [illegible] के मोड़ में [illegible]। कल भोजन उनके यहाँ से आयेगा। स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती जी के [illegible] करने के संबंध में संवाद [illegible] किया।

आज शाम को [illegible] बजकर [illegible] मिनट पर डा० रामलखन [illegible] शर्मा [illegible] पटना से आ पहुँचे। उनके आवास [illegible] की उचित व्यवस्था किया और [illegible] बजे शाम में [illegible]।

विद्या और त्याग जिस समाजमें होगा वह समाज कभी नहीं गिर सकता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यदि ह्यहं न वर्तेयं जातु कर्मण्यतन्द्रितः। मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः।२३।
उत्सीदेयुरिमे लोका न कुर्यां कर्म चेदहम्। सङ्करस्य च कर्ता स्यामुपहन्यामिमाः प्रजाः।२४।

yadi hyahaṁ na varteyaṁ jātu karmaṇyatandritaḥ mama vartmānuvartante manuṣyāḥ pārtha sarvaśaḥ
utsīdeyurime lokā na kuryāṁ karma cedaham saṅkarasya ca kartā syāmupahanyāmimāḥ prajāḥ
(Ch.3/23-24)

सूर्यो० ५।५६, सूर्या० ६।१० — **वसन्तोत्सव, होली**

आज डा० राज [illegible] शर्मा अपराह्न आये थे।
कि शाहजहाँपुर से प्रेमनारायण की औद्योगिक [illegible]
के [illegible] की पहल करेंगे। मैंने उन्हें अपनी ओर
से स्वामी विवेकानन्द जी की समाज [illegible]
"[illegible]" की प्रति भेंट की [illegible]
भी किया है।
भगवान की [illegible]।
आज स्व० श्री [illegible] [illegible]
[illegible] के बाद [illegible]।
१० [illegible]।

अपमान कायरतामें है वीरतामें नहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सक्ताः कर्मण्यविद्वांसो यथा कुर्वन्ति भारत । कुर्याद्विद्वांस्तथासक्तश्चिकीर्षुर्लोकसङ्ग्रहम् । २५ ।
न बुद्धिभेदं जनयेदज्ञानां कर्मसङ्गिनाम् । जोषयेत्सर्वकर्माणि विद्वान्युक्तः समाचरन् । २६ ।

saktāḥ karmaṇyavidvāṁso yathā kurvanti bhārata   kuryādvidvāṁstathāsaktaścikīrṣurlokasaṅgraham
na buddhibhedaṁ janayedajñānāṁ karmasaṅginām   joṣayetsarvakarmāṇi   vidvānyuktaḥ   samācaran
(Ch.3/25-26)

सूर्यो० ५।५५, सूर्या० ६।११

आज भी लालबिहारी राय कानी के ही यहां से भोजन आया। आज अपराह्न हेरोज शर्मा श्री चंद्रभान [illegible] की धर्मपत्नी सहित आये। पता चला कि प्रमोदकुमार कल आनेवाले हैं।
रात में ही वृषनारायण राय और [illegible] ने अपनी पत्नी सहित इलाहाबाद लौट गये।
५० रुपये हेरोज के सब्जी के लिये दिया ५० रुपये [illegible] के लिये दिया।

उद्देश्य सबसे ऊँचा रखना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः। अहङ्कारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते।२७।
तत्त्ववित्तु महाबाहो गुणकर्मविभागयोः। गुणा गुणेषु वर्तन्त इति मत्वा न सज्जते।२८।

prakṛteḥ kriyamāṇāni guṇaiḥ karmāṇi sarvaśaḥ ahaṅkāravimūḍhātmā kartāhamiti manyate tattvavittu mahābāho guṇakarmavibhāgayoḥ guṇā guṇeṣu vartanta iti matvā na sajjate **(Ch.3/27-28)**

सूर्यो० ५।५४, सूर्या० ६।११ **श्रीगणेशचतुर्थीव्रत**

आज नयपर्वतों श्री शिवमुनि राय जी 'शिवानंद'
राजगुरु गंगोत्री महुवाडीह के आगे व स्थान में पधारे।
[illegible] आगे बढ़ाने तथा सफल बनाने के विषय में
बहुविध बातें हुई।-

स्वार्थ पापकी जड़ है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

ये मे मतमिदं नित्यमनुतिष्ठन्ति मानवाः । श्रद्धावन्तोऽनसूयन्तो मुच्यन्ते तेऽपि कर्मभिः । ३१ ।
ये त्वेतदभ्यसूयन्तो नानुतिष्ठन्ति मे मतम् । सर्वज्ञानविमूढांस्तान्विद्धि नष्टानचेतसः । ३२ ।

ye me matamidaṁ nityamanutiṣṭhanti mānavāḥ śraddhāvanto'nasūyanto mucyante te'pi karmabhiḥ
ye tvetadabhyasūyanto nānutiṣṭhanti me matam sarvajñānavimūḍhāṁstānviddhi naṣṭānacetasaḥ
(Ch.3/31-32)

सूर्यो० ५।५१, सूर्या० ६।१२ आज रांची सुबोध ग्रंथमाला कार्यालय के अध्यक्ष श्री कृष्णबिहारी शर्मा के [illegible] काशी के मुद्रक तथा प्रकाशक श्री [illegible] के [illegible] को पत्र लिखा गया। [illegible] है। [illegible] को [illegible] किये गये। [illegible] के [illegible] में।

आज ही [illegible] शर्मा एवं [illegible] शर्मा आदि को [illegible] के संदर्भ में [illegible] पत्र लिखा।
आज ही [illegible] के [illegible] को पत्र लिखा। [illegible] के [illegible] की [illegible] के [illegible]।

चैत्र कृष्ण ६, रविवार, 30 MARCH

सूर्यो० ५।५०, सूर्या० ६।१२

आज अनिल कुमार गुप्ता बक्सर से मेरी प्रार्थना पर [illegible] का पैसा लेकर आये। वहाँ का समाचार कहा। [illegible] है पर अभी ठीक नहीं हुई है। वे टेलीफोन के [illegible] करा कर वापस गये। बक्सर आश्रम में [illegible] का दान का रसीद है। १२० रुपये उन्हें भेंट के लिये दिया। दस रुपये और दिया। [illegible] के लिये वापस किया।
[illegible] की [illegible] के पत्र - [illegible] पास जमा कर दिया। [illegible] तथा [illegible] के [illegible] की बातें हुईं। वे [illegible] नहीं आयेंगे। [illegible]
[illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेर्ज्ञानवानपि । प्रकृतिं यान्ति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति । ३३ ।
इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे रागद्वेषौ व्यवस्थितौ । तयोर्न वशमागच्छेत्तौ ह्यस्य परिपन्थिनौ । ३४ ।

sadṛśaṁ ceṣṭate svasyāḥ prakṛterjñānavānapi prakṛtiṁ yānti bhūtāni nigrahaḥ kiṁ kariṣyati
indriyasyendriyasyārthe rāgadveṣau vyavasthitau tayorna vaśamāgacchettau hyasya paripanthinau
(Ch.3/33-34)

सूर्यो० ५।४९, सूर्या० ६।१३ आज कांग्रेस ने देवगौड़ा सरकार से समर्थन वापस लिया। दीक्षित का किशोरकुमार पाण्डेय - बाकोपी [illegible] आज नीमा लाल के यहाँ से आया है। विश्वविद्यालय में - [illegible] २० नहीं लेकर था। प्रमोदकुमार श्री [illegible] सिंह के पास History of the Mutinyals. P. N. [illegible] (Bali) लेकर पढ़ने को पहुँचा गया था। सम्भवतः वे [illegible] आनकी भी चर्चा कर रहे थे। आज डा० चन्द्रेश्वर मिश्र, केन्द्रीय कार्यालय अधीक्षक को जो सम्प्रति भागलपुर में कार्यरत है पत्र भेजा कि 13 अप्रैल को काशी पधारकर संक्रान्ति स्नान कर मठ में आयोजित गोष्ठी में भाग लें। श्री [illegible] को पत्र लिखा कि 13 ता० के भावी [illegible] के नवेश सहित 13 अप्रैल की गोष्ठी में पधारें। [illegible] प्रेमनारायण अग्रवाल पहुँचा देंगे।
पं० [illegible] प्रमोदपती को [illegible] कलकत्ता [illegible] आये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्। स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।३५।
अर्जुन उवाच
अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरति पूरुषः।अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः।३६।

śreyānsvadharmo viguṇaḥ paradharmātsvanuṣṭhitāt svadharmenidhanaṁśreyaḥparadharmobhayāvahaḥ
arjuna uvāca
atha kena prayukto'yaṁ pāpaṁ carati pūruṣaḥ anicchannapi vārṣṇeya balādiva niyojitaḥ
(Ch.3/35-36)

सूर्यो० ५।४८, सूर्या० ६।१३ **श्रीशीतलाष्टमीव्रत**

आज नारायण जी ने श्री [illegible] साहिं को [illegible] पकड़े आये। के आगे दया सागर [illegible] मिलेंगे एवं [illegible] जी गावों में [illegible] आज नारायण द्वारा [illegible] किलो बादाम ८० [illegible] रुपये [illegible] गंगाजल के लिये मंगाया।

सत्यकी चेष्टा कभी व्यर्थ नहीं जाती।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः। महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम्।३७।
धूमेनाव्रियते वह्निर्यथादर्शो मलेन च। यथोल्बेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम्।३८।

śrībhagavānuvāca

kāma eṣa krodha eṣa rajoguṇasamudbhavaḥ mahāśano mahāpāpmā viddhyenamiha vairiṇam
dhūmenāvriyate vahniryathādarśo malena ca yatholbenāvṛto garbhastathā tenedamāvṛtam

(Ch.3/37-38)

सूर्यो० ५।४७, सूर्या० ६।१४ आज बड़ी कठिनाई झेलते हुए वाराणसी से
सहारनपुर [illegible] के [illegible]
से [illegible] को जाना पड़ा। [illegible] रात [illegible] गये।
दिन [illegible] कष्ट हुआ। [illegible] तीन बजे
[illegible] पहुँचा - [illegible] विश्राम किया।

भजन हुए बिना कुछ भी उपाय नहीं है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आवृतं ज्ञानमेतेन ज्ञानिनो नित्यवैरिणा। कामरूपेण कौन्तेय दुष्पूरेणानलेन च।३९।
इन्द्रियाणि मनो बुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते। एतैर्विमोहयत्येष ज्ञानमावृत्य देहिनम्।४०।

āvṛtaṁ jñānametena jñānino nityavairiṇā kāmarūpeṇa kaunteya duṣpūreṇānalena ca
indriyāṇi mano buddhirasyādhiṣṭhānamucyate etairvimohayatyeṣa jñānamāvṛtya dehinam
(Ch.3/39-40)

सूर्यो० ५।४६, सूर्या० ६।१४ — **पापमोचनी एकादशीव्रत (स्मार्त)**

प्रातः राज[illegible] के [illegible] श्री [illegible]
के निवास पर पहुँचा। [illegible] श्रद्धालु शिष्य
श्री [illegible] ने बहुत स्वागत किया। [illegible]
[illegible] बताया [illegible] उनके
दो [illegible] थे।

विश्वासी और मेहनती होना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्य भरतर्षभ। पाप्मानं प्रजहि ह्येनं ज्ञानविज्ञाननाशनम्।४१।
इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः। मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः।४२।

tasmāttvamindriyāṇyādau niyamya bharatarṣabha pāpmānaṁ prajahi hyenaṁ jñānavijñānanāśanam
indriyāṇi parāṇyāhurindriyebhyaḥ paraṁ manaḥ manasastu parā buddhiryo buddheḥ paratastu saḥ
(Ch.3/41-42)

सूर्यो० ५।४५, सूर्या० ६।१५ — **पापमोचनी एकादशीव्रत (वैष्णव)**

आज दिनभर शिवगुणगान [illegible] करते रहे।
अधिकारी लोग - [illegible] [illegible] [illegible] डाक्टर [illegible] गोविंद
के हैं। उनके [illegible] [illegible]। दोपहर उच्च कोटि के लोग और
सांसद [illegible] [illegible] सामाजिक [illegible] के [illegible] ऐतिहासिक
चर्चा होती रही। अच्छा प्रभाव रहा। कुल रूप से १०१ [illegible] दिये।
[illegible] श्री शिवगुणगान [illegible] की [illegible] किये।
५०० रुपये; गोपालराय [illegible] [illegible] किये।
और लोग भी सहायता देंगे। [illegible] एक [illegible]
[illegible] [illegible] उन्होंने [illegible] किये [illegible] [illegible]।
१२ बजे [illegible] शिवगुणगान [illegible] [illegible] [illegible]।
[illegible] और [illegible] विश्राम किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना। जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम्।४३।

evaṁ buddheḥ paraṁ buddhvā saṁstabhyātmānamātmanā jahi śatruṁ mahābāho kāmarūpaṁ durāsadam
(Ch.3/43)

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मयोगो नाम तृतीयोऽध्याय:।३।

सूर्यो० ५।४४, सूर्या० ६।१५ — शनिप्रदोष

[illegible]

चैत्र कृष्ण १४, रविवार, 6 APRIL

सूर्यो० ५।४३, सूर्या० ६।१६

[illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथ चतुर्थोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम्। विवस्वान्मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत्।१।
एवं परम्पराप्राप्तमिमं राजर्षयो विदुः। स कालेनेह महता योगो नष्टः परन्तप।२।

śrībhagavānuvāca

imaṁ vivasvate yogaṁ proktavānahamavyayam vivasvānmanave prāha manurikṣvākave'bravīt
evaṁ paramparāprāptamimaṁ rājarṣayo viduḥ sa kāleneha mahatā yogo naṣṭaḥ parantapa

(Ch.4/1-2)

सूर्यो० ५।४२, सूर्या० ६।१६ — **सोमवती अमावास्या**

आज सिगरा के खैरापट्टी के राजेश्वर पाण्डेय - डॉ० गया
हम पहुँचे। उन्होंने [illegible] के लिये उसके पूर्व [illegible]
[illegible] दे चुके हैं। सिकरी का समाचार कहा। इसी पट्टी के
[illegible] में एक ब्राह्मण के लड़के को गोली
मारकर हत्या कर दी। १३ जनवरी है, साल [illegible] के [illegible] है।
यही इस समाज की गतिविधि है। भगवान ही खैर करें।

"मनः शौचं कर्म शौचं कुल शौचं च भारत।
शरीर शौचं वाक्शौचं शौचं पञ्चविधं स्मृतम्॥"
— महाभारत:

महाभारत के अनुसार मन की शुद्धि, आचरण की शुद्धि, कुल की शुद्धि, शरीर की शुद्धि और वाणी की शुद्धि — ये पाँच प्रकार की शुद्धियाँ कही गयी हैं और इन पाँचों प्रकार की शुद्धियों में मन की शुद्धि को सर्वश्रेष्ठ शुद्धि कहा गया है —
"पञ्चस्वेतेषु मनः शौचं विशिष्यते।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्। मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः।११।
काङ्क्षन्तः कर्मणां सिद्धिं यजन्त इह देवताः। क्षिप्रं हि मानुषे लोके सिद्धिर्भवति कर्मजा।१२।

ye yathā māṁ prapadyante tāṁstathaiva bhajāmyaham mama vartmānuvartante manuṣyāḥ pārtha sarvaśaḥ
kāṅkṣantaḥ karmaṇāṁ siddhiṁ yajanta iha devatāḥ kṣipraṁ hi mānuṣe loke siddhirbhavati karmajā
(Ch.4/11-12)

सूर्यो० ५।३७, सूर्या० ६।१९

चैत्र शुक्ल ६, रविवार, 13 APRIL

सूर्यो० ५।३५, सूर्या० ६।१९

वैशाखी, मेष-संक्रान्ति (रात्रि १०.५१ पर)

आज ५ बजे अपराह्न [illegible] के [illegible]
गद्य और [illegible] की विचार गोष्ठी संपन्न हुई। मेरे अतिरिक्त,
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] रविवार को [illegible] यह
सम्पन्न हुआ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

अ० ४]	चैत्र शुक्ल ७, सं० २०५४, सोमवार, APRIL 14. 1997	[दिन १०४

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः। तस्य कर्तारमपि मां विद्ध्यकर्तारमव्ययम्। १३।
न मां कर्माणि लिम्पन्ति न मे कर्मफले स्पृहा। इति मां योऽभिजानाति कर्मभिर्न स बध्यते। १४।

cāturvarṇyaṁ mayā sṛṣṭaṁ guṇakarmavibhāgaśaḥ tasya kartāramapi māṁ viddhyakartāramavyayam
na māṁ karmāṇi limpanti na me karmaphale spṛhā iti māṁ yo'bhijānāti karmabhirna sa badhyate
(Ch.4/13-14)

सूर्यो० ५।३४, सूर्या० ६।२० —— **मेष-संक्रान्तिजन्य पुण्यकाल** ——

आज अमरेश [illegible] जी। वापस गये।
शाम तक बैठकर [illegible] कृष्ण-[illegible] - [illegible] बैठे रहे बातें
कीं। डा० चन्द्रशेखर मिश्र को - आँख दिखाया [illegible]।
शाम को ८ बजे के बाद डा० चन्द्रशेखर मिश्र, [illegible]
[illegible] में आ पहुंचे। [illegible] बड़ी प्रसन्नता हुई।

शोकसे मनुष्य मोहग्रस्त होकर कर्त्तव्यशून्य हो जाता है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं बोद्धव्यं च विकर्मणः। अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना कर्मणो गतिः।१७।
कर्मण्यकर्म यः पश्येदकर्मणि च कर्म यः। स बुद्धिमान्मनुष्येषु स युक्तः कृत्स्नकर्मकृत्।१८।

karmaṇo hyapi boddhavyaṁ boddhavyaṁ ca vikarmaṇaḥ akarmaṇaśca boddhavyaṁ gahanā karmaṇo gatiḥ
karmaṇyakarma yaḥ paśyedakarmaṇi ca karma yaḥ sa buddhimānmanuṣyeṣu sa yuktaḥ kṛtsnakarmakṛt
(Ch.4/17-18)

सूर्यो० ५।३२, सूर्या० ६।२१ — **श्रीरामनवमीव्रत**

आज गुप्तेश्वर पंडित आये और नातीलालपेंड [illegible]
गये। पैसा गाते रहे। [illegible] कानपुर तथा [illegible]
पंथों का। अनिल कुमार-शैहपुर से आये। [illegible]
सन्तू-४/० गोविन्दनाथ का भेजा दे गये।
पूज्य [illegible] वड्डमूल्य प्रबन्ध "बौद्ध दर्शन तथा अन्य भारतीय
दर्शन" की [illegible] [illegible] [illegible]।
[illegible] पत्रिका के [illegible] आये।
[illegible] दो [illegible] है। [illegible]
क्या होगा है। आज [illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] सफाई की [illegible]
[illegible] किये गये।
आज [illegible] के [illegible] आये।
[illegible] [illegible] के पास
रहे हैं। उन्होंने श्रीश्रीराम [illegible]
[illegible] [illegible]
प्रतिमा का सन्देश सुनाया। [illegible]
[illegible] के [illegible] २ कोष्ठक, उन्हें [illegible]
[illegible] है तथा ० [illegible] [illegible] है।
१० बजे [illegible] को [illegible] आज। [illegible]।
[illegible] की समिति की बैठक है।

कुसङ्गतिसे मनुष्यका सब ओरसे पतन हो जाता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दैवमेवापरे यज्ञं योगिनः पर्युपासते। ब्रह्माग्नावपरे यज्ञं यज्ञेनैवोपजुह्वति। २५।
श्रोत्रादीनीन्द्रियाण्यन्ये संयमाग्निषु जुह्वति। शब्दादीन्विषयानन्य इन्द्रियाग्निषु जुह्वति। २६।

daivamevāpare yajñaṁ yoginaḥ paryupāsate brahmāgnāvapare yajñaṁ yajñenaivopajuhvati
śrotrādīnīndriyāṇyanye saṁyamāgniṣu juhvati śabdādīnviṣayānanya indriyāgniṣu juhvati
(Ch.4/25-26)

सूर्यो० ५।२८, सूर्या० ६।२४

आज श्रीमती रामाश्रय पं. पाण्डेयके पुत्र विनोदकुमार
पाण्डेय का विवाह [illegible] पाण्डेय- श्रीमती राजपती की
पुत्री [illegible] राजकुमारी पाण्डेय को. [illegible]
सम्पन्न हुआ। इधर, आज का आरक्षण कार्य हो रहा है
पर [illegible] है।
आज [illegible] मौलवी [illegible] उनके गाड़ी [illegible]
तथा [illegible] आना [illegible]
है। राजनीतिक [illegible]
विचार किया है। [illegible] हो रहा है।

हमें स्वयं अपना उद्धार करना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्वाणीन्द्रियकर्माणि प्राणकर्माणि चापरे । आत्मसंयमयोगाग्नौ जुह्वति ज्ञानदीपिते। २७।
द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञा योगयज्ञास्तथापरे । स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्च यतयः संशितव्रताः। २८।

sarvāṇīndriyakarmāṇi prāṇakarmāṇi cāpare ātmasaṁyamayogāgnau juhvati jñānadīpite
dravyayajñāstapoyajñā yogayajñāstathāpare svādhyāyajñānayajñāśca yatayaḥ saṁśitavratāḥ
(Ch.4/27-28)

सूर्यो० ५।२७, सूर्या० ६।२४ —— **श्रीहनुमज्जयन्ती, पूर्णिमा, वैशाख-स्नानारम्भ**

आज [illegible] को दिल्ली तथा [illegible]
श्री [illegible] को पत्र [illegible]
के लिये [illegible] भेज दिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपाने जुह्वति प्राणं प्राणेऽपानं तथापरे। प्राणापानगती रुद्ध्वा प्राणायामपरायणाः। २९।
अपरे नियताहाराः प्राणान्प्राणेषु जुह्वति। सर्वेऽप्येते यज्ञविदो यज्ञक्षपितकल्मषाः। ३०।

apāne juhvati prāṇaṁ prāṇe'pānaṁ tathāpare prāṇāpānagatī ruddhvā prāṇāyāmaparāyaṇāḥ
apare niyatāhārāḥ prāṇānprāṇeṣu juhvati sarve'pyete yajñavido yajñakṣapitakalmaṣāḥ
(Ch.4/29-30)

सूर्यो० ५।२६, सूर्या० ६।२५

'बहुरि बंदि खलगन, सति भाएँ
जे बिनु काज दाहिने बाये ॥"
" खल अघ अगुन साधु गुन गाहा।
उभय अपार उदधि अवगाहा ॥
तेहि तें कछु गुन दोष बखाने।
संग्रह त्याग न बिनु पहिचाने ॥"
गोस्वामी तुलसीदासजी इन अनुभवसिद्ध पंक्तियों को सदा ध्यान में रखकर व्यावहारिक क्षेत्र में बरतना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन। ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा।३७।
न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते। तत्स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति।३८।

yathaidhāṁsi samiddho'gnirbhasmasātkurute'rjuna jñānāgniḥ sarvakarmāṇi bhasmasātkurute tathā
na hi jñānena sadṛśaṁ pavitramiha vidyate tatsvayaṁ yogasaṁsiddhaḥ kālenātmani vindati
(Ch.4/37-38)

सूर्यो० ५।२२, सूर्या० ६।२८

कर्मयोग ही जीवन है। अकर्मण्यता ही मरण है।

"कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेत्" - यहाँ जीने की भी इच्छा निषिद्ध नहीं है, कर्म करने की विधि है। वह जीने की इच्छा का इलाज है।

देह में रहते हुए कर्मयोग के सिवाय दूसरा कोई उपाय नहीं है। क्योंकि :- "न हि देहभृता शक्यं त्यक्तुं कर्माण्यशेषतः।" (गीता १८।११).

मनुष्य जन्म के उद्देश्यभूत आत्मज्ञान की प्राप्ति पर ही, जिन्होंने कुल्हाड़ी मार दी, वे मनुष्य जन्म का अधिकार खोकर दीर्घकाल तक आत्मज्ञान का मार्ग ही बंद कर देते हैं।

"असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृताः।"

आत्मा की देह से भिन्नता यदि जीव जान ले तो अज्ञानी जीव की मरणोत्तर गति के विषय में प्रश्न अवश्य खड़ा होगा। वह जड़ सृष्टि में लीन नहीं हो सकता, क्योंकि वह चेतन है। वह ईश्वर में नहीं मिल सकता, क्योंकि उसे आत्मज्ञान नहीं हुआ है। अर्थात् उसका अपने विशिष्ट अहंकार के साथ सृष्टि और ईश्वर दोनों से भिन्न रूप में रहना अनिवार्य है।

आसुरि योनि। इसे गीता में मूढ़ योनि कहा है। मूढ़ योनि और यहाँ की भाषा में अंधेरे से घिरी योनि समझना चाहिए।

सामर्थ्य और शक्ति आपके अन्दर हैं।

(दूसरे पृष्ठ में)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः। ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति।३९।
अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च संशयात्मा विनश्यति। नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः।४०।

śraddhāvāँllabhate jñānaṁ tatparaḥ saṁyatendriyaḥ jñānaṁ labdhvā parāṁ śāntimacireṇādhigacchati
ajñaścāśraddadhānaśca saṁśayātmā vinaśyati nāyaṁ loko'sti na paro na sukhaṁ saṁśayātmanaḥ
(Ch.4/39-40)

सूर्यो० ५।२१, सूर्या० ६।२८

यह पाप के कारण मिलती है, इस कल्पना के आधार पर, इसे
पापयोनि भी कहते हैं।
आत्यन्तिक विनाश किसी का भी नहीं हो सकता,
आसुरी योनि से उद्धार हो सकता है, यह शास्त्र भी मानते हैं।
वहां भी किन्हीं के अन्य कर्म हों। आजीवन जीने हैं।
उसके आधार पर पश्चात्ताप और ईश्वर के लिये पुकार की
सम्भावना रहती है।
पर मनुष्य जन्म पाने के बाद, यह एक बड़ा दायित्व
कर्मक्षेत्र बन जाता है। वहाँ इसका उपकार करने का अवसर है।
आसुरी योनि पाये हुए अधिकारी अधोगति को
प्राप्त होते हैं।

खुले दिलसे अपनी भूल स्वीकार करें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

योगसन्न्यस्तकर्माणं ज्ञानसञ्छिन्नसंशयम्। आत्मवन्तं न कर्माणि निबध्नन्ति धनञ्जय।४१।
तस्मादज्ञानसम्भूतं हृत्स्थं ज्ञानासिनात्मनः। छित्त्वैनं संशयं योगमातिष्ठोत्तिष्ठ भारत।४२।

yogasannyastakarmāṇaṁ jñānasañchinnasaṁśayam ātmavantaṁ na karmāṇi nibadhnanti dhanañjaya
tasmādajñānasambhūtaṁ hṛtsthaṁ jñānāsinātmanaḥ chittvainaṁ saṁśayaṁ yogamātiṣṭhottiṣṭha bhārata
(Ch.4/41-42)

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ज्ञानकर्मसन्न्यासयोगो नाम चतुर्थोऽध्यायः।४।

सूर्यो० ५।२०, सूर्या० ६।२९

आज प्रमोद के चचा एवं मेरे शिष्य श्री सीताराम शर्मा घर से आये। वे अपने संबंधी, हरिहरपुर-जलालपुर से मिलेंगे जो चिकित्सा के क्रम में यहां आये हुए हैं।
आज श्री प्रमोद जी की परीक्षा में नारायण को लेकर गये थे। दो बजे आये।
दिल्ली से एक डा० इन्द्रजीत उनके घर का भवन या संदेश लेकर आया था कि एक कोई अतिथि भी आ रहे हैं।

× × ×

आज श्री सुदर्शन सिंह - मामा जी, रघुनंदन मिश्र, के० का० अधीक्षक, भागलपुर, प्रातः रहते आये। उन्होंने विशेष समाचार बताये हुए। वे मुकदमा के काम से आये। उनके पुत्र श्री कामेश्वर ओझा से मिले जो राय रामप्रसाद जी लाल बहादुर के कार्यालय में चले गये हैं। संभवतः दो सप्ताह में यहां आकर लेकर भेजेंगे, ऐसा आश्वासन संदेश दिया है।
डा० भरत सिंह उपाध्याय की बहु प्रतीक्षित पुस्तक "बौद्ध दर्शन एवं अन्य भारतीय दर्शन" पढ़ रहे हैं। ७४ पृष्ठ अद्यतन पढ़ गये। पुस्तक अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं विषद शोधपूर्ण है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथ पञ्चमोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

सन्न्यासं कर्मणां कृष्ण पुनर्योगं च शंससि। यच्छ्रेय एतयोरेकं तन्मे ब्रूहि सुनिश्चितम्।१।

श्रीभगवानुवाच

सन्न्यासः कर्मयोगश्च निःश्रेयसकरावुभौ। तयोस्तु कर्मसन्न्यासात्कर्मयोगो विशिष्यते।२।

arjuna uvāca

sannyāsaṁ karmaṇāṁ kṛṣṇa punaryogaṁ ca śaṁsasi yacchreya etayorekaṁ tanme brūhi suniścitam

śrībhagavānuvāca

sannyāsaḥ karmayogaśca niḥśreyasakarāvubhau tayostu karmasannyāsātkarmayogo viśiṣyate

(Ch.5/1-2)

सूर्यो० ५।१९, सूर्या० ६।२९

आज प्रमोद कुमार के साथ [illegible] के लिये प्रस्थान किया। प्रमोद [illegible] से [illegible] रहते हैं। किन्तु [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] रहते हुए भी [illegible] से [illegible] करते हैं। [illegible] [illegible] हैं, अर्जुन को [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सकते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज्ञेयः स नित्यसन्न्यासी यो न द्वेष्टि न काङ्क्षति। निर्द्वन्द्वो हि महाबाहो सुखं बन्धात्प्रमुच्यते।३।
साङ्ख्ययोगौ पृथग्बालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः। एकमप्यास्थितः सम्यगुभयोर्विन्दते फलम्।४।

jñeyaḥ sa nityasannyāsī yo na dveṣṭi na kāṅkṣati nirdvandvo hi mahābāho sukhaṁ bandhātpramucyate
sāṅkhyayogau pṛthagbālāḥ pravadanti na paṇḍitāḥ ekamapyāsthitaḥ samyagubhayorvindate phalam
(Ch.5/3-4)

सूर्यो० ५।१८, सूर्या० ६।३०

प्रातः ढाई बजे छपरा - देहरादून पंजाब मेल से उतरे। रामेश्वर नारायण पाण्डे - रामप्रसाद पाण्डेय, एवं श्री मनोज कुमार, धर्मेन्द्र पाण्डेय, अजय पाण्डेय - उपस्थित थे। उनकी गाड़ी से स्वामी - मनीकगांव भीखमपुर सहित कन्हैया पहुँचा। तिलकोत्सव की प्रवृत्ति वहाँ भी - उत्साह उमंग की चहल पहल थी।

निर्धारित समय पर तिलकोत्सव हुआ। वैदिक विधि से पूजापाठ के साथ कर्मकाण्ड पूर्वक तिलक संपन्न हुआ। भूमिहार ब्राह्मण उदारता की प्रतिमूर्ति हैं, स्वाभिमानी हैं। जो संपन्न लोग मैं लोहा - जमीन जोत वाले हैं वे कुछ - कुछ लोग हैं, उदार स्वभाव के नहीं हैं, मन के अभाव रखते हैं। इन लोगों में ब्रह्मणत्व का गौरव भावना भी नहीं है।

ऊँचाई मंजिल पर रहते हैं। सांस्कृतिक महामंत्र से दुर्गाजी शर्मा मिले - कुशल व्यवहार हुआ। उनके कहे समाजनीति का बड़ा एक भी साथ था।
बिहारी के पं० रामदरश पाण्डेय के परिवार वैद्यनाथ पाण्डेय प्रो० सि० कानपुर पाण्डेय इन्द्रदेव वर्मा के साथ मिले। पहले मैंने नहीं पहचाना - उन्होंने पहचाना।
पूर्वोक्त कार्यक्रम गंगा सागर में चर्चित रहे।

कानाफूसीसे विक्षुब्ध न हों।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यत्साङ्ख्यैः प्राप्यते स्थानं तद्योगैरपि गम्यते।एकं साङ्ख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति।५।
सन्न्यासस्तु महाबाहो दुःखमाप्तुमयोगतः। योगयुक्तो मुनिर्ब्रह्म नचिरेणाधिगच्छति।६।

yatsāṅkhyaiḥ prāpyate sthānaṁ tadyogairapi gamyate ekaṁ sāṅkhyaṁ ca yogaṁ ca yaḥ paśyati sa paśyati
sannyāsastu mahābāho duḥkhamāptumayogataḥ yogayukto munirbrahma nacireṇādhigacchati
(Ch.5/5-6)

सूर्यो० ५।१८, सूर्या० ६।३० **वरूथिनी एकादशीव्रत**

श्री राजपाण्डेय के संबंधियों के अशोभनीय व्यवहार से
दुःखी हो मैंने पत्र: नरेन्द्र दीक्षित तिलक शास्त्री
वाराणसी भेज दी गई।
कुछ रात गये द्वारिका पाण्डेय कन्या के पिता आये।
दो तीन व्यक्ति और आये। मैंने भी श्री राजपाण्डेय
को राजनाथ रामाश्रय तथा कैलाश पाण्डे की उपस्थिति
के [illegible] समझाया बात ठीक हो गयी।
राधा को पूर्वोक्त समाचार हो गया। संबंधियों को
201 रुपये पूजा स्वरूप दिये। कीमती रुपये पूजा में
पहले दिये थे। ब्राह्मणों को 270 रुपये पूजा रूप
में दिया।

वैशाख कृष्ण १२, रविवार, 4 MAY

सूर्यो० ५।१७, सूर्या० ६।३१

प्रदोषव्रत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रलपन्विसृजन्गृह्णन्नुन्मिषन्निमिषन्नपि । इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेषु वर्तन्त इति धारयन् । ९ ।
ब्रह्मण्याधाय कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा करोति यः । लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा । १० ।

pralapanvisrjangrhṇannunmiṣannimiṣannapi indriyāṇīndriyārtheṣu vartanta iti dhārayan
brahmaṇyādhāya karmāṇi saṅgaṁ tyaktvā karoti yaḥ lipyate na sa pāpena padmapatramivāmbhasā
(Ch.5/9-10)

सूर्यो० ५।१५, सूर्या० ६।३१ — **अमावास्या**

आज प्रमोद के साथ [illegible] से [illegible]
उठा। [illegible] और सम्भालकर [illegible] मूर्ति को [illegible]
[illegible] से [illegible] करते हुए [illegible] गिर गये।
[illegible] बादशाह [illegible] हृदय के [illegible] आज
की दुनिया में मिलना कठिन है। मालूम होता है
कि यहीं से यह संस्कृति धूमिल पड़ जायेगी।
श्री रामकेश - राम आधार पाण्डेय, रामजी [illegible]
आदि भी उपस्थित थे। श्री राम पांडे की [illegible]
रामकेश [illegible] के [illegible]
[illegible] श्री राम [illegible] की काशी से [illegible]
[illegible]। [illegible] पांडे ने [illegible]
[illegible]
[illegible] २५०० रुपये दिये।
इन्द्रजीत ने [illegible] - बादाम वगैरह [illegible]
और दिये। [illegible]
[illegible] किया।
श्री रामकेश ने [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
किया। [illegible] वाला पौवा मिला था।

आलस्य और प्रमाद ही मृत्यु हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कायेन मनसा बुद्ध्या केवलैरिन्द्रियैरपि। योगिनः कर्म कुर्वन्ति सङ्गं त्यक्त्वात्मशुद्धये। ११।
युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा शान्तिमाप्नोति नैष्ठिकीम्। अयुक्तः कामकारेण फले सक्तो निबध्यते। १२।

kāyena manasā buddhyā kevalairindriyairapi yoginaḥ karma kurvanti saṅgaṁ tyaktvātmaśuddhaye
yuktaḥ karmaphalaṁ tyaktvā śāntimāpnoti naiṣṭhikīm ayuktaḥ kāmakāreṇa phale sakto nibadhyate
(Ch.5/11-12)

सूर्यो० ५।१४, सूर्यो० ६।३२

आज पंजाब से उदयकर राजगुरुमठ में पहुँचे।
प्रमोद की पत्नी बच्चियों सहित - श्री सेठ एस. बी. पार्टी की
गवर्नमेंट राधेश्याम पत्नी की इकलौत से आ गई
ईशान पहुँचाने गये हैं।
कल जेल सुपरिटेंडेन्ट डा नरेन्द्र मिश्र के कनीज़
को [illegible] नालंदा सन्यासी सेवा - के जनपदस्थ
को गई जाना है। परशुराम जयंती का आयोजन
समारोह होगा।

अधिक सजावट असभ्यताकी निशानी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्वकर्माणि मनसा सन्न्यस्यास्ते सुखं वशी। नवद्वारे पुरे देही नैव कुर्वन्न कारयन्। १३।
न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः। न कर्मफलसंयोगं स्वभावस्तु प्रवर्तते। १४।

sarvakarmāṇi manasā sannyasyāste sukhaṁ vaśī navadvāre pure dehī naiva kurvanna kārayan
na kartṛtvaṁ na karmāṇi lokasya sṛjati prabhuḥ na karmaphalasaṁyogaṁ svabhāvastu pravartate
(Ch.5/13-14)

सूर्यो० ५। १४, सूर्या० ६। ३२

आज प्रातः मगध एक्सप्रेस से प्रमोदकुमार
के साथ मोकामा पहुँचा। स्टेशन पर किसी का पता
नहीं। रिक्शा से [illegible] के [illegible]
रहे। फोन [illegible] सम्पर्क हुआ।
पता चला कि आर्थिक - [illegible]
[illegible] हुआ है।
[illegible] के साथ स्टेशन [illegible]
प्रेमपूर्वक मिले। मैं प्रमोदकुमार सहित
मगध एक्सप्रेस से [illegible]
आया। इसमें [illegible] के [illegible]
[illegible] - किले को गुरु [illegible]
के [illegible] स्वामी [illegible] हैं।
मैं पटना में पहुँचा। मैं [illegible]
[illegible] पर विश्राम किया।

अपनी गुप्त बातें हर किसीसे न कहें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नादत्ते कस्यचित्पापं न चैव सुकृतं विभुः। अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तवः।१५।
ज्ञानेन तु तदज्ञानं येषां नाशितमात्मनः। तेषामादित्यवज्ज्ञानं प्रकाशयति तत्परम्।१६।

nādatte kasyacitpāpaṁ na caiva sukṛtaṁ vibhuḥ ajñānenāvṛtaṁ jñānaṁ tena muhyanti jantavaḥ
jñānena tu tadajñānaṁ yeṣāṁ nāśitamātmanaḥ teṣāmādityavajjñānaṁ prakāśayati tatparam
(Ch.5/15-16)

सूर्यो० ५।१३, सूर्या० ६।३३ — अक्षय तृतीया, श्रीपरशुराम-जयन्ती

मौन प्रातःभोजन बना। १२बजे भोजन किया। श्रीहरिकृष्ण
[illegible] के साथ श्री वेङ्कटेश [illegible] पहुँचे।
पं० कमलाकान्त पराडेय ज्योतिषी से मिलकर
पटेल के घर में वास्तुशान्ति पूजा के प्रणव-प्रकाश में।
आचार्य मैंने श्रीरामप्रसाद पराडेय-श्रीराम पारखेयको
उद्बोधन पत्र लिखकर कूरियर से भेज दिया।
इसी पत्र भी श्री रामनरेश पराडेय के नाम लिखकर
तैयार किया। जो कल कूरियर से भेजा जायेगा।

संशय करनेवालेको सुख प्राप्त नहीं हो सकता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तद्बुद्धयस्तदात्मानस्तन्निष्ठास्तत्परायणाः। गच्छन्त्यपुनरावृत्तिं ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः।१७।
विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि। शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः।१८।

tadbuddhayastadātmānastanniṣṭhāstatparāyaṇāḥ gacchantyapunarāvṛttiṁ jñānanirdhūtakalmaṣāḥ
vidyāvinayasampanne brāhmaṇe gavi hastini śuni caiva śvapāke ca paṇḍitāḥ samadarśinaḥ
(Ch.5/17-18)

सूर्यो० ५।१२, सूर्या० ६।३३

वैशाख शुक्ल ५, रविवार, 11 MAY

सूर्यो० ५।११, सूर्या० ६।३४

आज प्रातः ७ बजे श्री भुवनेश्वर सिंह, मा॰ मो॰ डा॰ चन्द्रशेखर मिश्र - मुजफ्फरपुर कोठी, आये चले गये। [illegible] बाद को मुजफ्फरपुर चले गये तथा श्री मा॰ डा॰ कोमल ओझा - [illegible] से मिलकर राजगुरु की सहायता [illegible] प्रयास करो।

आज [illegible] श्री डा॰ [illegible] शर्मा। [illegible] आये। [illegible] को [illegible] यात्रा करने का [illegible] हुआ। [illegible] शर्मा।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इहैव तैर्जितः सर्गो येषां साम्ये स्थितं मनः। निर्दोषं हि समं ब्रह्म तस्माद्ब्रह्मणि ते स्थिताः। १९।
न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य नोद्विजेत्प्राप्य चाप्रियम्। स्थिरबुद्धिरसम्मूढो ब्रह्मविद् ब्रह्मणि स्थितः। २०।

ihaiva tairjitaḥ sargo yeṣāṁ sāmye sthitaṁ manaḥ nirdoṣaṁ hi samaṁ brahma tasmādbrahmaṇi te sthitāḥ
na prahṛṣyetpriyaṁ prāpya nodvijetprāpya cāpriyam sthirabuddhirasammūḍho brahmavid brahmaṇi sthitaḥ
(Ch.5/19-20)

सूर्यो० ५।११, सूर्या० ६।३५

आज प्रातः डा० गो० ना० शर्मा १० बजे शेरपुर चले गये। डा० गणेश्वर मिश्र एवं श्री हरिकृष्ण ठाकुर को लेकर विवेकानन्द [illegible] गये। आज भी श्री शिवमूर्ति [illegible] जी की प्रतीक्षा करते रहे किन्तु वे आये नहीं। [illegible] कारणवश [illegible] पास आना एवं हिमालयजी को भेजकर आवश्यकता [illegible] किया-कराया।

नियमोंमें बँधकर मनुष्यकी शक्तिका विकास होता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणमृषयः क्षीणकल्मषाः। छिन्नद्वैधा यतात्मानः सर्वभूतहिते रताः।२५।
कामक्रोधवियुक्तानां यतीनां यतचेतसाम्। अभितो ब्रह्मनिर्वाणं वर्तते विदितात्मनाम्।२६।

labhante brahmanirvāṇamṛṣayaḥ kṣīṇakalmaṣāḥ chinnadvaidhā yatātmānaḥ sarvabhūtahite ratāḥ
kāmakrodhaviyuktānāṁ yatīnāṁ yatacetasām abhito brahmanirvāṇaṁ vartate viditātmanām
(Ch.5/25-26)

सूर्यो० ५।९, सूर्या० ६।३७ — **श्रीसीतानवमी**

आज प्रातः गोरखपुर [illegible] एक्सप्रेस से बनारस [illegible] पहुँचे। [illegible] पर [illegible] [illegible] राजघाट [illegible]। [illegible] कोई कार्य नहीं हुआ। प्रमोद [illegible] किशोर [illegible] का संदेश था कि [illegible] के शंकराचार्य [illegible] के आने की [illegible] - [illegible] हो सकता [illegible] हुआ।

किन्तु कई लोगों में [illegible] होती है कई [illegible] में रहते हैं। [illegible] और [illegible] प्रवचन किया तथा [illegible] की [illegible]।

आज भी [illegible] में [illegible] हुई [illegible] को बनाया गया। प्रमोद [illegible] को [illegible] है। रात में [illegible] [illegible] [illegible]।

आज बैंक [illegible] [illegible] [illegible] उतारा। ५०० [illegible] [illegible] खाते में जमा किया। अब कुछ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] जायेंगे।

भजन एक अमोलक वस्तु है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्पर्शान्कृत्वा बहिर्बाह्यांश्चक्षुश्चैवान्तरे भ्रुवोः । प्राणापानौ समौ कृत्वा नासाभ्यन्तरचारिणौ । २७ ।
यतेन्द्रियमनोबुद्धिर्मुनिर्मोक्षपरायणः । विगतेच्छाभयक्रोधो यः सदा मुक्त एव सः । २८ ।

sparśānkṛtvā bahirbāhyāṁścakṣuścaivāntare bhruvoḥ prāṇāpānau samau kṛtvā nāsābhyantaracāriṇau
yatendriyamanobuddhirmunirmokṣaparāyaṇaḥ vigatecchābhayakrodho yaḥ sadā mukta eva saḥ
(Ch.5/27-28)

सूर्यो० ५।८, सूर्या० ६।३७

प्रातः प्रमोद प्रेमनारायण सोमनाथ गये। उन्होंने
दुबे के घर तिलकोत्सव था। पदयात्रा करते [illegible]।
[illegible] भी [illegible] पटना से लौटे नहीं।

प्रमोद की देर तक प्रतीक्षा करता रहा पर नहीं आये।
श्री केशवराम [illegible] से; जो आगमे पूरा सेटिंग में
करने और [illegible] हो रहे हैं।

श्री केशवराम जी श्री [illegible] बड़े प्रेम उत्साह और श्रद्धा से मिले।
[illegible] को [illegible] दाम [illegible] - ११० [illegible]
दिया। प्रमोद [illegible] सहित ५ बजे [illegible]
आये। धोती दे [illegible] भी आ गये थे।
रजिस्ट्री [illegible] राम से भेंट किया। [illegible]
और [illegible] सिर [illegible] [illegible] को
[illegible] को [illegible] है।
सांयकाल [illegible] प्रेस पर [illegible]
[illegible] टेम्पो से [illegible] विश्रामालय में १२-३० के
[illegible] में [illegible] विश्राम किया।

अनन्त सुखकी खोज ही जीवका धर्म है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोक्तारं यज्ञतपसां सर्वलोकमहेश्वरम्। सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति।२९।

bhoktāraṁ yajñatapasāṁ sarvalokamaheśvaram suhṛdaṁ sarvabhūtānāṁ jñātvā māṁ śāntimṛcchati

(Ch.5/29)

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिपत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मसन्न्यासयोगो नाम पञ्चमोऽध्यायः।५।

सूर्यो० ५।८, सूर्या० ६।३८

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

वैशाख शुक्ल ११, रविवार, 18 MAY

सूर्यो० ५।७,   सूर्या० ६।३८

मोहिनी एकादशीव्रत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथ षष्ठोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

अनाश्रितः कर्मफलं कार्यं कर्म करोति यः। स सन्न्यासी च योगी च न निरग्निर्न चाक्रियः।१।
यं सन्न्यासमिति प्राहुर्योगं तं विद्धि पाण्डव। न ह्यसन्न्यस्तसङ्कल्पो योगी भवति कश्चन।२।

śrībhagavānuvāca

anāśritaḥ karmaphalaṁ kāryaṁ karma karoti yaḥ sa sannyāsī ca yogī ca na niragnirna cākriyaḥ
yaṁ sannyāsamiti prāhuryogaṁ taṁ viddhi pāṇḍava na hyasannyastasaṅkalpo yogī bhavati kaścana
(Ch.6/1-2)

सूर्यो० ५।७, सूर्या० ६।३९ — **सोमप्रदोष**

आज [illegible] के साथ प्रातः [illegible] के लिये चले। रास्ते में [illegible] हुई। १०॥ बजे [illegible] पहुँचे। वहाँ से [illegible] के बाद [illegible] पहुँचे। [illegible] में [illegible] ३॥ बजे [illegible] पहुँचे। [illegible]। [illegible] पर भोजन [illegible]। [illegible]। मैं [illegible]। स्वामी [illegible] तथा स्वामी [illegible]। [illegible] शर्मा [illegible], [illegible] शर्मा तथा गाँव के [illegible], पं० [illegible] शर्मा भी [illegible] बाद में [illegible]। [illegible] बजे भोजन किया। रात में [illegible]। [illegible] है [illegible] और [illegible]। [illegible] है। [illegible] है। [illegible] [illegible]। [illegible]।

अ० ६] वैशाख शुक्ल १२, सं० २०५४, सोमवार, MAY 19. 1997 [दिन १३९

[illegible] नहीं [illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जितात्मनः प्रशान्तस्य परमात्मा समाहितः। शीतोष्णसुखदुःखेषु तथा मानापमानयोः।७।
ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा कूटस्थो विजितेन्द्रियः । युक्त इत्युच्यते योगी समलोष्टाश्मकाञ्चनः।८।

jitātmanaḥ praśāntasya paramātmā samāhitaḥ śītoṣṇasukhaduḥkheṣu tathā mānāpamānayoḥ jñānavijñānatṛptātmā kūṭastho vijitendriyaḥ yukta ityucyate yogī samaloṣṭāśmakāñcanaḥ
(Ch.6/7-8)

सूर्यो० ५।६, सूर्या० ६।४० — **पूर्णिमा, श्रीबुद्ध-जयन्ती, वैशाख-स्नान समाप्त**

आज पं० देवनारायण शर्मा [illegible] करना।
बोलता है. सच्चिदानंद के यहाँ [illegible] प्रातः [illegible]
[illegible] के [illegible]।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुहृन्मित्रार्युदासीनमध्यस्थद्वेष्यबन्धुषु । साधुष्वपि च पापेषु समबुद्धिर्विशिष्यते। ९।
योगी युञ्जीत सततमात्मानं रहसि स्थितः। एकाकी यतचित्तात्मा निराशीरपरिग्रहः।१०।

suhṛnmitrāryudāsīnamadhyasthadveṣyabandhuṣu sādhuṣvapi ca pāpeṣu samabuddhirviśiṣyate
yogī yuñjīta satatamātmānaṁ rahasi sthitaḥ ekākī yatacittātmā nirāśīraparigrahaḥ
(Ch.6/9-10)

सूर्यो० ५।५, सूर्या० ६।४१

आज महाशक्ति की पूजा. [illegible]
[illegible] पाण्डेय [illegible] सायंकाल.
श्री [illegible] शर्मा के [illegible] पर [illegible] पर पहुँचे
[illegible] शर्मा सहित [illegible] से भेंट हुई। [illegible]
के [illegible] में [illegible] था।
[illegible] देखा। [illegible]
[illegible] रहे थे। [illegible]
[illegible]
[illegible] देखा। [illegible] मन में खेद ही हुआ।
[illegible] समाज के [illegible] के विरोध
[illegible] पड़ता है।
[illegible] है।

अगर भगवान्‌की दया चाहते हो तो अपनेसे छोटोंपर दया करो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य स्थिरमासनमात्मनः। नात्युच्छ्रितं नातिनीचं चैलाजिनकुशोत्तरम्।११।
तत्रैकाग्रं मनः कृत्वा यतचित्तेन्द्रियक्रियः। उपविश्यासने युञ्ज्याद्योगमात्मविशुद्धये।१२।

śucau deśe pratiṣṭhāpya sthiramāsanamātmanaḥ nātyucchritaṁ nātinīcaṁ cailājinakuśottaram
tatraikāgraṁ manaḥ kṛtvā yatacittendriyakriyaḥ upaviśyāsane yuñjyādyogamātmaviśuddhaye
(Ch.6/11-12)

सूर्यो० ५।५, सूर्या० ६।४१ आज प्रातः योगीराज के निवास [illegible]
[illegible] मिले [illegible] हुआ। [illegible]
[illegible] से पूर्णतः स्वस्थ नहीं हुए हैं।
[illegible]
[illegible] योगीराज के [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] का [illegible]।

ज्येष्ठ कृष्ण ३, रविवार, 25 MAY
सूर्यो० ५।५, सूर्या० ६।४२
श्रीगणेशचतुर्थीव्रत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समं कायशिरोग्रीवं धारयन्नचलं स्थिरः । सम्प्रेक्ष्य नासिकाग्रं स्वं दिशश्चानवलोकयन् । १३ ।
प्रशान्तात्मा विगतभीर्ब्रह्मचारिव्रते स्थितः । मनः संयम्य मच्चित्तो युक्त आसीत मत्परः । १४ ।

samaṁ kāyaśirogrīvaṁ dhārayannacalaṁ sthiraḥ sampreksya nāsikāgraṁ svaṁ diśaścānavalokayan
praśāntātmā vigatabhīrbrahmacārivrate sthitaḥ manaḥ saṁyamya maccitto yukta āsīta matparaḥ
(Ch.6/13-14)

सूर्यो० ५।५, सूर्या० ६।४३

[illegible] दूवी एक्सप्रेस से दिल्ली-सहेसरावं के
लिये प्रस्थान किया। संयोग वश बड़े [illegible] वाले
डा० जी. [illegible] परिचय हुआ। [illegible] के स्थान
[illegible] व [illegible] स्नान भोजन [illegible] उन्होंने
[illegible] से विचार बड़े।
श्री [illegible] आदि मिले।
[illegible] रचना को [illegible]
[illegible] का मिश्रण हुआ।

X X X

आज [illegible] है। [illegible] वनवास का
[illegible] बड़े। प्रमोद आये थे।

हृदयकी सरलता और निर्मलता ईश्वरीय ज्योति है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

युञ्जन्नेवं सदात्मानं योगी नियतमानसः। शान्तिं निर्वाणपरमां मत्संस्थामधिगच्छति।१५।
नात्यश्नतस्तु योगोऽस्ति न चैकान्तमनश्नतः। न चाति स्वप्नशीलस्य जाग्रतो नैव चार्जुन।१६।

yuñjannevaṁ sadātmānaṁ yogī niyatamānasaḥ śāntiṁ nirvāṇaparamāṁ matsaṁsthāmadhigacchati
nātyaśnatastu yogo'sti na caikāntamanaśnataḥ na cāti svapnaśīlasya jāgrato naiva cārjuna
(Ch.6/15-16)

सूर्यो० ५।४, सूर्या० ६।४३

आज प्रमोद के साथ यूनीवर्सल प्रेस से मिले [illegible]
के [illegible] प्रस्ताव। गाड़ी [illegible] [illegible] हैदर [illegible]
[illegible] [illegible]। [illegible] के [illegible]
पहुँचे। वे मिलकर आने को तैयार थे।
भोजन दिया गया। उनके [illegible]। [illegible]
मैं। सायंकाल 7.30 बजे आगमन किया, [illegible]
राम [illegible] [illegible] [illegible] मिले।
२८ ता० को [illegible] [illegible] के
संबंध में [illegible] [illegible]।
श्री सत्येन्द्र [illegible] मिले। [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु । युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा । १७ ।
यदा विनियतं चित्तमात्मन्येवावतिष्ठते । निःस्पृहः सर्वकामेभ्यो युक्त इत्युच्यते तदा । १८ ।

yuktāhāravihārasya yuktaceṣṭasya karmasu yuktasvapnāvabodhasya yogo bhavati duḥkhahā
yadā viniyataṁ cittamātmanyevāvatiṣṭhate niḥspṛhaḥ sarvakāmebhyo yukta ityucyate tadā
(Ch.6/17-18)

सूर्यो० ५ । ४, सूर्या० ६ । ४४

आज पैदल सिवारी के लिये गाव-भी
चले। जमोदलकुआ गाँव राजनीति राय भी थे।
अब पैदल चला नहीं जाता। बाहर से पहुँचे।
भोजन विश्राम किया - भीमा राम जी भी चली चले हैं।
अतः पुनः सिवारी लौटने का कार्यक्रम के
टेम्पो से सिवारी के लिये चले। रामपुर के पास
करीब बजे से सड़क - बाहर हुए।
अतः टेम्पो लौटा दिया गया। चक्का व्हील हाउस होकर
पैदल सिवारी आ गये।
सिवारी में श्रीमान् [illegible] [illegible]
आदि के यहां जल-पान सत्संग किया।
आना दिन एक कार्य की व्यवस्था लोगों ने की।

जैसी करनी वैसा फल, आज नहीं तो निश्चय कल।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यथा दीपो निवातस्थो नेङ्गते सोपमा स्मृता। योगिनो यतचित्तस्य युञ्जतो योगमात्मनः।१९।
यत्रोपरमते चित्तं निरुद्धं योगसेवया। यत्र चैवात्मनात्मानं पश्यन्नात्मनि तुष्यति।२०।

yathā dīpo nivātastho neṅgate sopamā smṛtā yogino yatacittasya yuñjato yogamātmanaḥ
yatroparamate cittaṁ niruddhaṁ yogasevayā yatra caivātmanātmānaṁ paśyannātmani tuṣyati
(Ch.6/19-20)

सूर्यो० ५।३, सूर्या० ६।४४

[illegible]

अपनेको अनाथ समझना हमारी भूल है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुखमात्यन्तिकं यत्तद्बुद्धिग्राह्यमतीन्द्रियम्। वेत्ति यत्र न चैवायं स्थितश्चलति तत्त्वतः।२१।
यं लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाधिकं ततः। यस्मिन्स्थितो न दुःखेन गुरुणापि विचाल्यते।२२।

sukhamātyantikaṁ yattadbuddhigrāhyamatīndriyam vetti yatra na caivāyaṁ sthitaścalati tattvataḥ
yaṁ labdhvā cāparaṁ lābhaṁ manyate nādhikaṁ tataḥ yasminsthito na duḥkhena guruṇāpi vicālyate
(Ch.6/21-22)

सूर्यो० ५।३, सूर्यो० ६।४५

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

इच्छा ही क्रोध का मूल है।

[illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तं विद्याद् दुःखसंयोगवियोगं योगसञ्ज्ञितम् । स निश्चयेन योक्तव्यो योगोऽनिर्विण्णचेतसा।२३।
सङ्कल्पप्रभवान्कामांस्त्यक्त्वा सर्वानशेषतः । मनसैवेन्द्रियग्रामं विनियम्य समन्ततः।२४।

taṁ vidyād duḥkhasaṁyogaviyogaṁ yogasañjñitam sa niścayena yoktavyo yogo'nirviṇṇacetasā
saṅkalpaprabhavānkāmāṁstyaktvā sarvānaśeṣataḥ manasaivendriyagrāmaṁ viniyamya samantataḥ
(Ch.6/23-24)

सूर्यो० ५।३, सूर्या० ६।४६

[illegible handwritten entry]

ज्येष्ठ कृष्ण ११, रविवार, 1 JUNE

सूर्यो० ५।३, सूर्या० ६।४६

अचला एकादशीव्रत

[illegible handwritten entry]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शनैः शनैरुपरमेद्बुद्ध्या धृतिगृहीतया । आत्मसंस्थं मनः कृत्वा न किञ्चिदपि चिन्तयेत् । २५ ।
यतो यतो निश्चरति मनश्चञ्चलमस्थिरम् । ततस्ततो नियम्यैतदात्मन्येव वशं नयेत् । २६ ।

śanaiḥ śanairuparamedbuddhyā dhṛtigṛhītayā ātmasaṁsthaṁ manaḥ kṛtvā na kiñcidapi cintayet yato yato niścarati manaścañcalamasthiram tatastato niyamyaitadātmanyeva vaśaṁ nayet
(Ch.6/25-26)

सूर्यो० ५ । ३, सूर्या० ६ । ४७ — सोमप्रदोष

आज प्रमोद कुमार आज गये। श्री सत्यदेव [illegible] कुछ
[illegible] का कार्य शुरू हुआ।
श्री [illegible] राम जी से मिले। [illegible]
मोहित को ₹२०० पांच सौ [illegible] दे दिये [illegible]
दे दिया। [illegible] का विवाह [illegible] और
गंगासागर [illegible] [illegible] हुआ
है।
आज [illegible]।
[illegible] आज [illegible] को [illegible]।
[illegible] आज [illegible] लिये लिया।
[illegible] की बात [illegible] है। [illegible]
[illegible]। [illegible]
[illegible] में [illegible] ५० [illegible]
[illegible] किया।
[illegible] दो [illegible]
[illegible] पड़ा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रशान्तमनसं ह्येनं योगिनं सुखमुत्तमम्। उपैति शान्तरजसं ब्रह्मभूतमकल्मषम्।२७।
युञ्जन्नेवं सदात्मानं योगी विगतकल्मषः। सुखेन ब्रह्मसंस्पर्शमत्यन्तं सुखमश्नुते।२८।

praśāntamanasaṁ hyenaṁ yoginaṁ sukhamuttamam upaiti śāntarajasaṁ brahmabhūtamakalmaṣam
yuñjannevaṁ sadātmānaṁ yogī vigatakalmaṣaḥ sukhena brahmasaṁsparśamatyantaṁ sukhamaśnute
(Ch.6/27-28)

सूर्यो० ५।२, सूर्या० ६।४७ आज बक्सर से वाराणसी आगमन।
गेहूँ और आम [illegible] आदि लेकर प्रमोदकुमार के साथ
मठ में आये। बक्सर से [illegible] ७० रुपये में [illegible]
लिये। [illegible] और [illegible] से यह [illegible] चलता है।
इस यात्रा में [illegible] पूजा मिली और [illegible] पैसे [illegible]
के। मुजफ्फरपुर से [illegible] अमेश्वर ओझा द्वारा भेजा
गया [illegible] का ड्राफ्ट मिला।
श्री दिनेश कुमार पाण्डेय बीकानेर (दिवंगत) परीक्षा के
काल में [illegible] जिलाधिकार [illegible] मुक्त हुए हैं।
यह खेदजनक है। उनका साथी उन्हें [illegible]।
[illegible] हुआ था। पर २ [illegible] कार्तिक के लिये लाये।
[illegible] अखिलकुमार को दिया।
पुनः [illegible] से ५०० रुपये "[illegible]" [illegible] गुरु की
[illegible] उस [illegible] माता को दिया।
[illegible] राजस्थान [illegible] से मिले,
[illegible] समाचार हुआ। वे उनकी चिकित्सा [illegible]
बड़े [illegible] शास्त्री [illegible] गये हैं। वे [illegible]
चौधरी परिवार के आदर्श [illegible] के रूप में
[illegible] के प्रतीक रहे हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि। ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः।२९।
यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति। तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति।३०।

sarvabhūtasthamātmānaṁ sarvabhūtāni cātmani īkṣate yogayuktātmā sarvatra samadarśanaḥ
yo māṁ paśyati sarvatra sarvaṁ ca mayi paśyati tasyāhaṁ na praṇaśyāmi sa ca me na praṇaśyati
(Ch.6/29-30)

सूर्यो० ५।२, सूर्या० ६।४८

कुछ लोग - होटल, जलपान आदि किये थे। पत्नी जमानत की पेशी में कचहरी गये थे - [illegible] अनभिज्ञता तथा सही सहायक के बिना काम नहीं हो सका। संभवतः [illegible] को [illegible] होगा।

"द्विजत्वं द्विजानुष्ठानाद् विप्रत्वं वेदपाठतः।
ब्रह्मत्वं च यथा ज्ञानादिति वेदान्त डिंडिमः॥"

यज्ञोपवीत धारण रूप विधि के अनुष्ठान से द्विज बन जाता है। वेद का पाठ करने से विप्र बन जाता है, परन्तु ब्राह्मण तो तभी बनता है जब ब्रह्मज्ञान प्राप्त कर लेता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्वभूतस्थितं यो मां भजत्येकत्वमास्थितः। सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मयि वर्तते। ३१।
आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन। सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः। ३२।

sarvabhūtasthitaṁ yo māṁ bhajatyekatvamāsthitaḥ sarvathā vartamāno'pi sa yogī mayi vartate
ātmaupamyena sarvatra samaṁ paśyati yo'rjuna sukhaṁ vā yadi vā duḥkhaṁ sa yogī paramo mataḥ
(Ch.6/31-32)

सूर्यो० ५।२, सूर्या० ६।४८ — **अमावास्या, वटसावित्रीव्रत**

आज सत्संगभवन का मुख्यद्वार बनाने वाले कारीगर के
आने और ठेकेदार का भेजने के कारण [illegible] बन गया।
कल पं. नन्दकुमार [illegible] [illegible] सिंह को भेजने दौड़े तो कार्य
आगे बढ़ेगा।

आज कल राज मिस्त्री [illegible] का भी
और वाले हैं। कैलाशपति मिश्र ने [illegible] होटल [illegible]
को [illegible] के सम्बन्ध में कहा है। [illegible] [illegible]
चलते हैं। सत्संग मन्दिर बनते हैं जो [illegible] है।
उनके [illegible] का प्र. ५ रखा है।

दिन में घर पर विश्राम करके [illegible]। एक घंटे तक
न सोई पढ़ तथा उठते समय की प्रकृति और कुछ [illegible]
साफ करते रहे। बुरी तरह थक गये।

शाम में शेरी दौड़ लगाई। दाहिनी पसली की हड्डी में
दर्द है। [illegible] दवा चाहिए [illegible]
तथा आँख की दवा चाहिये [illegible]।

"गेहूँ के दाने" पुस्तक द्वितीय संस्करण की
भूमिका लिखकर प्रमोदकुमार को सौंप दिया।

क्रोध अपने दोषों पर करना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

अर्जुन उवाच

योऽयं योगस्त्वया प्रोक्तः साम्येन मधुसूदन । एतस्याहं न पश्यामि चञ्चलत्वात्स्थितिं स्थिराम् । ३३ ।
चञ्चलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम् । तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम् । ३४ ।

arjuna uvāca

yo'yaṁ yogastvayā proktaḥ sāmyena madhusūdana   etasyāhaṁ na paśyāmi cañcalatvātsthitiṁ sthirām
cañcalaṁ hi manaḥ kṛṣṇa pramāthi balavaddṛḍham   tasyāhaṁ nigrahaṁ manye vāyoriva suduṣkaram

(Ch.6/33-34)

सूर्यो० ५ । २, सूर्या० ६ । ४८

आज कोई कार्य सम्पन्न नहीं हो सका।
श्री कलराज मिश्र के अधिकारी भी धुन भी सभी उसी उधेड़बुन में
लगे थे। कचहरी की जमानत का भी काम नहीं हुआ।
भरद्विपदाचार्य - दर्शन नहीं किये। आदर्श के [illegible] अरुणासिंह
के पास नहीं जा सके अतः आदर्श के काम भी रह गये।
यदुनाथ और [illegible] [illegible] कल्लू-ओझा की बात
कहना भी मलाहर आदि कार्य के लिये नहीं आया।

मृत्यु आकर जगाये उसके पहले ही जाग जाओ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्जुन उवाच

अयतिः श्रद्धयोपेतो योगाच्चलितमानसः । अप्राप्य योगसंसिद्धिं कां गतिं कृष्ण गच्छति । ३७ ।
कच्चिन्नोभयविभ्रष्टश्छिन्नाभ्रमिव नश्यति । अप्रतिष्ठो महाबाहो विमूढो ब्रह्मणः पथि । ३८ ।

arjuna uvāca

ayatiḥ śraddhayopeto yogāccalitamānasaḥ aprāpya yogasaṁsiddhiṁ kāṁ gatiṁ kṛṣṇa gacchati
kaccinnobhayavibhraṣṭaśchinnābhramiva naśyati apratiṣṭho mahābāho vimūḍho brahmaṇaḥ pathi

(Ch.6/37-38)

सूर्यो० ५।२, सूर्या० ६।४९

आज [illegible] -भागलपुर (मुजफ्फरपुर) के पुत्र आये। वे अपने पिताजी को परीक्षा में १२-१२ [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] है- [illegible] के क्रम में सहसा [illegible] शाम को।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्राप्य पुण्यकृतां लोकानुषित्वा शाश्वतीः समाः। शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते।४१।
अथवा योगिनामेव कुले भवति धीमताम्। एतद्धि दुर्लभतरं लोके जन्म यदीदृशम्।४२।

prāpya puṇyakṛtāṁ lokānuṣitvā śaśvatīḥ samāḥ śucīnāṁ śrīmatāṁ gehe yogabhraṣṭo'bhijāyate athavā yogināmeva kule bhavati dhīmatām etaddhi durlabhataraṁ loke janma yadīdṛśam
(Ch.6/41-42)

सूर्यो० ५।२, सूर्या० ६।४९

आज प्रमोदकुमार चले गये। निजी कामों से मेरी निजी व्यवस्था तथा मठ का निर्माणकार्य सभी खटाई में पड़ गये।

कर्तव्यपालनमें व्यक्तिगत स्वार्थका त्याग करना पड़ता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रयत्नाद्यतमानस्तु योगी संशुद्धकिल्बिषः। अनेकजन्मसंसिद्धस्ततो याति परां गतिम्।४५।
तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिकः। कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन।४६।

prayatnādyatamānastu yogī saṁśuddhakilbiṣaḥ anekajanmasaṁsiddhastato yāti parāṁ gatim
tapasvibhyo'dhiko yogī jñānibhyo'pi mato'dhikaḥ karmibhyaścādhiko yogī tasmādyogī bhavārjuna
(Ch.6/45-46)

सूर्यो० ५।२, सूर्या० ६।५० — आज डा० रामेश्वर मिश्र जी - मध्याह्न में वाटिका।
होते स्थान में आये। उनके भोजन लो हैडी।
मठ का निर्माण आदि - फाटक, छत की रुकावटें, राज मिस्त्री
का प्रबन्ध नहीं हो पाया - क्योंकि मिस्त्री जी लापरवाह
स्वभाव के हैं। टालमटोल करते हैं।
आज वृन्दा के ओमप्रकाश राय कहाँ से आये,
उन्होंने मठ का निर्माण कार्य देखकर हर्ष प्रकट किया।

सायंकाल वे द्या लेकर घर चले गये।
उन्होंने एक सौ रुपये पूजा किये। १० रुपये विशेष के जमा करने दिये।

बिजली बगल में फंसने लगी।
ओमप्रकाश वकील गंदा का भी कूड़ा साफ किया
रखा, बर्तन मलकर रख दिया।
१० रुपये का सब्जी एवं ७ रुपये दिया सामान है।

निर्दोषता और रहस्य कभी एक साथ नहीं रहते।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

योगिनामपि सर्वेषां मद्गतेनान्तरात्मना। श्रद्धावान्भजते यो मां स मे युक्ततमो मतः। ४७।

yogināmapi sarveṣāṁ madgatenāntarātmanā śraddhāvānbhajate yo māṁ sa me yuktatamo mataḥ
(Ch.6/47)

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे आत्मसंयमयोगो नाम षष्ठोऽध्यायः।६।

सूर्यो० ५।२, सूर्या० ६।५१

आज [illegible] बाजार गये।
[illegible] से [illegible] लायेंगे। [illegible] ६०० रुपये दे गये।
१० कि॰ग्रा॰ दही मंगाया। १०० रुपये [illegible] दिया। ५० रुपये [illegible] के लिये।
१० दूध आदि के लिये।
डा॰ कामेश्वर ओझा, उपायुक्त (उत्पाद) [illegible] (भागलपुर); मुजफ्फरपुर को धन्यवाद पत्र, उनके उदार [illegible] सहयोग के लिये पत्र लिखा।

ज्येष्ठ शुक्ल १०, रविवार, 15 JUNE
सूर्यो० ५।२, सूर्या० ६।५१

श्रीगङ्गा-दशहरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथ सप्तमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

मय्यासक्तमनाः पार्थ योगं युञ्जन्मदाश्रयः। असंशयं समग्रं मां यथा ज्ञास्यसि तच्छृणु। १।

śrībhagavānuvāca

mayyāsaktamanāḥ pārtha yogaṁ yuñjanmadāśrayaḥ asaṁśayaṁ samagraṁ māṁ yatha jñāsyasi tacchṛṇu

(Ch.7/1)

सूर्यो० ५।२, सूर्या० ६।५१ — **भीमसेनी, निर्जला एकादशीव्रत**

आज महादेव राय जी सपत्नीक मठमें आ पहुंचे। एकादशी के उपलक्ष में गंगा स्नानार्थ आये। उन्होंने मठ के निर्माण कार्य के करने के सम्बन्ध में चर्चा हुई। कारीगर मिलने नहीं, महावीर जी से अनुरोध करने पर उनके माध्यम से काम होगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज्ञानं तेऽहं सविज्ञानमिदं वक्ष्याम्यशेषतः। यज्ज्ञात्वा नेह भूयोऽन्यज्ज्ञातव्यमवशिष्यते। २।
मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये। यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः। ३।

jñānaṁ te'haṁ savijñānamidaṁ vaksyāmyaśeṣataḥ yajjñātvā neha bhūyo'nyajjñātavyamavaśiṣyate manuṣyāṇāṁ sahasreṣu kaścidyatati siddhaye yatatāmapi siddhānāṁ kaścinmāṁ vetti tattvataḥ
(Ch.7/2-3)

सूर्यो० ५।२, सूर्या० ६।५२

~~आजकल किसी एक मामा और एक कोर्ट काम [illegible] था। ११-१९ से १२-४५ [illegible] अतः कोर्ट तक [illegible] रही [illegible] कार्यवाही आगे है। [illegible] ६००० [illegible] दिया। १५० [illegible] किया। ८० रुपये का दही मंगाया।~~

आज प्रातः ही रिक्शा लाया चौबेपुर से चलकर, मठ में पहुँचा।
ठीक [illegible] था। सायंकाल सहसा श्री चन्द्रशेखर सिंह जी के मामा श्री भुवनेश्वर सिंह, मुजफ्फरपुर के निवासी [illegible] प्रसाद सिंह [illegible] [illegible] (सुपुत्र [illegible] निवासी [illegible] प्रताप सिंह [illegible]) को पहुँचे।
मामा बाबू अस्वस्थ हैं तथा [illegible] मामा के वृद्ध होने के कारण उनके गाँव के संबंधी [illegible] में रहते हैं अतः [illegible] किसी के [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] चला जायेंगे।

दूसरोंका न कभी बुरा करो, न चाहो ही।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च। अहङ्कार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा।४।
अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम्। जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्यते जगत्।५।

bhūmirāpo'nalo vāyuḥ khaṁ mano buddhireva ca ahaṅkāra itīyaṁ me bhinnā prakṛtiraṣṭadhā
apareyamitastvanyāṁ prakṛtiṁ viddhi me parām jīvabhūtāṁ mahābāho yayedaṁ dhāryate jagat
(Ch.7/4-5)

सूर्यो० ५।३, सूर्या० ६।५२ **प्रदोषव्रत**

मेरे शरीर की स्थिति अच्छी नहीं है। कमजोरी, उम्र भी
बुढ़ापे का कष्ट है। कौशिकी वेदना/चिन्ता है। प्रमोद के नहीं
मानने से आनन्द-अवसाद हो जाता है।
उनको गलि वह संकुचित मनोवृत्ति के रूप में देखा गया है।
किन्तु सब के बाद में भी लोग भी कर सहयोगी रहे हैं।
साधु संन्यासी, मेरे शिष्य तो केवल स्वार्थपूर्ति चोर रूके
और मतलबी, पेट पालक और अवसरवादी हैं।
आगे राम जी [illegible] लोगों को यह [illegible] दें।

रामके लिये आरामका त्याग करो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एतद्योनीनि भूतानि सर्वाणीत्युपधारय। अहं कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयस्तथा।६।
मत्तः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति धनञ्जय। मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव।७।

etadyonīni bhūtāni sarvāṇītyupadhāraya ahaṁ kṛtsnasya jagataḥ prabhavaḥ pralayastathā
mattaḥ parataraṁ nānyatkiñcidasti dhanañjaya mayi sarvamidaṁ protaṁ sūtre maṇigaṇā iva
(Ch.7/6-7)

सूर्यो० ५।३, सूर्या० ६।५३

मास्टर निर्माण का काम बंद है, आदमी [illegible]
आते नहीं।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आये हैं,
[illegible] [illegible] [illegible] का [illegible]। पानी को काटकर
[illegible] में [illegible]। [illegible] [illegible] का काम
होता रहा।
बादाम आया किलो ४० रुपये।
छोहाड़ा आया किलो ३० ६० मिश्री आया किलो
१२ रुपये की मंगानी गई।

आज [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

चञ्चल मनसे सिद्धि दूर भागती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रसोऽहमप्सु कौन्तेय प्रभास्मि शशिसूर्ययोः। प्रणवः सर्ववेदेषु शब्दः खे पौरुषं नृषु।८।
पुण्यो गन्धः पृथिव्यां च तेजश्चास्मि विभावसौ। जीवनं सर्वभूतेषु तपश्चास्मि तपस्विषु।९।

raso'hamapsu kaunteya prabhāsmi śaśisūryayoḥ praṇavaḥ sarvavedeṣu śabdaḥ khe pauruṣaṁ nṛṣu
puṇyo gandhaḥ pṛthivyāṁ ca tejaścāsmi vibhāvasau jīvanaṁ sarvabhūteṣu tapaścāsmi tapasviṣu
(Ch.7/8-9)

सूर्यो० ५।३, सूर्यां० ६।५३ **पूर्णिमा**

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

जो हृदयस्थ है उसकी शरण लो।

[illegible]

RajGuru Math: Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम्। बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम्।१०।
बलं बलवतां चाहं कामरागविवर्जितम्। धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ।११।

bījaṁ māṁ sarvabhutānāṁ viddhi pārtha sanātanam buddhirbuddhimatāmasmi tejastejasvināmaham
balaṁ balavatāṁ cāhaṁ kāmarāgavivarjitam dharmāviruddho bhūteṣu kāmo'smi bharatarṣabha
(Ch.7/10-11)

सूर्यो० ५।३, सूर्यां० ६।५३

आज [illegible] रहती दाल मंगवा [illegible], दीखा - [illegible] मशाला सब्जी आदि का रहता है। आज [illegible] अनुपम त्रिपाठी, उनके [illegible] भारतीय, मनोज [illegible] अभियंता के साथ [illegible] आ पहुंचे।

नाटक के कारण, [illegible] पलटन [illegible] तथा लोहे की जाली आदि के संबंध में [illegible] हुआ। एक सप्ताह में काम करने का उन्होंने आश्वासन दिया। मैंने ग्यारह सौ एक रुपये उन्हें दे दिये। कल से कभी [illegible] की सब्जी [illegible] में बीमार हूँ। भोजन कम लेता हूँ। आज रात के दीखा भोजन किया।

आषाढ़ कृष्ण २, रविवार, 22 JUNE

सूर्यो० ५।३, सूर्यां० ६।५३

आज [illegible] लाल जी घर चले गये। दही [illegible] रुपये [illegible] पहुंच गये। आज दिन में दीखा भोजन किया। मनोज की ओर आने वाले हैं। [illegible] होती है।

आज अपराह्न - राजकिशोर बाबू [illegible] प्रेमनारायण जी के साथ [illegible] का कार्य करते हैं। [illegible] सम्मान किया, [illegible] मूर्ति [illegible] वाराणसी [illegible] संकट [illegible] प्रणाम [illegible] सकाम [illegible] सम्मानित भी [illegible] [illegible] के प्रोफेसर [illegible] भारतीय [illegible]

[illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ये चैव सात्त्विका भावा राजसास्तामसाश्च ये। मत्त एवेति तान्विद्धि न त्वहं तेषु ते मयि। १२।
त्रिभिर्गुणमयैर्भावैरेभिः सर्वमिदं जगत्। मोहितं नाभिजानाति मामेभ्यः परमव्ययम्। १३।

ye caiva sāttvikā bhāvā rājasāstāmasāśca ye matta eveti tānviddhi na tvahaṁ teṣu te mayi tribhirguṇamayairbhāvairebhiḥ sarvamidaṁ jagat mohitaṁ nābhijānāti māmebhyaḥ paramavyayam
(Ch.7/12-13)

सूर्यो० ५।४, सूर्या० ६।५३ — **श्रीगणेशचतुर्थीव्रत**

श्री प्रमोद कुमार को दूसरा फल ना लगा द्वारा भेजकर प्रार्थना पूर्वक
भुलाया। बिजली बनाने के १००रुपये - धोबी साठ रुपये - दूध १००रुपये
कल के लिये आज दही पचहत्तर - दस रुपये लेकर कोटे में
जमी आदि के दस रुपये दिये। कल संध्या समय विन्ध्याचल राय जी
बैरंजर निवासी समाजसेवक एवं श्री ... कुमार समता के लिये
कोमि एवं वे बड़े जोश के आश्वासन देकर गये।
श्री स्वामी हरिहरानन्द भारती स्वार्थी पदलोलुप एवं कूपमण्डूक
तथा अनुदार आदमी हैं, व्यवस्था चलावेंगे। नाव डुबावेंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया। मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते।१४।
न मां दुष्कृतिनो मूढाः प्रपद्यन्ते नराधमाः। माययापहृतज्ञाना आसुरं भावमाश्रिताः।१५।

daivī hyeṣā guṇamayī mama māyā duratyayā māmeva ye prapadyante māyāmetāṁ taranti te
na māṁ duṣkṛtino mūḍhāḥ prapadyante narādhamāḥ māyayāpahṛtajñānā āsuraṁ bhāvamāśritāḥ
(Ch.7/14-15)

सूर्यो० ५।४, सूर्या० ६।५३ आज मंगलवार से संक्रान्ति-[illegible] प्रेम [illegible] नहान दशा
के रूप में मनाते हैं। एक कोरी [illegible]-चिट्ठी के कारण
ओर आया है। इसके लिये [illegible] है।
आज उपराह्न श्री [illegible] नारायण पाण्डेय, [illegible] पत्रिका
के श्री [illegible] श्री नारायण पाण्डेय के पुत्र का [illegible] संस्कृत में
आयोजित है। स्वागत में मैं [illegible], उसी
का [illegible] का श्री [illegible] दिया
गया। पं. [illegible] के [illegible]। उन्होंने
खाते के [illegible] किया [illegible]
[illegible] दिया। [illegible] रुपये का [illegible] दीनानाथ
किया। आज श्री कृष्णसिंह के [illegible] को आमंत्रण
श्री मनोज [illegible] है। [illegible]
[illegible] लगाये।
श्री उदयसिंह के [illegible] की खबर मिली। [illegible]
[illegible] है। [illegible]।
श्री हेराम [illegible] महर्षि देवानन्द [illegible] सत्संग भवन में
[illegible] दिये। उन्होंने [illegible] कि
उनके [illegible] के [illegible] श्रीसिंह का देहावसान हो गया, एवं
उनके बाद उनकी पत्नी का भी देहावसान हो गया।
[illegible] में महर्षि दयानन्द [illegible] पाण्डेय
से सम्पर्क करके [illegible] के सम्बन्ध में बातें
करके कोई [illegible] करेंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उदाराः सर्व एवैते ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम् ।आस्थितः स हि युक्तात्मा मामेवानुत्तमां गतिम्।१८।
बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते ।वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः।१९।

udārāḥ sarva evaite jñānī tvātmaiva me matam āsthitaḥ sa hi yuktātmā māmevānuttamāṁ gatim
bahūnāṁ janmanāmante jñānavānmāṁ prapadyate vāsudevaḥ sarvamiti sa mahātmā sudurlabhaḥ
(Ch.7/18-19)

सूर्यो० ५।४, सूर्या० ६।५३

'मनसः ईष्टे इति मनीषी' — मनीषी, जो मन पर सत्ता चला सकता है, मन को आवश्यकतानुसार नियंत्रण रख सकता है, किसी काम में लगा सकता है।
'ईशावास्य' - ईश्वर की उपासना उपनिषद् है।

कवि और मनीषी परस्पर एक विशेषण हैं। रचनाशक्ति और नियंत्रणशक्ति दोनों का योग चाहिये।

गीता २-१२ ५५-७२ के क्रम में आत्मज्ञ पुरुष का (लक्षण) गुण-चरित्र इस तरह वर्णन किया गया है: →

(१) ओतप्रोत विश्वप्रेम
किसी व्यक्ति से भी और किसी वस्तु से भी आसक्ति नहीं। उद्वेग नहीं।

(३) विश्वात्मैक्य दर्शन

(४) मोह नहीं, शोक नहीं

(५) विदेह स्थिति

(६) पारदर्शिता, दर्शिता, व्यापकता

(७) शाश्वत अस्तित्व

सुखकी इच्छाका त्याग करानेके लिये ही दुःख आता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः । तं तं नियममास्थाय प्रकृत्या नियताः स्वया। २०।
यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति । तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम्। २१।

kāmaistaistairhṛtajñānāḥ prapadyante'nyadevatāḥ taṁ taṁ niyamamāsthāya prakṛtyā niyatāḥ svayā
yo yo yāṁ yāṁ tanuṁ bhaktaḥ śraddhayārcitumicchati tasya tasyācalāṁ śraddhāṁ tāmeva vidadhāmyaham
(Ch.7/20-21)

सूर्यो० ५।४, सूर्या० ६।५३

आज कृष्ण सिंह को सूचना दी गई कि फसल के विनोद में देरी हो रही है। पत्रकार नन्दिदेवनाथ द्वि. पानी की कमजोरी तथा उसी धन का सिंह आदित्य से जल के अभाव और सड़क के सम्बन्ध में लिखकर सूचित किया। निर्देशी आजाद - पुत्रों के विवाही कार्यों के पटों आने का प्रयास करते किन्तु वे प्रबन्ध व्यवस्था करके पहुँच जाते। प्रमोद के आतंक लगभग 1000 रुपये आज रुपये बाड़ी चीनी-दाल-कुल्फी-दूध-सिक्का-कल आदि के मद में पूरा से खर्च हो चुके हैं।
प्रमोद के बड़े भाई संकेत तथा जगन रंगा के आगे पूरे भोजन करता है, किन्तु रंगा भोजन प्रसन्न रहते हैं, उसका व्यवहार देखकर मैं भोजन नहीं पर ताकता दीखा तो कभी [illegible], कुछ खाकर दूध या दही के साथ भोजन के लिये ले जाते हैं। सावित्री ... अगस्त लगे हैं।

अविद्या और विद्या में दोनों एक ही वस्तु के निवृत्त (निगेटिव) और प्रवृत्त (पाजिटिव) अंग हैं।
अविद्या माने इष्ट अर्थ में अनधिकृत अनंत ज्ञान प्राप्त न करना। विद्या माने इष्ट अर्थ में अधिकृत विशिष्ट ज्ञान लाभ करना। इन अर्थों में ईशावास्य में ये शब्द पारिभाषिक हैं।

शरीरको 'मैं' और 'मेरा' मानना प्रमाद है; प्रमाद ही मृत्यु है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उदाराः सर्व एवैते ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम् ।आस्थितः स हि युक्तात्मा मामेवानुत्तमां गतिम्।१८।
बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते ।वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः।१९।

udārāḥ sarva evaite jñānī tvātmaiva me matam āsthitaḥ sa hi yuktātmā māmevānuttamāṁ gatim
bahūnāṁ janmanāmante jñānavānmāṁ prapadyate vāsudevaḥ sarvamiti sa mahātmā sudurlabhaḥ
(Ch.7/18-19)

सूर्यो० ५।४, सूर्या० ६।५३

'मनस: ईष्टे इति मनीषी'— मनीषी वह, जो मनपर सत्ता चला सकता है, मनपर आवश्यकतानुसार नियंत्रण रख सकता है, उसे काम में लगा सकता है।
'ईशावास्य'- ईश्वरकी उपासना उपनिषद् है।

कवि और मनीषी परस्पर एक के विशेषण हैं। दर्शनशक्ति और निरीक्षणशक्ति दोनों का योग चाहिये।

मंत्र २-२ ५-८ के क्रम में आत्मज्ञ पुरुष का (लक्षण) गुण-चरित्र इस तरह वर्णन किया गया है: →

(१) ओतप्रोत विश्वप्रेम
किसी व्यक्ति से भी और किसी वस्तु से भी अरुचि नहीं, उद्वेग नहीं।
(३) विश्वात्मैक्य दर्शन
(४) मोह नहीं, शोक नहीं
(५) विदेह स्थिति
(६) पारदर्शिता, वशिता, व्यापकता
(७) शाश्वत अभिलाभ

सुखकी इच्छाका त्याग करानेके लिये ही दुःख आता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः । तं तं नियममास्थाय प्रकृत्या नियताः स्वया। २०।
यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति । तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम्। २१।

kāmaistaistairhṛtajñānāḥ prapadyante'nyadevatāḥ taṁ taṁ niyamamāsthāya prakṛtyā niyatāḥ svayā
yo yo yāṁ yāṁ tanuṁ bhaktaḥ śraddhayārcitumicchati tasya tasyācalāṁ śraddhāṁ tāmeva vidadhāmyaham
(Ch.7/20-21)

सूर्यो० ५।४, सूर्या० ६।५३

आज जमुना सिंह को सूचना दी गई कि फरक्के के बिनोद में दरें हो रही हैं। पत्रकार महेन्द्र देवराय डॉ. पाणिकी कांग्रेसी तथा सभी दल के शिक्षाविद से [illegible] के प्रभाव और साहस के संबंध में लिखकर सूचित किया। निर्देशी आतंकी-युवा के सिपाही लोगों के यहाँ आने का प्रयास करते कि कुछ भवन सफलता कारवाई पहुँच जाये। प्रमोद के अनुसार लगभग १००० रुपये हजार रुपये वाली चीजें दाल-कुल्फी-दूध [illegible] आदि भी मंदी में पास से कम हो चुके हैं। प्रमोद के बहनोई संजय तथा बहन रंजना के आने से भोजन बनता है, किन्तु रंजना आसन्न प्रसवा है. उसका कष्ट व असहाय में भोजन नहीं बनता [illegible] तो कभी [illegible]। कुल मिलाकर दूध या दही के साथ भोजन के रूप में लेता हूँ। सावित्री [illegible] गंगा [illegible] में।

अविद्या और विद्या ये दोनों एक ही वस्तु के निषेध (निगेटिव) और प्रवृत्त (पॉजिटिव) अंग हैं। अविद्या माने इष्ट अर्थ में अनधिकृत अर्थात ज्ञान प्राप्त न करना। विद्या माने इष्ट अर्थ में अधिकृत विशिष्ट ज्ञान लाभ करना। इन अर्थों में 'ईशावास्य' में ये शब्द पारिभाषिक हैं।

शरीरको 'मैं' और 'मेरा' मानना प्रमाद है; प्रमाद ही मृत्यु है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स तया श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते। लभते च ततः कामान्मयैव विहितान्हि तान्। २२।
अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम्। देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि। २३।

sa tayā śraddhayā yuktastasyārādhanamīhate labhate ca tataḥ kāmānmayaiva vihitānhi tān
antavattu phalaṁ teṣāṁ tadbhavatyalpamedhasām devāndevayajo yānti madbhaktā yānti māmapi
(Ch.7/22-23)

सूर्यो० ५।५, सूर्या० ६।५४

आज सायंकाल श्री सीताराम राय-दीक्षित
अपनी पत्नी एवं बेटी: [illegible] एवं प्रौढ़ा कन्या
[illegible] हलकार आये। पहली पार का कहूँ मैं नुकसान
है जी। जाने शोक हुआ। सीताराम अपने पुत्र को कुलीन
रहन सहन तथा मातापिता की रीति प्रीति भूल जाये
जो हो मर्यादा से रहकर ओरों का कल्याण करेंगे तो ठीक
है। अन्यथा उपेक्षा भाव बालक, इतना कि पिंड छूटे।
आज भी प्रमोदकुमार नहीं आये। बारबार [illegible] कहते हैं।
बाहर [illegible] पार्क पहला सत्संग भवन में आता है।
आज भी कई पत्र लिखे। हरिकृष्ण ठाकुर [illegible]
राजकमल ठाकुर [illegible] को चिट्ठी, बहू घर के लोगों को भी। सम्बन्धियों
के माध्यम जन-प्रसार तथा [illegible] आस्था [illegible]

आषाढ़ कृष्ण ९, रविवार, 29 JUNE

सूर्यो० ५।५, सूर्या० ६।५४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वेदाहं समतीतानि वर्तमानानि चार्जुन। भविष्याणि च भूतानि मां तु वेद न कश्चन। २६।
इच्छाद्वेषसमुत्थेन द्वन्द्वमोहेन भारत। सर्वभूतानि सम्मोहं सर्गे यान्ति परन्तप। २७।

vedāhaṁ samatītāni vartamānāni cārjuna bhaviṣyāṇi ca bhūtāni māṁ tu veda na kaścana
icchādveṣasamutthena dvandvamohena bhārata sarvabhūtāni sammohaṁ sarge yānti parantapa
(Ch. 7/26-27)

सूर्यो० ५।५, सूर्या० ६।५४ — **योगिनी एकादशीव्रत (वैष्णव)**

आज गाजीपुर के लब्धप्रतिष्ठ श्री शंभुनाथ मिश्र पहला आ गये। उन्होंने पू० १ पाठशाला एक स्वयं से संस्कृत भवन के निर्माणार्थ दिये। ५४० रुपये श्री रमाशंकर मिश्र की ओर से गुरुपूजा के दिये।

आज [illegible] शिवजी की पुत्री पीला ब्रह्मचारी - नारायण शैलेन्द्र के साथ [illegible] [illegible] प्राप्त आ धमका। पूछा कि कौन है और गया। बताया कि [illegible] से स्कूल को बेचकर [illegible] के [illegible] के लिये यहां से ही [illegible] आये हैं। वस्तुतः यह [illegible] है। पैसे बटोरने के चक्कर में [illegible] रहता है। आज [illegible] [illegible] [illegible] १२ [illegible] को पहुंचकर पता चला कि दो [illegible] [illegible] में [illegible] [illegible] नहीं बन रहा है क्योंकि [illegible] [illegible] [illegible] संसर्ग में आ रहा है। बहुत [illegible] [illegible] भी [illegible] से [illegible] होते हैं, दिवालों में।

आज [illegible] [illegible] से [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] में आये। [illegible] [illegible] की [illegible] आये हैं। आज ३४ [illegible] [illegible] [illegible] मंगवाया। २ [illegible] दीया। [illegible] = [illegible] [illegible] [illegible] के लिये दिया। [illegible] १०० [illegible] को [illegible] [illegible] [illegible] भोजन किये, [illegible] [illegible]। [illegible] के [illegible] में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] भेजा। साधु-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

नाशवान्‌को महत्व देना ही बन्धन है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

येषां त्वन्तगतं पापं जनानां पुण्यकर्मणाम्। ते द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ता भजन्ते मां दृढव्रताः। २८।
जरामरणमोक्षाय मामाश्रित्य यतन्ति ये। ते ब्रह्म तद्विदुः कृत्स्नमध्यात्मं कर्म चाखिलम्। २९।

yeṣāṁ tvantagataṁ pāpaṁ janānāṁ puṇyakarmaṇām te dvandvamohanirmuktā bhajante māṁ dṛḍhavratāḥ
jarāmaraṇamokṣāya māmāśritya yatanti ye te brahma tadviduḥ kṛtsnamadhyātmaṁ karma cākhilam
(Ch.7/28-29)

सूर्यो० ५।१६, सूर्या० ६।५४ — प्रदोषव्रत

आज मद्रास के निमंत्रण-पत्र आया।
"प्राग वाणी" पत्रिका में आई। आज जगतबहादुर शास्त्री [illegible] और को पत्र लिखा - बाबा वर्षा के विषय में। सीताराम सपरिवार आकर बहुत दुख देते हैं। आज अतः सौरभ राय एवं रंजना बच्चों सहित वापस चल गये। मिथिलेश भी वापस गये।
आज अभी विद्युत व्यवस्था के कारण माँ तिवारी के [illegible] साधु को कड़ी डांट-फटकार करनी पड़ी।

शरीर-संसारसे अपना सम्बन्ध मानना कुसंग है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साधिभूताधिदैवं मां साधियज्ञं च ये विदुः। प्रयाणकालेऽपि च मां ते विदुर्युक्तचेतसः।३०।

sādhibhūtādhidaivaṁ māṁ sādhiyajñaṁ ca ye viduḥ prayāṇakāle'pi ca māṁ te viduryuktacetasaḥ
(Ch.7/30)

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ज्ञानविज्ञानयोगो नाम सप्तमोऽध्यायः।७।

सूर्यो० ५।६, सूर्या० ६।५४

आज अरुण सिंह जी का इलाहाबाद के कार्य के संबंध में तैयार होकर भेज दिया। [illegible] करने में देर है उसे [illegible] लगा।
[illegible] — चौबे [illegible] जी को पानी [illegible] के संबंध को [illegible] भेजा। आज पानी [illegible] २५ [illegible]। [illegible]।

आप भगवान्‌को नहीं देखते, पर भगवान् आपको निरन्तर देख रहे हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथाष्टमोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

किं तद्ब्रह्म किमध्यात्मं किं कर्म पुरुषोत्तम। अधिभूतं च किं प्रोक्तमधिदैवं किमुच्यते। १।
अधियज्ञः कथं कोऽत्र देहेऽस्मिन्मधुसूदन। प्रयाणकाले च कथं ज्ञेयोऽसि नियतात्मभिः। २।

arjuna uvāca

kiṁ tadbrahma kimadhyātmaṁ kiṁ karma puruṣottama adhibhūtaṁ ca kiṁ proktamadhidaivaṁ kimucyate
adhiyajñaḥ kathaṁ ko'tra dehe'sminmadhusūdana prayāṇakāle ca kathaṁ jñeyo'si niyatātmabhiḥ
(Ch.8/1-2)

सूर्यो० ५।७, सूर्या० ६।५४ — **अमावास्या**

सीतामढ़ी का पीला मेटल सब आज बक(?) गया। मिठाई मजदूरों(?)
दिया। दही दाल-मूंजा सब्जी आदि के पचास रुपये इरफान(?) को दे दिया।
ओम स्वदेश दिनकर(?) त्रिपाठी को यात्रा जाने के कार्यक्रम की सूचना
भेजा और बुलाया कि रविवार को यात्रा चलेंगे।
आज भी प्रातः थोड़ी कड़ी वर्षा हुई। सीताराम राम टहल(?)
कुटिया [illegible] पत्थर ले कर टिके हैं। [illegible] बरसात के मौसम में
[illegible] मालूम होता है। क्या मजा(?)
होगा। कुछ तो सहना ही पड़ेगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoF-Grant-2

तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च । मय्यर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयम् ।७।
अभ्यासयोगयुक्तेन चेतसा नान्यगामिना । परमं पुरुषं दिव्यं याति पार्थानुचिन्तयन् ।८।

tasmātsarveṣu kāleṣu māmanusmara yudhya ca mayyarpitamanobuddhirmāmevaiṣyasyasaṁśayam
abhyāsayogayuktena cetasā nānyagāminā paramaṁ puruṣaṁ divyaṁ yāti pārthānucintayan
(Ch.8/7-8)

सूर्यो० ५।८, सूर्या० ६।५४ आज अचानक प्रमोदकुमार सपरिवार नन्दिनी के लिये आये। प्रभुनारायणसिंह आये भेंट हुई। हरिकृष्ण ठाकुर जालौनीपुर से आये और गये।

हरिकृष्ण ठाकुर की कलई धीरे धीरे खुलने लगी। ये बड़े कुशल संस्था निर्माण के प्रबंधक हैं। संस्था को माध्यम बनाकर सामाजिक हित के नाम पर कुछ करते अवश्य हैं किन्तु मुख्य उद्देश्य निजी स्वार्थ साधना होता है। लोगों की भावना उस संस्था से गबन करके अपने उपभोग के साधन जुटाते हैं। आलीशान मकान की छत में कोठी बनवाकर सपरिवार मौज लेते हैं। जीप कार पर सदैव तीर्थधामों की अच्छी यात्रा करते हैं।

मुझे तो भारी धोखा हुआ। हरिकृष्ण एवं चक्रपाणि तिवारी को आजीवन सदस्य बनाकर पास इंतजाम, सम्पर्क करने के, क्योंकि ठाकुर तिवारी से अधिक चालाक और गबन की प्रक्रिया में माहिर हैं।

श्री शिवपाल में और उनमें इसी कंपायमान स्वभाव के लिये समझ लगा है। कभी कुछ कभी लड़ाई तो कभी शीतयुद्ध होते देखा जाता है। मैं चाहता हूँ इन दोनों से अपनी संस्था, उपयुक्त का पिण्ड छुड़ा लूँगा कि भविष्य में ये योग मठ की प्रगति एवं विकास तथा धार्मिक सम्पन्नता में बाधक न बने।

ऐसा होना चाहिये, ऐसा नहीं होना चाहिये—इसीमें सब दुःख भरे हुए हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कविं पुराणमनुशासितारमणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः । सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूपमादित्यवर्णं तमसः परस्तात् । ९ ।
प्रयाणकाले मनसाचलेन भक्त्या युक्तो योगबलेन चैव । भ्रुवोर्मध्ये प्राणमावेश्य सम्यक् स तं परं पुरुषमुपैति दिव्यम् ।१० ।

kaviṁ purāṇamanuśāsitāramaṇoraṇīyāṁsamanusmaredyaḥ sarvasya dhātāramacintyarūpamādityavarṇaṁ tamasaḥ parastāt prayāṇakāle manasācalena bhaktyā yukto yogabalena caiva bhruvormadhye prāṇamāveśya samyak sa taṁ paraṁ puruṣamupaiti divyam
(Ch.8/9-10)

सूर्यो० ५।१, सूर्या० ६।५४

आज मैंने [illegible] स्वामीजी महामंडलेश्वर स्वामी [illegible]
[illegible] चिट्ठी को उनके संबंध में वही [illegible],
[illegible] पत्र लिखा और [illegible] कि उनको
इनके ~~[illegible]~~ [illegible] जल्दी जल्दी जाये।
वर्षा आठ दिनों से [illegible] किये हुई है। [illegible]
[illegible] के पास [illegible]
और [illegible] में [illegible] रहता है
[illegible] और [illegible] की तरह है।

मिटनेवाली चीज एक क्षण भी टिकनेवाली नहीं होती।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यदक्षरं वेदविदो वदन्ति विशन्ति यद्यतयो वीतरागाः । यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं सङ्ग्रहेण प्रवक्ष्ये । ११ ।
सर्वद्वाराणि संयम्य मनो हृदि निरुध्य च । मूर्ध्न्याधायात्मनः प्राणमास्थितो योगधारणाम् । १२ ।

yadakṣaraṁ vedavido vadanti viśanti yadyatayo vītarāgāḥ yadicchanto brahmacaryaṁ caranti tatte padaṁ saṅgraheṇa pravakṣye
sarvadvārāṇi saṁyamya mano hṛdi nirudhya ca mūrdhnyādhāyātmanaḥ prāṇamāsthito yogadhāraṇām
(Ch.8/11-12)

सूर्यो० ५।९, सूर्या० ६।५४ बिजली बिल दाखिल किया गया।
श्री प्रमोद कुमार की [illegible] की [illegible] के सिलसिले में [illegible] का
काम किया।

शरीरको मैं-मेरा माननेसे तरह-तरहके और अनन्त दुःख आते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन्। यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम्।१३।
अनन्यचेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः। तस्याहं सुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः।१४।

omityekākṣaraṁ brahma vyāharanmāmanusmaran yaḥ prayāti tyajandehaṁ sa yāti paramāṁ gatim
ananyacetāḥ satataṁ yo māṁ smarati nityaśaḥ tasyāhaṁ sulabhaḥ pārtha nityayuktasya yoginaḥ
(Ch.8/13-14)

सूर्यो० ५।१९, सूर्यो० ६।५४

[illegible]
[illegible]
[illegible]

दूसरोंके दोष देखनेसे न हमारा भला होता है, न दूसरोंका।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मामुपेत्य पुनर्जन्म दुःखालयमशाश्वतम् । नाप्नुवन्ति महात्मानः संसिद्धिं परमां गताः । १५ ।
आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन । मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते । १६ ।

māmupetya punarjanma duḥkhālayamaśāśvatam nāpnuvanti mahātmānaḥ saṁsiddhiṁ paramāṁ gatāḥ
ābrahmabhuvanāllokāḥ punarāvartino'rjuna māmupetya tu kaunteya punarjanma na vidyate
(Ch.8/15-16)

सूर्यो० ५।१०, सूर्या० ६।५४

आषाढ़ शुक्ल ८, रविवार, 13 JULY

सूर्यो० ५।१०, सूर्या० ६।५३

आज प्रातः [illegible] -१० बजे
[illegible] होते [illegible] पहुँचे। आकाश [illegible]
[illegible] गाड़ी [illegible] थी।
बाद में [illegible]। साधु [illegible] कर
अनुभव हुए। उसे [illegible] भेजा। [illegible] शक्ति को [illegible]
साधु गण। फूल [illegible] को भेजा। उस [illegible] बाद में
[illegible] को कहा जो [illegible] है।
[illegible] है [illegible]
[illegible] में रहता नहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सहस्रयुगपर्यन्तमहर्यद्ब्रह्मणो विदुः । रात्रिं युगसहस्रान्तां तेऽहोरात्रविदो जनाः । १७ ।
अव्यक्ताद्व्यक्तयः सर्वाः प्रभवन्त्यहरागमे । रात्र्यागमे प्रलीयन्ते तत्रैवाव्यक्तसञ्ज्ञके । १८ ।

sahasrayugaparyantamaharyadbrahmaṇo viduḥ rātriṁ yugasahasrāntāṁ te'horātravido janāḥ
avyaktādvyaktayaḥ sarvāḥ prabhavantyaharāgame rātryāgame pralīyante tatraivāvyaktasañjñake
(Ch.8/17-18)

सूर्यो० ५।११, सूर्या० ६।५३ आज अखिलकुमार मुखर्जी ने ए [illegible] पेंशनके निकाला। रुपये जमा- एक हजार सेविंग्स खाते से निकाला।

२०० रुपये श्री [illegible] पत्नी को दिया। एक हजार [illegible] को [illegible] के लिये देना है। २५ रुपये प्रमोद कुमार को - उनकी दोनों कन्याओं को उनके [illegible] खाते में जमा करने के लिये दिया। २०० दो सौ रुपये - लड़कियों की फीस - डाक्टर आदि के लिये देना है। रात को [illegible] के हिसाब से।

स्वामी [illegible] को [illegible] पत्र [illegible] - फोटोस्टेट प्रतिकापियाँ रखा। तथा गुरुदेव के - रजिस्ट्री द्वारा [illegible] के [illegible] भेज दिया। २० रुपये खर्च हुए। १४ रुपये रजिस्ट्री के तथा पन्द्रह फोटो [illegible]।

सीतापती के [illegible] कपटी साधु को [illegible] बाहर निकाल दिया।

आप भगवान्‌के दास बन जाओ तो भगवान् आपको मालिक बना देंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूतग्रामः स एवायं भूत्वा भूत्वा प्रलीयते। रात्र्यागमेऽवशः पार्थ प्रभवत्यहरागमे।१९।
परस्तस्मात्तु भावोऽन्योऽव्यक्तोऽव्यक्तात्सनातनः। यः स सर्वेषु भूतेषु नश्यत्सु न विनश्यति।२०।

bhūtagrāmaḥ sa evāyaṁ bhūtvā bhūtvā pralīyate rātryāgame'vaśaḥ pārtha prabhavatyaharāgame
parastasmāttu bhāvo'nyo'vyakto'vyaktātsanātanaḥ yaḥ sa sarveṣu bhūteṣu naśyatsu na vinaśyati
(Ch.8/19-20)

सूर्यो० ५।११, सूर्या० ६।५३

वकार से आज प्रातः रिक्शा से स्टेशन आये। संयोगवश वहाँ [illegible]
मिल गयी। [illegible] उतरकर [illegible] के मठ में पहुँचे।
भोजन विश्राम किया। [illegible] के [illegible] आगरा के
आने और [illegible] की खबर मालूम हुई।
[illegible] कार्य [illegible]। [illegible] डालने वाले आये। एवं
[illegible] गये। [illegible] भी [illegible] हुये।
सत्संग भवन से [illegible] आते-जाते [illegible]।
उक्त मठ में आनन्द स्वामी [illegible] सरस्वती आदि
रहते मिले। वे 80 अस्सी किलो वाले [illegible] के आये हैं।
वे अत्यन्त [illegible] हो गये थे। [illegible] काम नहीं करते। [illegible] में
भी [illegible] हो जाती है। 200 [illegible] उन्होंने
[illegible] के [illegible] में जमा किये।
मैंने उन्हें [illegible] में [illegible] जाने [illegible]
वर्षों से आते-जाते रहते हैं। उन्हें महाकालपुर लौट जाने की सलाह
दिया। प्रातः वे महाकालपुर जायेंगे व [illegible] गुरुपूर्णिमा
के अवसर पर पधारेंगे।

नाशवान्–दासता ही अविनाशीके सम्मुख नहीं होने देती।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अव्यक्तोऽक्षर इत्युक्तस्तमाहुः परमां गतिम् । यं प्राप्य न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम।२१।
पुरुषः स परः पार्थ भक्त्या लभ्यस्त्वनन्यया। यस्यान्तःस्थानि भूतानि येन सर्वमिदं ततम्।२२।

avyakto'kṣara ityuktastamāhuḥ paramāṁ gatim yaṁ prāpya na nivartante taddhāma paramaṁ mama
puruṣaḥ sa paraḥ pārtha bhaktyā labhyastvananyayā yasyāntaḥsthāni bhūtāni yena sarvamidaṁ tatam
(Ch.8/21-22)

सूर्यो० ५।१२, सूर्या० ६।५३ **हरिशयनी एकादशीव्रत**

आज प्रातः कुछ मनन-पठन. तर्क-वितर्क के बाद दो हजार रुपये श्री अरुणसिंह जी। सूर्या [illegible]-मयूरभंज को [illegible] के कारण उन्हीं के मद में भेज दिया। अब तक कुल 20100 बीस हजार एक सौ रुपये इस मद में उनके पास भेजा जा चुका।

कमरपुर के ब्रजबिहारी राम-अर्जुन पुत्र के साथ बक्सर से [illegible] यहाँ आये [illegible] नहीं हो सकता है। [illegible] है। वे रात को ठहरे।

आज भी कार्य कोई आगे नहीं बढ़ सका। अस्त-व्यस्त की स्थिति है। शिवम के [illegible] आये और गये।
भगवान् [illegible] [illegible] है। किन्तु तपस्वी [illegible] हैं।

रात में बारह बजे के बाद के प्रयत्न [illegible] होता रहा [illegible].
बहुत कष्ट और चिन्ता की स्थिति में कोई भी कार्य नहीं हो सका।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यत्र काले त्वनावृत्तिमावृत्तिं चैव योगिनः। प्रयाता यान्ति तं कालं वक्ष्यामि भरतर्षभ। २३।
अग्निर्ज्योतिरहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम्। तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः। २४।

yatra kāle tvanāvṛttimāvṛttiṁ caiva yoginaḥ prayātā yānti taṁ kālaṁ vakṣyāmi bharatarṣabha agnirjyotirahaḥ śuklaḥ ṣaṇmāsā uttarāyaṇam tatra prayātā gacchanti brahma brahmavido janāḥ
(Ch.8/23-24)

सूर्यो० ५।१२, सूर्या० ६।५२ — **प्रदोषव्रत**

आज ब्रजबिहारी राय-कानपुर के, अपने पुत्र सहित आ गये। ये लोग [illegible] के बारे में [illegible] चन्द्रभाल के [illegible]। मेरे [illegible] के [illegible] में ये और [illegible] सत्यनारायण राय को [illegible] मेरे [illegible] किया था। [illegible] हैं। [illegible] गये। [illegible] के लिये [illegible]।

आज भी [illegible] का [illegible] रहा। [illegible] [illegible] के अनुसार [illegible] है।

आज [illegible] मेरे [illegible] राय [illegible] राय, [illegible] को [illegible] के भीतर [illegible] की [illegible] में लिखा।

[illegible] पं० [illegible] शर्मा, [illegible] शर्मा को [illegible] के अनुसार [illegible] के लिये [illegible]। [illegible] से [illegible] गये। उनसे पैसे [illegible] जायेंगे।

परमात्मा दूर नहीं हैं, केवल उनको पानेकी लगनकी कमी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नैते सृती पार्थ जानन्योगी मुह्यति कश्चन । तस्मात्सर्वेषु कालेषु योगयुक्तो भवार्जुन। २७।
वेदेषु यज्ञेषु तपःसु चैव दानेषु यत्पुण्यफलं प्रदिष्टम् । अत्येति तत्सर्वमिदं विदित्वा योगी परं स्थानमुपैति चाद्यम्। २८।

naite sṛtī pārtha jānanyogī muhyati kaścana tasmātsarveṣu kāleṣu yogayukto bhavārjuna
vedeṣu yajñeṣu tapaḥsu caiva dāneṣu yatpuṇyaphalaṁ pradiṣṭam atyeti tatsarvamidaṁ viditvā yogī paraṁ sthānamupaiti cādyam

(Ch.8/27-28)

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे अक्षरब्रह्मयोगो नामाष्टमोऽध्यायः। ८।

सूर्यो० ५ । १३, सूर्या० ६ । ५१

व्रत-पूर्णिमा

आज ही देहरादून से श्री राजनीतिराम जी [illegible] से आ गये। बम्बई से [illegible] की मौसी [illegible] लोग नहीं आये। डा० योगीन्द्रनाथ की धर्मपत्नी भी रोहतक से आज ही संध्या समय आ गयीं। गुरुपूर्णिमा कल है।

आषाढ़ शुक्ल १५, रविवार, 20 JULY

सूर्यो० ५ । १४, सूर्या० ६ । ५१

गुरुपूर्णिमा, श्रीव्यासपूजा

आज व्यास परिषद की महत्वपूर्ण बैठक, गुरुपूर्णिमा महोत्सव [illegible] प्रो० पद्मनारायण, रामकेश पाण्डेय, तथा योगेश शर्मा लेकर और त्रिपाठी जी मंगलदीक्षा के लिये आ पहुंचे थे। मिथिलेश के पाहुन [illegible] हैं। आज की बैठक ऐतिहासिक रही। महर्षि देवराज विश्वनाथ, योगेश शर्मा, मधुनाथ [illegible] सिंह, रामकेश पाण्डेय, रघुनाथ शर्मा, सुधाकर [illegible] कुमार [illegible] [illegible] आदि, राजेन्द्र शर्मा, बेनीपुर, स्वामी [illegible] [illegible] उदासीनता के प्रश्न पर विचार हुआ। सायंकाल विश्वविद्यालय [illegible] आ गये। दो हजार रुपये विश्वविद्यालय ने [illegible] एक हजार [illegible] रामकेश पाण्डेय को [illegible] दिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथ नवमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इदं तु ते गुह्यतमं प्रवक्ष्याम्यनसूयवे । ज्ञानं विज्ञानसहितं यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात् । १ ।
राजविद्या राजगुह्यं पवित्रमिदमुत्तमम् । प्रत्यक्षावगमं धर्म्यं सुसुखं कर्तुमव्ययम् । २ ।

śrībhagavānuvāca

idaṁ tu te guhyatamaṁ pravakṣyāmyanasūyave jñānaṁ vijñānasahitaṁ yajjñātvā mokṣyase'śubhāt
rājavidyā rājaguhyaṁ pavitramidamuttamam pratyakṣāvagamaṁ dharmyaṁ susukhaṁ kartumavyayam

(Ch.9/1-2)

सूर्यो० ५ । १४, सूर्या० ६ । ५१ आज भी [illegible] रहे। राजेश पांडे आये गये।
स्वामी हरिदासजी भी आये गये। फाटक का [illegible] प्रारंभ हुआ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अश्रद्दधानाः पुरुषा धर्मस्यास्य परन्तप। अप्राप्य मां निवर्तन्ते मृत्युसंसारवर्त्मनि। ३।
मया ततमिदं सर्वं जगदव्यक्तमूर्तिना। मत्स्थानि सर्वभूतानि न चाहं तेष्ववस्थितः। ४।

aśraddadhānāḥ puruṣā dharmasyāsya parantapa aprāpya māṁ nivartante mṛtyusaṁsāravartmani
mayā tatamidaṁ sarvaṁ jagadavyaktamūrtinā matsthāni sarvabhūtāni na cāhaṁ teṣvavasthitaḥ
(Ch.9/3-4)

सूर्यो० ५।१५, सूर्या० ६।५० श्री हरिकृष्ण ठाकुर जी- उदासीनता के प्रभाव को
लोकल समिति के विधान के आधार पर प्रस्ताव की प्रतिलिपि के साथ
पत्र लिखा। उसका भी पत्र है लिखा। १२.८.७७ का दो पृष्ठों का
सम्पादक लिखा। प्रकः उसका भी उत्तर [illegible] में
[illegible]
[illegible]
जायेगी।

अपनेमें विशेषता केवल व्यक्तित्वके अभिमानसे दीखती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न च मत्स्थानि भूतानि पश्य मे योगमैश्वरम्। भूतभृन्न च भूतस्थो ममात्मा भूतभावनः।५।
यथाकाशस्थितो नित्यं वायुः सर्वत्रगो महान्। तथा सर्वाणि भूतानि मत्स्थानीत्युपधारय।६।

na ca matsthāni bhūtāni paśya me yogamaiśvaram bhūtabhṛnna ca bhūtastho mamātmā bhūtabhāvanaḥ
yathākāśasthito nityaṁ vāyuḥ sarvatrago mahān tathā sarvāṇi bhūtāni matsthānītyupadhāraya
(Ch.9/5-6)

सूर्यो० ५।१५, सूर्या० ६।५० **श्रीगणेशचतुर्थीव्रत**

आज विशेष कार्य कोई नहीं हुआ। दिनेश कुमार पाण्डेय अपने मामा [illegible] सहित वाराणसी [illegible] गये।
आज श्री [illegible] शर्मा [illegible] उनके बड़े भाई के असामयिक निधन पर [illegible] संवेदना पत्र। [illegible] श्री [illegible]नाथ राय (वृत्तांक) अभिलेख-वाराणसी-राजगुरुमठके नाते [illegible] पत्र लिखा।

भगवान्के विमुख होकर संसारके सम्मुख होनेके समान कोई पाप नहीं है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्वभूतानि कौन्तेय प्रकृतिं यान्ति मामिकाम् । कल्पक्षये पुनस्तानि कल्पादौ विसृजाम्यहम्।७।
प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य विसृजामि पुनः पुनः । भूतग्राममिमं कृत्स्नमवशं प्रकृतेर्वशात्।८।

sarvabhūtāni kaunteya prakṛtiṁ yānti māmikām kalpakṣaye punastāni kalpādau visṛjāmyaham
prakṛtiṁ svāmavaṣṭabhya visṛjāmi punaḥ punaḥ bhūtagrāmamimaṁ kṛtsnamavaśaṁ prakṛtervaśāt
(Ch.9/7-8)

सूर्यो० ५।१६, सूर्या० ६।४९ ~~आज वर्षा आरंभ हो गई। बाहर से आये पानी-कीचड़ को धोना पड़ा। हरिकृष्ण ठाकुर कदम की [illegible] से मार की [illegible]। किशोरीजी की [illegible] प्रतिलिपि के साथ [illegible] भेजने को [illegible]। [illegible] पत्नी के [illegible] से [illegible] और स्वास्थ्य ठीक नहीं था [illegible]।~~

परमात्माकी प्राप्तिमें भावकी प्रधानता है, क्रियाकी नहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न च मां तानि कर्माणि निबध्नन्ति धनञ्जय। उदासीनवदासीनमसक्तं तेषु कर्मसु। ९।
मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम्। हेतुनानेन कौन्तेय जगद्विपरिवर्तते। १०।

na ca māṁ tāni karmāṇi nibadhnanti dhanañjaya udāsīnavadāsīnamasaktaṁ teṣu karmasu
mayādhyakṣeṇa prakṛtiḥ sūyate sacarācaram hetunānena kaunteya jagadviparivartate
(Ch.9/9-10)

सूर्यो० ५।१६, सूर्या० ६।४९

आज कार्यालय में पत्राचार का काम हुआ। शिवानन्द पाण्डेय. सूचना अधिकारी आफिस [illegible] शिवप्रसाद शर्मा के कहने से कोई ज्वाइन नहीं हो पाये। वस्तुतः न इन्चार्ज कोई आने वाले थे [illegible] को [illegible]। राजा की नाती [illegible] हो गई है [illegible] का मेल। [illegible] करते हैं। अब सौ दिन [illegible] आ गये। [illegible] पार्थिव कार्य के [illegible] में अधिकृत पत्र भेजा गया। [illegible] हो कि [illegible] भी पत्र लिखे [illegible] गया।

आज बड़ा जलसा - बड़ी कचहरी - [illegible]। [illegible] बरतनों के [illegible] के बाद भी [illegible] दो सौ [illegible] आये से अधिक [illegible]। [illegible] २५० [illegible] बच्चों को चाकलेट।

मनमें किसी वस्तुकी चाह रखना ही दरिद्रता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं विशालं क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति । एवं त्रयीधर्ममनुप्रपन्ना गतागतं कामकामा लभन्ते।२१।
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते । तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।२२।

te taṁ bhuktvā svargalokaṁ viśālaṁ kṣīṇe puṇye martyalokaṁ viśanti evaṁ trayīdharmamanuprapannā gatāgataṁ kāmakāmā labhante
ananyāścintayanto māṁ ye janāḥ paryupāsate teṣāṁ nityābhiyuktānāṁ yogakṣemaṁ vahāmyaham
(Ch.9/21-22)

सूर्यो० ५।२०, सूर्या० ६।४५

आज हरिहरपुर के श्री विन्ध्याचल राय जी
अचानक गुरु पहुंचे। साथ में एक सहायक युवक थे। स्वामी पूर्णानन्द जी
के निधन के लिये "देवर्षि ब्राह्मण संहिता" - जगन्नारायण शर्मा लिखित
मंगवाया था [illegible] के लिये [illegible] लाये थे। वे [illegible]
पं० गोविन्द शर्मा के संबंध में भी अपनी पुस्तक में पूरी जानकारी
भी देना चाहते हैं। मैंने उनसे उनके पूर्वजों के स्वतन्त्रता
[illegible] से [illegible] की बातें बताईं। पूर्वपुरुष मनसाराम
[illegible] आज से २१० वर्ष पूर्व अंग्रेजों से युद्ध में
[illegible] था। उक्त [illegible] शर्मा रचित
[illegible] शोध पुस्तक के प्रकाशन और उनके लड़कों के पास
रखी पाण्डुलिपि की प्रति और उसके प्रमाण की चर्चा की।
[illegible] पानी बरसा [illegible] में [illegible] के बाद [illegible]
[illegible] के समय [illegible] पड़ा।

मुक्ति इच्छाके त्यागसे होती है, वस्तुके त्यागसे नहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत् । यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम् । २७ ।
शुभाशुभफलैरेवं मोक्ष्यसे कर्मबन्धनैः । सन्न्यासयोगयुक्तात्मा विमुक्तो मामुपैष्यसि । २८ ।

yatkaroṣi yadaśnāsi yajjuhoṣi dadāsi yat yattapasyasi kaunteya tatkuruṣva madarpaṇam
śubhāśubhaphalairevaṁ mokṣyase karmabandhanaiḥ sannyāsayogayuktātmā vimukto māmupaiṣyasi
(Ch.9/27-28)

सूर्यो० ५।२२, सूर्या० ६।४२

म० बिन्दु से श्री हरिकृष्ण ठाकुर का एक पत्र, तथा अनुवादित पत्र जो भेजा गया था उसकी प्राप्ति स्वीकृति किया। श्री व राजनारायण शर्मा मीरजापुर अधिकारी का भी पत्र मिला।

श्री हरिकृष्ण ठाकुर बड़े खुश हैं। विकलांग संस्था बनाकर लोगों की संपूर्ति सेवा कार्य के नाम पर इकट्ठा करते जाते हैं। अतः वह हृदय किसी के बाद खुद ही। बेटों की सहायता लेकर बन्द होगा। उसमें स्वार्थ की भावना और पड़ने भर रहेगा।

पाणी के विवाह का राज-पीसा काशी राजनारायण को और कुछ कारण ज्ञात नहीं हुआ।

पुनः फौजदार सिंह को पत्र लिखा। बच्चा का लेकर, मैने श्री प्रकाश जी। प्रभाकर को मठ में आये थे, उनसे भी पोलिटिकल समझाकर कहा और काम का रिपोर्ट का ध्यान आकर्षित करने को कहा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः। ये भजन्ति तु मां भक्त्या मयि ते तेषु चाप्यहम्। २९।
अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्। साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः। ३०।

samo'haṁ sarvabhūteṣu na me dveṣyo'sti na priyaḥ ye bhajanti tu māṁ bhaktyā mayi te teṣu cāpyaham
api cetsudurācāro bhajate māmananyabhāk sādhureva sa mantavyaḥ samyagvyavasito hi saḥ
(Ch.9/29-30)

सूर्यो० ५। २३, सूर्या० ६। ४१ — बहुत दिनों के बाद श्री० कृष्णगोपाल पारसियाँ
वर्षा के कारण कुछ कार्य नहीं हो रहा है।

संसारसे कुछ भी चाहोगे तो दुःख पाना ही पड़ेगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति। कौन्तेय प्रतिजानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति। ३१।
मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः। स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम्। ३२।

kṣipraṁ bhavati dharmātmā śaśvacchāntiṁ nigacchati kaunteya pratijānīhi na me bhaktaḥ praṇaśyati
māṁ hi pārtha vyapāśritya ye'pi syuḥ pāpayonayaḥ striyo vaiśyāsthā śūdrāste'pi yānti parāṁ gatim
(Ch.9/31-32)

सूर्यो० ५।२३, सूर्या० ६।४१

आज भी कोई आये नहीं हो सका।
आज श्रीरामशंकर राय को एक कार्ड लिखकर प्रेषित किया
एक आदि आगत कुछ दिन तक।
आज परीक्षा के शुकदेव चौधरी, आये थे। उनके
पुत्र कृष्ण गोपाल चौधरी यहीं गुरुवाड़ी में काम कर
रहे हैं। पोस्ट ऑफिस से संबंधित एक विभाग में पढ़ाने
का कार्य करते हैं। उनके भाई छोटे रामगोपाल हिन्दी पंडित
के बाल्यावस्था से ... संस्कृत विद्यालय
में पढ़ाते हैं। दोनों चले जाते हैं।
श्रीकृष्ण गोपाल - डा० श्यामबिहारी राय इतिहास
के प्राध्यापक की देखरेख में कुछ शोध काम करते हैं।
आज मैंने दो पोस्टकार्ड लिखे - एक धूमपाल के
पुत्र भवानी रामनारायण को तथा दूसरा स्वामी
हरि वेदान्त सरस्वती, शिक्षा संस्था ... जो मथुरा जी
में भजन करते हुए अनुभव बिताने का ढंग रखे
पड़े हैं।

मनुष्यका उत्थान और पतन भावसे होता है, वस्तु, परिस्थिति आदिसे नहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्या भक्ता राजर्षयस्तथा । अनित्यमसुखं लोकमिमं प्राप्य भजस्व माम् । ३३ ।
मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु । मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः । ३४ ।

kiṁ punarbrāhmaṇāḥ puṇyā bhaktā rājarṣayastathā anityamasukhaṁ lokamimaṁ prāpya bhajasva mām
manmanā bhava madbhakto madyājī māṁ namaskuru māmevaiṣyasi yuktvaivamātmānaṁ matparāyaṇaḥ

(Ch.9/33-34)

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे राजविद्याराजगुह्ययोगो नाम नवमोऽध्यायः । ९ ।

सूर्यो० ५ । २४, सूर्या० ६ । ४०

नागपञ्चमी

नागपंचमी के विशेष भोजन पूड़ी सेवई बनी।
2y मैं भक्त सेवक-प्रकाश कुमार एवं उनका परिवार है।

आनेवाला जानेवाला होता है—यह नियम है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथ दशमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

भूय एव महाबाहो शृणु मे परमं वचः। यत्तेऽहं प्रीयमाणाय वक्ष्यामि हितकाम्यया। १।
न मे विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः। अहमादिर्हि देवानां महर्षीणां च सर्वशः। २।

śrībhagavānuvāca

bhūya eva mahābāho śṛṇu me paramaṁ vacaḥ yatte'haṁ prīyamāṇāya vakṣyāmi hitakāmyayā
na me viduḥ suragaṇāḥ prabhavaṁ na maharṣayaḥ ahamādirhi devānāṁ maharṣiṇāṁ ca sarvaśaḥ
(Ch.10/1-2)

सूर्यो० ५।२४, सूर्या० ६।४० आज विश्वानंद दिल्ली से आ गये। हीरालाल उनके निमित्त महामृत्युञ्जय जप प्रारंभ करेंगे। पूजा एवं कन्या भोजन सामग्री [illegible] आदि।

रेडियम प्रेस के भेजे प्रकाश गीताडायरी की प्रतियां लिये मिले। हीरालाल बड़े विलक्षण एवं मानी हैं। उनको इतना बड़ा कहीं है व मानापमान का ध्यान नहीं रखते।

आज ही सहारनपुर से सत्येन्द्रकुमार - अपनी पत्नी तथा उनके साथी योगनाथ [illegible] के साथ दर्शन करने में आ गये।

आज ही दवा के लिये पाण्डेपुर गये - दवा लेकर एवं [illegible] को लौटे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यो मामजमनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरम् । असम्मूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते । ३ ।
बुद्धिर्ज्ञानमसम्मोहः क्षमा सत्यं दमः शमः । सुखं दुःखं भवोऽभावो भयं चाभयमेव च । ४ ।

yo māmajamanādiṁ ca vetti lokamaheśvaram asammūḍhaḥ sa martyeṣu sarvapāpaiḥ pramucyate
buddhirjñānamasammohaḥ kṣamā satyaṁ damaḥ śamaḥ sukhaṁ duḥkhaṁ bhavo'bhāvo bhayaṁ cābhayameva ca
(Ch.10/3-4)

सूर्यो० ५ । २५, सूर्या० ६ । ३९ — गोस्वामी श्रीतुलसीदास-जयन्ती

आज वेद स्वराज के बीच विद्यार्थी वेद शर्मा द्वारा जप
के अनुष्ठान का संकल्प लेकर जपकार्य शुरू हो गया।
अमेरिका गए कामेश्वर सहाय नहीं पहुँच सके। तथा बहुभागी
प्रदेश चुनाव है। उन्माद देखा रहे हैं।
मैं भी उन्हीं की सुविधा के लिए इस बात सोचकर
समाज व्यवस्था बना देना चाहता हूँ। किन्तु सबके
अपने परिवारवाले स्वार्थ में उन्हें नाना परेशान करते हैं
तथा कोई काम करने नहीं देते।
मुझे जानने में खुशी होती है किन्तु आप ठहरे पक्का, रोकने
से जो इच्छा है, वह भी बंद हो जायेगा।
समाज सेवा के अभ्युदय का मार्ग अवरुद्ध हो जायेगा तथा
विकास के उद्देश्य या प्रारंभ किये कार्य रुक जायेंगे।
गिरी-बोहाड़ा के पद दिया था। आज आ नहीं सका।
भोजनोपरान्त 10 बजे रात में विश्वनाथ भवन चले गये।
स्वदेश जिन्होंने शिवाजी से सब सीख कर में उठे।
श्रद्धापूर्ण समारोह की गोष्ठी के बाद 10 बजे बुलाने पर देखा
गया। वे लोग भी अपने लिए एक इच्छा का उपयोग
करना चाहते हैं। किन्तु विश्वास नहीं है न करना कर
पं. सुरेश शर्मा द्वारा कार्य संचालित होगा।
आज ही पं. कमलेश दत्त पाण्डेय जी के ज्योतिषी
और उनके साथ ठहरे रहे।

हम घरमें रहनेसे नहीं फँसते, प्रत्युत घरको अपना माननेसे फँसते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अहिंसा समता तुष्टिस्तपो दानं यशोऽयशः । भवन्ति भावा भूतानां मत्त एव पृथग्विधाः ।५।
महर्षयः सप्त पूर्वे चत्वारो मनवस्तथा । मद्भावा मानसा जाता येषां लोक इमाः प्रजाः ।६।

ahiṁsā samatā tuṣṭistapo dānaṁ yaśo'yaśaḥ bhavanti bhāvā bhūtānāṁ matta eva pṛthagvidhāḥ
maharṣayaḥ sapta pūrve catvāro manavastathā madbhāvā mānasā jātā yeṣāṁ loka imāḥ prajāḥ
(Ch.10/5-6)

सूर्यो० ५।२५, सूर्या० ६।३८

श्री सत्येन्द्र कुमार सपरिवार देवीप्रसन्न कार्तिकेय कुमार सहित वापस गये। १०२ रुपये कुछ रुप में दे गये। रुपया होना बाद बाजार आर्केटे। प्रमोद कुमार कल तीनपक्षण में कुल का नाम चला के है। उनके जीवन का भविष्य सेवामान के है। कमावरी राव अहंभाव से सभी ग्रस्त हैं। आजकाई लोगों को पड़ता कराते हैं। अनुमानित सोचते हैं और उन्ही संकीर्ण दृष्टिकोण से व्यवहार करते हैं इस समाज के विकास और समाज की मर्यादा को गौण समझते हैं। भगवान कृपा सर्वोपरि है। जैसी भगवान इच्छा कृपा होगी उसी अनुसार गाड़ी चलेगी।

अभ्यास - ज्ञान - वैराग्य और संयम से आत्म की प्राप्ति होती है।

आत्मविसर्जन ही प्रेमका मूल मन्त्र है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एतां विभूतिं योगं च मम यो वेत्ति तत्त्वतः। सोऽविकम्पेन योगेन युज्यते नात्र संशयः।७।
अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्तते। इति मत्वा भजन्ते मां बुधा भावसमन्विताः।८।

etāṁ vibhūtiṁ yogaṁ ca mama yo vetti tattvataḥ so'vikampena yogena yujyate nātra saṁśayaḥ
ahaṁ sarvasya prabhavo mattaḥ sarvaṁ pravartate iti matvā bhajante māṁ budhā bhāvasamanvitāḥ
(Ch.10/7-8)

सूर्यो० ५।२६, सूर्या० ६।३७ आज भी कोई कार्य नहीं हो पाया।
प्रमोद कुमार जी एकमात्र सृजनात्मक आलोचक या लेखक हैं,
वे अनेक प्रकार के नामों का बोझ सिर पर लाद लेते हैं,
स्वयं पूर्ण पर सोचते हैं। वे अरुणसिंह के यहाँ गये -
व मिले नहीं उनके पिताजी मिले। पता लगा कि
श्री किशोरी प्रसाद सिंह पटना से वाराणसी आने वाले हैं।
मनु बाबू भी मेरे आने की बात कर चुके हैं।
प्रमोद कुमार का नाटक - नाटक की समस्या [illegible]
की तैयारी एवं उनके जीवन का तथा इतिहास तक
जाने की ओर है।
ये लोग इस तरह। स्वयं भी बंधे हैं जो शक्ति से
बाहर - अभाव तथा नाटक साज सज्जा के लिये।
बड़ा बनने [illegible] के लिये है।
मैं तो एक हितैषी की भावना से सोचता हूँ या [illegible]
आगे है। इस तरह के बंधनों से जीवन का विकास नहीं
होता।

x x x

श्री [illegible] को जनतंत्र [illegible] के लिये मैं बाबा [illegible]
गयी हुई। ये बाबूजी बड़े सिरफिरे हैं। इनको [illegible]
प्रोमाइस भी और रही है।
डा० योगेन्द्रनाथ के गाइड [illegible]
इन्होंने राजाजी किया था, कटे हुए थे।
सत्येन्द्रकुमार उन्होंने एक [illegible] गये थे।
उनके पचास हज़ार। मिला, [illegible]

'है'-पनको परमात्माका न मानकर संसारका मान लेते हैं—यही गलती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम्। कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च। ९।
तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम्। ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते।१०।

maccittā madgataprāṇā bodhayantaḥ parasparam kathayantaśca māṁ nityaṁ tuṣyanti ca ramanti ca
teṣāṁ satatayuktānāṁ bhajatāṁ prītipūrvakam dadāmi buddhiyogaṁ taṁ yena māmupayānti te
(Ch.10/9-10)

सूर्यो० ५।२६, सूर्या० ६।३६

आज प्रमोद कुमार तड़के चले गये। सोमवार तक। शिवमूर्ति सदके नाम कुलपति की स्वीकृति के काम रहने की बात याद आयी। पर अनन्तपदक की बात बोलते गये। पत्र/फल सबका सहना होगा। नमोनाथ किनारे लगेंगे। आज वैशाली के कुछ लोग अयोध्या होते हुए आये रहे हैं।

आज भी दूध-२४ रुपये। मिश्री पर रुपये तथा लिफाफा पोस्टकार्ड-१० रुपये का मँगाया। मूंगफली रुपये दही पान रुपये।

x x x

आज वर्षा पुनः दिन में आई। पानी पीके फेंकना भी जाना पड़ा। गैस चूल्हा बिगड़ा है, बनाने के लिये १०.३० रुपये तक लेगा।

आज फौजदार राम, रघुनाथ शर्मा तथा भट्टाचार्य को पोस्टकार्ड पत्र लिखे गये। मुकेश सिंह को इलाज हेतु पैसा दी गई।

जबतक अभिमान और स्वार्थ है, तबतक किसीके भी साथ प्रेम नहीं हो सकता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तेषामेवानुकम्पार्थमहमज्ञानजं तमः । नाशयाम्यात्मभावस्थो ज्ञानदीपेन भास्वता । ११ ।

अर्जुन उवाच

परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवान् । पुरुषं शाश्वतं दिव्यमादिदेवमजं विभुम् । १२ ।

teṣāmevānukampārthamahamajñānajaṁ tamaḥ nāśayāmyātmabhāvastho jñānadīpena bhāsvatā

arjuna uvāca

paraṁ brahma paraṁ dhāma pavitraṁ paramaṁ bhavān puruṣaṁ śāśvataṁ divyamādidevamajaṁ vibhum

(Ch.10/11-12)

सूर्यो० ५ । २७, सूर्या० ६ । ३५ **पुत्रदा एकादशीव्रत**

सिमाडू के एक शिक्षक भोलाराम सपत्नीक आज मठ में दीक्षा ग्रहण करने आये। विप्रोचित धर्मकार्य के इच्छुक हैं। उन्हें शुभकार्य के लिये उचित काम बता दिया। वे लौटकर कमच्छा शीश महल के पीछे कॉलोनी का लहुआ चौकीदार अपने गाँव के जोगेन्द्रराम के बने घर में ठहरे हैं। वहीं गये। श्री श्यामलाल जायसी को उपनयन काम के लिये मार्गदर्शन के लाया। बड़ी भूल हुई। अब वे बहुत कम केवल खीझते हैं। सायंकाल समझा दिया कि धर्मकार्य में श्रद्धा प्रेम एवं शान्ति संयम से काम लिया जाता है।

असत्का संग छोड़े बिना सत्संगका प्रत्यक्ष लाभ नहीं होता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आहुस्त्वामृषयः सर्वे देवर्षिर्नारदस्तथा। असितो देवलो व्यासः स्वयं चैव ब्रवीषि मे।१३।
सर्वमेतदृतं मन्ये यन्मां वदसि केशव। न हि ते भगवन्व्यक्तिं विदुर्देवा न दानवाः।१४।

āhustvāmṛṣayaḥ sarve devarṣirnāradastathā asito devalo vyāsaḥ svayaṁ caiva bravīṣi me
sarvametadṛtaṁ manye yanmāṁ vadasi keśava na hi te bhagavanvyaktiṁ vidurdevā na dānavāḥ
(Ch.10/13-14)

सूर्यो० ५।२७, सूर्या० ६।३४ — **स्वतन्त्रतादिवस**

आज [illegible] ज्ञात कि आस्ट्रेलिया सब की दीक्षा हुई।
हिमाचल का कोई कर्मकाण्ड न हो पाया पाये। न संकल्प कराया
न गौरी गणेश की पूजा हो सकी। थाली में पांच पैसे,
फूल अगर स्वच्छ अक्षत छिड़क दिया कि गौरी गणेश की पूजा
हो गई। न हवन एवं नीराजन भी नहीं करा सके।
उलटे रोटी के प्रश्न पर स्वामी जी का भक्तों को कटु वचन बोल
दिया।
अब पूजा के कार्यों में कमी इतनी भी बहुत है।
सायंकाल किशोरी रमण राय आनन्द दिनदास जी के
भी संन्यासियों के साथ आये।
उनके संबंधी सत्संगी हैं कुछ वेदान्त सत्संग की
एक कोठी (पुस्तिका) तैयार कर चुके हैं। उसका
संशोधन करवाना चाहते हैं।
इस संबंध में कई बातें हुई। वन के वापस गये।
उन्होंने पचास रुपये पूजा पर भोग राग किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम। भूतभावन भूतेश देववेव जगत्पते।१५।
वक्तुमर्हस्यशेषेण दिव्या ह्यात्मविभूतयः। याभिर्विभूतिभिर्लोकानिमांस्त्वं व्याप्य तिष्ठसि।१६।

svayamevātmanātmānaṁ vettha tvaṁ puruṣottama bhūtabhāvana bhūteśa devadeva jagatpate
vaktumarhasyaśeṣeṇa divyā hyātmavibhūtayaḥ yābhirvibhūtibhirlokānimāṁstvaṁ vyāpya tiṣṭhasi
(Ch.10/25-26)

सूर्यो० ५।२७, सूर्या० ६।३३ **शनिप्रदोष**

आज [illegible]-गंगौली के [illegible] राय के भाई [illegible] मठ में [illegible] के [illegible] आये। वे दो सप्ताह से अस्वस्थ हैं। उन्हें मठ की वस्तुस्थिति से अवगत कराया। उन्हें उदर विकार है। सिद्धगिरि बाग वाले बी०एन० त्रिपाठी वैद्य [illegible] [illegible] [illegible] का संकेत किया।
[illegible] [illegible] राय से [illegible] की प्रगति के कार्य में विशेष ध्यान देने को कहा। उन्हें [illegible] की [illegible] का प्रयोग करने तथा [illegible] के प्रयोग की सलाह दिया।
आज [illegible] के [illegible] [illegible] के [illegible] आये। उनको [illegible] [illegible] से उन्हें [illegible] [illegible] [illegible]।

श्रावण शुक्ल १४, रविवार, 17 AUG.

सूर्यो० ५।२८, सूर्या० ६।३२

व्रत-पूर्णिमा

आज [illegible] के नरेन्द्र कुमार राय [illegible] के साथ आये। उन्हें दीक्षा लेनी है। इसके पूर्व भी सुधाकर राय जी जो [illegible] राय के [illegible] के उच्च विद्यालय में शिक्षक हैं दीक्षा लेकर गये हैं। [illegible] उसी समय आने वाले थे किन्तु नहीं आ सके थे।
आज [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कर गये। उनकी पत्नी [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] का [illegible] [illegible] हो गया। [illegible] को [illegible] नहीं [illegible]।

दीक्षा की [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] से [illegible] हैं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। उन्हें [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कथं विद्यामहं योगिंस्त्वां सदा परिचिन्तयन्। केषु केषु च भावेषु चिन्त्योऽसि भगवन्मया। १७।
विस्तरेणात्मनो योगं विभूतिं च जनार्दन। भूयः कथय तृप्तिर्हि शृण्वतो नास्ति मेऽमृतम्। १८।

kathaṁ vidyāmahaṁ yogiṁstvāṁ sadā paricintayan keṣu keṣu ca bhāveṣu cintyo'si bhagavanmayā
vistareṇātmano yogaṁ vibhūtiṁ ca janārdana bhūyaḥ kathaya tṛptirhi śṛṇvato nāsti me'mṛtam
(Ch.10/17-18)

सूर्यो० ५। २८, सूर्या० ६। ३२ **पूर्णिमा, श्रावणीकर्म (यज्ञोपवीत-पूजन), रक्षाबन्धन (भद्रा-रहित)**

[illegible] : [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
और [illegible] थे।

दूसरोंके अहितसे अपना अहित और दूसरोंके हितसे अपना हित होता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

हन्त ते कथयिष्यामि दिव्या ह्यात्मविभूतयः । प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ नास्त्यन्तो विस्तरस्य मे । १९ ।
अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः । अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च । २० ।

śrībhagavānuvāca

hanta te kathayiṣyāmi divyā hyātmavibhūtayaḥ prādhānyataḥ kuruśreṣṭha nāstyanto vistarasya me
ahamātmā guḍākeśa sarvabhūtāśayasthitaḥ ahamādiśca madhyaṁ ca bhūtānāmanta eva ca

(Ch.10/19-20)

सूर्यो० ५ । २९, सूर्या० ६ । ३१ — आज विश्वनाथ चन्द्र त्रिपाठी की शिष्या सुमित्रा के
पुत्र अपनी माता के साथ आये। आज उनका यज्ञोपवीत संस्कार
का अनुष्ठान प्रारम्भ हुआ है जिसे [illegible] करवा
रहे हैं — कल पूर्णाहुति होगी। त्रिपाठी शङ्कराचार्य
[illegible] भी [illegible] रामेश्वर [illegible] पहले ही
अपनी पत्नी सहित दर्शनार्थ आये थे।
दोनों ने [illegible] की [illegible] प्रार्थना करते हैं
[illegible] होगी।

इस [illegible] अनुष्ठान में कुछ अनुभव हुआ — [illegible] अब
अर्ध विकास से हो गये हैं और [illegible] करते हैं, [illegible] हैं
[illegible] कह [illegible] कर देते हैं।

ठगनेमें दोष है, ठगे जानेमें दोष नहीं है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आदित्यानामहं विष्णुर्ज्योतिषां रविरंशुमान्। मरीचिर्मरुतामस्मि नक्षत्राणामहं शशी। २१।
वेदानां सामवेदोऽस्मि देवानामस्मि वासवः। इन्द्रियाणां मनश्चास्मि भूतानामस्मि चेतना। २२।

ādityānāmahaṁ viṣṇurjyotiṣāṁ raviraṁśumān marīcirmarutāmasmi nakṣatrāṇāmahaṁ śaśī
vedānāṁ sāmavedo'smi devānāmasmi vāsavaḥ indriyāṇāṁ manaścāsmi bhūtānāmasmi cetanā
(Ch.10/21-22)

सूर्यो० ५।२९, सूर्या० ६।३०

आज अपराह्न ४ बजे [illegible] के अनुष्ठान का [illegible] काम सम्पन्न हुआ। हरे राम आये हैं किन्तु प्रमोद का पता नहीं दे सके। ये दोनों बड़े स्वार्थी और कुटिल स्वभाव के युवक हैं। प्रमोद कुमार जैसे सज्जन एवं विनम्र के प्रतिकूल इन लोगों का स्वभाव क्या आवश्यक है।

x x x

इनका का कोई [illegible] विश्राम होने का ठिकाना नहीं था, तब तक कमलाकान्त शर्मा-गार्ड-पत्नी के साथ आ पहुँचे। उन्होंने मदद की। जाँच [illegible]। हिमालय [illegible] बड़े [illegible] चलते जा रहे हैं, उन्हें बहुत धन्यवाद कहा। पुनः कमलाकान्त जी को [illegible] में प्रमोद जी आ पहुँचे।

सब कुछ सकुशल सम्पन्न होगा। हिमालय [illegible] और [illegible] नहीं चाहते थे। समझा कर उन्हें [illegible] गया।

यही स्वभाव है जिसके कारण लोग [illegible] पंडित पुरोहित नहीं रखना चाहते।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रुद्राणां शङ्करश्चास्मि वित्तेशो यक्षरक्षसाम्। वसूनां पावकश्चास्मि मेरुः शिखरिणामहम्।२३।
पुरोधसां च मुख्यं मां विद्धि पार्थ बृहस्पतिम्। सेनानीनामहं स्कन्दः सरसामस्मि सागरः।२४।

rudrāṇāṁ śaṅkaraścāsmi vitteśo yakṣarakṣasām vasūnāṁ pāvakaścāsmi meruḥ śikhariṇāmaham
purodhasāṁ ca mukhyaṁ māṁ viddhi pārtha bṛhaspatim senānīnāmahaṁ skandaḥ sarasāmasmi sāgaraḥ
(Ch.10/23-24)

सूर्यो० ५।३०, सूर्या० ६।२८ — कज्जली तृतीया, श्रीगणेशचतुर्थीव्रत, बहुलाव्रत

आज विश्वनाथप्रसाद नवनाथपुर, अपने आये।
उन्हें ११११ रुपये दक्षिणा दी गई। किन्तु प्रसन्न
नहीं थे। एक सौ रुपये और पहले दिया गया था।
कपड़ा आदि - विधिवत भोज-फलाहार आदि पर
स्वभावसे उनका [illegible] खीझना छूटता
कहाँ है। मस्तिष्कमें पुनः उन्हें किसी कार्यालयमें
नियुक्त करना। इसका मनमें आ रहे किसे
उचित नहीं। अभी तक कलह और [illegible] मौसम ठीक
होना नहीं है।
अपराह्न। दिल्ली से - गोरखपुर नागरी के भक्त
श्री अनिरुद्ध राय जी आ पहुँचे। उनसे विविध
सामाजिक आध्यात्मिक बातें हुईं। उन्हें मैंने कुछ
पुस्तकें दीं। उनमें मुख्य 'गीता हृदयं', "एकचीर नत्याख्यान"
तथा 'भगवद्‌गीता जनमानस प्रतिष्ठान' सरस्वती
मेरा पुस्तक आत्मानन्द नीतिशतकं, दी गई। वे ५ बजे चले
गये तथा वे रसीदें छोड़ते गये।
मेरा अनिवार्य अनुरोध [illegible] का परिपालन [illegible]।

भगवान्‌के सिवाय कोई मेरा नहीं है—यह असली भक्ति है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महर्षीणां भृगुरहं गिरामस्म्येकमक्षरम् । यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि स्थावराणां हिमालयः । २५ ।
अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां देवर्षीणां च नारदः । गन्धर्वाणां चित्ररथः सिद्धानां कपिलो मुनिः । २६ ।

maharṣīṇāṁ bhṛgurahaṁ girāmasmyekamakṣaram yajñānāṁ japayajño'smi sthāvarāṇāṁ himālayaḥ
aśvatthaḥ sarvavṛkṣāṇāṁ devarṣīṇāṁ ca nāradaḥ gandharvāṇāṁ citrarathaḥ siddhānāṁ kapilo muniḥ
(Ch. 10/25-26)

सूर्यो० ५ । ३०, सूर्या० ६ । २८

आज अचानक [illegible] पाण्डेय के [illegible] आये
[illegible] मनोज [illegible] तथा पी.सी. सिंह के साथ आये।
उनके [illegible] किया और [illegible]
आप की [illegible] के लिये - [illegible] की
[illegible] गये।

इनके लिये [illegible] पाठकों के लिये
पत्र सम्पर्क किया। [illegible] हुई। [illegible] नारायण
कुछ स्पष्ट नहीं बताया चाहते। मैं [illegible] को [illegible]
[illegible] नारायण तो [illegible] साथ [illegible] के लिये
भी [illegible] हैं, [illegible] है।
[illegible] होता ही है, उनका
सरल [illegible] का निर्वाह
करता है। उनकी [illegible] उनके [illegible] तक तो
निभाती ही है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उच्चैःश्रवसमश्वानां विद्धि माममृतोद्भवम्। ऐरावतं गजेन्द्राणां नराणां च नराधिपम्।२७।
आयुधानामहं वज्रं धेनूनामस्मि कामधुक्। प्रजनश्चास्मि कन्दर्पः सर्पाणामस्मि वासुकिः।२८।

uccaiḥśravasamaśvānāṁ viddhi māmamṛtodbhavam airāvataṁ gajendrāṇāṁ narāṇāṁ ca narādhipam
āyudhānāmahaṁ vajraṁ dhenūnāmasmi kāmadhuk prajanaścāsmi kandarpaḥ sarpāṇāmasmi vāsukiḥ
(Ch.10/27-28)

सूर्यो० ५। ३१, सूर्या० ६। २७ — **चन्द्रषष्ठीव्रत, हलषष्ठी (ललहीछठ)**

आज मुन्ना- दही गुड़ उनके १२ रुपये दिया। ४० रुपये
प्रभा- [illegible] किलो काजू [illegible] के लिये दिया।

डाक्टर राम [illegible] आये। [illegible] हुआ। रसोई का [illegible] बना।
उन्हे ७० रुपये दिये गये। पांच रुपये कल की सेवा के लिये।

भाद्रपद कृष्ण ७, रविवार, 24 AUG.
सूर्यो० ५। ३१, सूर्या० ६। २६

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पवनः पवतामस्मि रामः शस्त्रभृतामहम् । झषाणां मकरश्चास्मि स्त्रोतसामस्मि जाह्नवी । ३१ ।
सर्गाणामादिरन्तश्च मध्यं चैवाहमर्जुन । अध्यात्मविद्या विद्यानां वादः प्रवदतामहम् । ३२ ।

pavanaḥ pavatāmasmi rāmaḥ śastrabhṛtāmaham jhaṣāṇāṁ makaraścāsmi srotasāmasmi jāhnavī
sargāṇāmādirantaśca madhyaṁ caivāhamarjuna adhyātmavidyā vidyānāṁ vādaḥ pravadatāmaham
(Ch.10/31-32)

सूर्यो० ५ । ३२, सूर्या० ६ । २४ — मतान्तरसे—श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रत (वैष्णव)

आज बहुत दिनोंके बाद - पी॰ रा॰ सिंह (पारसनाथ सिंह (सं)
देखवा। तथा स्थानीय न रखाती डा॰ आ गये। शंकर हरणका दीवार
दिया - रामपुर (देवकी केपास) सजातीय प्रेमाना हिय। रिंकु सिन्धि
आ गये। डाक्टरसाहब - डा॰ चन्द्रेश्वर मिश्र से मिलना चाहते थे।
रघुराज कुमार - सकलदू के आशय नहीं चले गये
आज भी रुपया बैंक से निकला नहीं। मेरा टाइप का काम
इस कोरही सुबह - निरपेक्ष संपादक का - एक ही का चाहे।
को धमकाया। वह डरते हैं। अगर उद्दण्ड दया के नाम पर आतंक
कुछ दिन टिका रहता है तथा स्थानकी मर्यादा को विरुद्ध आक्षेप
है। आज सबुदाना खाना खाकर रहे। रात को बाजरो रोटियां
भोजन किया। सिर में दर्द और गर्मी लगी है।
सत्संग भवन के भाषिकी मिल्ला सकते हैं। पैसों का अभाव है।

भोगी व्यक्ति रोगी होता है, दुःखी होता है और दुर्गतिमें जाता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अक्षराणामकारोऽस्मि द्वन्द्वः सामासिकस्य च । अहमेवाक्षयः कालो धाताहं विश्वतोमुखः । ३३ ।
मृत्युः सर्वहरश्चाहमुद्भवश्च भविष्यताम् । कीर्तिः श्रीर्वाक्च नारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा । ३४ ।

akṣarāṇāmakāro'smi dvandvaḥ sāmāsikasya ca ahamevākṣayaḥ kālo dhātāhaṁ viśvatomukhaḥ
mṛtyuḥ sarvaharaścāhamudbhavaśca bhavisyatām kīrtiḥ śrīrvākca nārīṇāṁ smṛtirmedhā dhṛtiḥ kṣamā
(Ch.10/33-34)

सूर्यो० ५ । ३३, सूर्या० ६ । २३

आज पहला [illegible] बैंक [illegible]
नंदजी के यहाँ छोड़े हैं। मिलकर कुशल समाचार के बाद
वापस आये। पोस्ट आफिस के सेविंग्स खाते से रुपया
२२५ निकाला गया। [illegible] नहीं जवाब देती। [illegible]
नहीं। [illegible] रखी है गयी है. मार पड़ती है [illegible] को [illegible]
जाता है। सक्सेना रुपये रिक्शा वाले के, [illegible] में [illegible]
५० रुपये। मैंने भी जल्दी की [illegible]
पचीस रुपये [illegible] भूजा। दूध का [illegible]
[illegible] आज का लेकर [illegible] दिया। सभी २२५ रुपया का
हिसाब पूरा हो गया। कैसे यह [illegible]
पता नहीं।
[illegible] के [illegible] प्रसाद सिंह मुजफ्फरपुर वापस
गये। महापुरुष, समाज को [illegible] देने वाले। [illegible]
राजनीतिज्ञों में से हैं. विचारक रहे। [illegible]
पर [illegible] और [illegible]

भगवान्से विमुख होते ही जीव अनाथ हो जाता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम्। मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः। ३५।
द्यूतं छलयतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम्। जयोऽस्मि व्यवसायोऽस्मि सत्त्वं सत्त्ववतामहम्। ३६।

bṛhatsāma tathā sāmnāṁ gāyatrī chandasāmaham māsānāṁ mārgaśīrṣo'hamṛtūnāṁ kusumākaraḥ
dyūtaṁ chalayatāmasmi tejastejasvināmaham jayo'smi vyavasāyo'smi sattvaṁ sattvavatāmaham
(Ch.10/35-36)

सूर्यो० ५।३३, सूर्या० ६।२२ — **अजा एकादशीव्रत**

आज भी डाक्टर से ज्वर नहीं उतरा। "Healing Musings" की प्रति श्री भुवनेश्वर सिंह ने भेजी। आज रामजी के श्री कृष्णबिहारी शर्मा को विस्तृत पत्र लिखकर तैयार किया। उसमें गीता हृदय की स्थापना, उनके पिताजी की स्मृति में करना चाहते और शास्त्र साहित्य एवं धर्म कार्य ब्राह्मण-भोजनादि चिकित्सा आदि उनके प्रकाशित करने का अनुरोध है। पत्र कल रजिस्टर्ड पैकेट के डाला जायेगा। आज भी ज्वर नहीं उतरा है मैं। बड़ी कठिनाइयों से घिरा हूं। चिन्ता बनी रहती है कि राजगुरुमठ का कार्य अधूरा न रह जाय। सत्संग भवन का निर्माण भी अभी पैसों के अभाव में अधूरा ही है। अभी लगभग चालीस हजार रुपये लगाने पर योजना पूरी होगी। बृहद् उद्घाटन समारोह का आयोजन किया जायेगा। स्थानीय महाविद्यालय आदि भी दूर हैं। जनता भी नहीं जानते न कोई त्वरित प्रयास करते हैं।

आज डाक द्वारा भोजपुरी कविता "भोजपुरी-साहित्य" के अंक में आरा से प्रकाशित - मिली, साथ ही पत्र पत्रिका, स्मारिका आदि [illegible] मिली। "[illegible]" नया पत्र और स्मारिका आदि कथाओं की रजिस्टर्ड प्रति तैयार कराई गई जो भी वशिष्ठ मुनि आश्रम को प्रदान की जायेगी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि पाण्डवानां धनञ्जयः। मुनीनामप्यहं व्यासः कवीनामुशना कविः। ३७।
दण्डो दमयतामस्मि नीतिरस्मि जिगीषताम्। मौनं चैवास्मि गुह्यानां ज्ञानं ज्ञानवतामहम्। ३८।

vṛṣṇīnāṁ vāsudevo'smi pāṇḍavānāṁ dhanañjayaḥ munīnāmapyahaṁ vyāsaḥ kavīnāmuśanā kaviḥ
daṇḍo damayatāmasmi nītirasmi jigīṣatām maunaṁ caivāsmi guhyānāṁ jñānaṁ jñānavatāmaham
(Ch.10/37-38)

सूर्यो० ५।३४, सूर्या० ६।२१

आज भोजपुरी कविता - 'कइसे फागु मनैं...' तथा तीन कथाओं की फोटोस्टेट कॉपी तैयार कराई गई। आज दयाल चौधरी तथा आनन्द चौधरी को पत्र लिखकर तैयार किया।
आश्रम की सफाई तथा विभिन्न ज्योतिष संबंधी कार्यों के लिये।

लेनेकी इच्छावाला सदा दरिद्र ही रहता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यच्चापि सर्वभूतानां बीजं तदहमर्जुन। न तदस्ति विना यत्स्यान्मया भूतं चराचरम्।३९।
नान्तोऽस्ति मम दिव्यानां विभूतीनां परन्तप। एष तूद्देशतः प्रोक्तो विभूतेर्विस्तरो मया।४०।

yaccāpi sarvabhūtānāṁ bījaṁ tadahamarjuna na tadasti vinā yatsyānmayā bhūtaṁ carācaram
nānto'sti mama divyānāṁ vibhūtīnāṁ parantapa eṣa tūddeśataḥ prokto vibhūtervistaro mayā
(Ch.10/39-40)

सूर्यो० ५।३४, सूर्या० ६।२० **शनिप्रदोष**

आज राँची सुबोध ग्रन्थमाला कार्यालय ने लोगों को पत्र लिखा था उसकी रजिस्ट्री हुई। डाकविभाग खाते से 130 रुपये फुटकर कामों के लिये निकाले। अन्य पत्र डाले गये। भोजपुरी [illegible] - सम्मेलन को पत्र लिखकर तैयार किया। मन निर्माण कार्य करने से खिन्न है। समस्या यह होती है कि सम्पन्न कैसे हो। शरीर की क्षमता घटती है कार्य कोई अधूरा न रहे। आगे के उत्तराधिकारी तत्काल कोई सक्षम नहीं दिखते।

भाद्रपद कृष्ण १४, रविवार, 31 AUG.

सूर्यो० ५।३५, सूर्या० ६।१९

आज बड़े परिश्रम के बाद अपनी संचिकाओं से ढूँढकर पूर्व प्रकाशित व फुटकर भोजपुरी कविताएँ ढूँढ निकाले। कब की तो प्रकाशित 'भोजपुरी साहित्य' - डा. [illegible] पाठक संपादित का उपेक्षित अंक मिला। इसकी 'कुसुम' का [illegible] दिया। [illegible] की हस्तलिखित प्रति मिली। फोटो प्रति [illegible] के लिए [illegible] को कहा। श्री वशिष्ठ मुनि ओझा जी ने फुटकर कविताएँ चाहते हैं। कुछ कहानियों की भी फोटोस्टेट प्रति करवाई गई। 'म्युजिकल सौंग' - बनारसी [illegible] से 'नया [illegible]'।

आज भी कोई वाहन नहीं आया। प्रमोद कुमार बुखार से पीड़ित हैं।

मिश्री मठ्ठा [illegible] के लिये पैसे दिये। खर्च बहुत हो जाता है। [illegible] जा रही है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा। तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोंऽशसम्भवम्।४१।
अथवा बहुनैतेन किं ज्ञातेन तवार्जुन। विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत्।४२।

yadyadvibhūtimatsattvaṁ śrīmadūrjitameva vā tattadevāvagaccha tvaṁ mama tejoṁ'śasambhavam

athavā bahunaitena kiṁ jñātena tavārjuna viṣṭabhyāhamidaṁ kṛtsnamekāṁśena sthito jagat

(Ch.10/41-42)

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे विभूतियोगो नाम दशमोऽध्यायः।१०।

सूर्यो० ५।३५, सूर्या० ६।१८ — **सोमवती कुशोत्पाटिनी अमावास्या**

आज सहसा विद्यानन्द-दिल्ली से आ पहुंचे।
[illegible] - [illegible] [illegible] के ध्वंस
पांच पाला [illegible] से पांच हजार रुपये जुटवा देंगे।
ऐसी सूचना विद्यानन्द ने दी।
वे अपने कार्य व्यवसाय के निमित्त गोरखपुर गये।
लौटते पुनः भेंट करेंगे।
२० रुपये नारायण को देकर आधा किलो घी [illegible]
और मिश्री [illegible] मंगाया।
आज सब्जी ६ रु. का भण्डार से लिया। [illegible] को
मंगाया १० रुपये में १२५ ग्राम आया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथैकादशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

मदनुग्रहाय परमं गुह्यमध्यात्मसञ्ज्ञितम्। यत्त्वयोक्तं वचस्तेन मोहोऽयं विगतो मम। १।
भवाप्ययौ हि भूतानां श्रुतौ विस्तरशो मया। त्वत्तः कमलपत्राक्ष माहात्म्यमपि चाव्ययम्। २।

arjuna uvāca

madanugrahāya paramaṁ guhyamadhyātmasañjñitam yattvayoktaṁ vacastena moho'yaṁ vigato mama
bhavāpyayau hi bhūtānāṁ śrutau vistaraśo mayā tvattaḥ kamalapatrākṣa māhātmyamapi cāvyayam

(Ch.11/1-2)

सूर्यो० ५।३६, सूर्या० ६।१६ — छोड़ा आया किन्तु मिश्री नहीं आ सकी।
द्वय के लिये पत्र इस रूप में दिये। [illegible]
[illegible] को पत्र पोस्टकार्ड लिखा। इसके [illegible] तथा
कुछ श्लोकों के विषय में जो [illegible] निबंध
के भागवत में [illegible] में कहे हैं। इसी में [illegible] भी
भी [illegible] कहे हैं उन्हें मैंने ही पूर्वकाल में किया था।

× × ×

"तुलसी पूरब के पाप से, हरि चर्चा न सुहाय।
जैसे ज्वर के वेग से, भूख विदा हो जाय॥

× × ×

पापवन्त कर सहज सुभाऊ। भजन मोर तेहि भाव न काऊ॥
जौं पै दुष्ट हृदय सोइ होई। मोरे सनमुख आव कि सोई।

× × ×

"आहार शुद्धौ सत्त्व शुद्धिः॥
सत्त्व शुद्धौ ध्रुवा स्मृतिः॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एवमेतद्यथात्थ त्वमात्मानं परमेश्वर। द्रष्टुमिच्छामि ते रूपमैश्वरं पुरुषोत्तम।३।
मन्यसे यदि तच्छक्यं मया द्रष्टुमिति प्रभो। योगेश्वर ततो मे त्वं दर्शयात्मानमव्ययम्।४।

evametadyathāttha tvamātmānaṁ parameśvara draṣṭumicchāmi te rūpamaiśvaraṁ puruṣottama
manyase yadi tacchakyaṁ mayā draṣṭumiti prabho yogeśvara tato me tvaṁ darśayātmānamavyayam
(Ch.11/3-4)

सूर्यो० ५।३६, सूर्या० ६।१५

" ज्ञानभोग व्यवस्थितिः - एक ज्ञान होता है, एक भोग होता है।
तत्व साक्षात्कार को ज्ञान कहते हैं। तत्व

भगवत्प्राप्ति का सरल उपाय क्रिया नहीं है, प्रत्युत लगन है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

पश्य मे पार्थ रूपाणि शतशोऽथ सहस्रशः। नानाविधानि दिव्यानि नानावर्णाकृतीनि च।५।
पश्यादित्यान्वसून्रुद्रानश्विनौ मरुतस्तथा। बहून्यदृष्टपूर्वाणि पश्याश्चर्याणि भारत।६।

śrībhagavānuvāca

paśya me pārtha rūpāṇi śataśo'tha sahasraśaḥ nānāvidhāni divyāni nānāvarṇākṛtīni ca
paśyādityānvasūnrudrānaśvinau marutastathā bahūnyadṛṣṭapūrvāṇi paśyāścaryāṇi bhārata

(Ch.11/5-6)

सूर्यो० ५।३७, सूर्या० ६।१४

आज रातमें भोजन कालमें कमलानगर के कमरे में ब्रह्मचारी निगमचैतन्य (आरण्यकादि) किराये कैसेट कटुवचन कहकर प्रमोद तथा परिवारके लोगों को बोलने लगे। बहुत चिढ़ गये भी, सम्भवतः [illegible] उत्तेजित हुए। कहा, मेरा उनका विरोध लगना ठीक भी, कटु वचन बोलने से कौन रहेगा। वे लोग श्रद्धापूर्वक सेवा करते हैं। और किसीका कोई नहीं। भैया भी आजके दिन कटुवचन बोलनेपर भी [illegible] (लोग) नाराज हो जाते भी हैं।

आज देहरादून से होतेन्द्रनाथ राय का अन्तर्देशीय पत्र आया उसका विस्तृत उत्तर लिखकर तत्काल भेज दिया।

"बौद्धदर्शन एवं अन्य भारतीय दर्शन" डा० भरतसिंह उपाध्याय के प्रथम भाग को पढ़ रहे हैं।

×

"आर्तस्य भेषजं देयं, परिश्रान्तस्य चासनम्।
तृषितस्य च पानीयं, क्षुधितस्य च भोजनम्॥"

'येन केन विधि दीन्ह दान करै कल्यान।'

मनुष्य स्वभाव से परिग्रही होता है। इस आदतकी बुरी आदत पड़ी है। परिग्रह से मुक्त होने का यही उपाय है कि संचित धन को परोपकार में खर्च करने के लिये तैयार हो जाओ।

× × जिसमें आत्मा अनात्मा का विचार हो, ऐसे अध्यात्मशास्त्र के अध्ययन को 'स्वाध्याय' कहते हैं। उपन्यास और अखबार पढ़ना स्वाध्याय नहीं है। मनसैवेन्द्रियग्रामे कायेन च 'तप' उच्यते। मन और इन्द्रियों की एकाग्रता का नाम तप है।

साधन स्वयंसे होता है, मन-बुद्धिसे नहीं।

सीधेपन व सरलता का नाम 'आर्जव' है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इहैकस्थं जगत्कृत्स्नं पश्याद्य सचराचरम्। मम देहे गुडाकेश यच्चान्यद्द्रष्टुमिच्छसि।७।
न तु मां शक्यसे द्रष्टुमनेनैव स्वचक्षुषा। दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम्।८।

ihaikasthaṁ jagatkṛtsnaṁ paśyādya sacarācaram mama dehe guḍākeśa yaccānyaddraṣṭumicchasi
na tu māṁ śakyase draṣṭumanenaiva svacakṣuṣā divyaṁ dadāmi te cakṣuḥ paśya me yogamaiśvaram
(Ch.11/7-8)

सूर्यो० ५।३७, सूर्या० ६।१३ | **हरितालिकाव्रत, श्रीगणेशचतुर्थीव्रत (चन्द्रदर्शन-निषिद्ध)**

आज प्रातः ब्रह्मचारीको आरम्भ करके मनाया-समझाया।
सौभाग्यपुर प्रभातवेला रखने से - ३००० रुपये दैनिक खर्च आदिके लिये उतारा।
आज देहरादून से सुरेन्द्रनाथ रायका मैत्री पत्र लिखा पत्र(?)
प्राप्त किया। सर्वोगाकार ब्रह्मचारी का गंभीर [illegible]
ऐसे इन। सबका सहयोग ही सर्वजीवहित को [illegible]
सकते हैं। आज हरितालिकाव्रत किया था।
दो दिनों से जल नहीं जाता - नारायण बाहर से ला कर
लाते हैं।

× × ×

"मनस्येकं वचस्येकं कर्मण्येकं महात्मनाम्।
मनस्यन्यत् वचस्यन्यत् कर्मण्यन्यत् दुरात्मनाम्॥"

'सत्य प्रतिष्ठायां क्रियाफलाश्रयत्वम्'
सत्य अनुष्ठान करने में प्रतिष्ठित हो जाय तो उसे कुछ
करना नहीं पड़ेगा।

'सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा'
यह आत्मा सत्य भाषण से प्राप्त होता है।
प्रयत्नपूर्वक संग्रह किये हुए पदार्थ का परोपकार में खर्च करना
त्याग है।

यदि जानना ही हो तो अविनाशीको जानो, विनाशीको जाननेसे क्या लाभ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सञ्जय उवाच

एवमुक्त्वा ततो राजन्महायोगेश्वरो हरिः । दर्शयामास पार्थाय परमं रूपमैश्वरम् । ९ ।
अनेकवक्त्रनयनमनेकाद्भुतदर्शनम् । अनेकदिव्याभरणं दिव्यानेकोद्यतायुधम् । १० ।

sañjaya uvāca

evamuktvā tato rājanmahāyogeśvaro hariḥ darśayāmāsa pārthāya paramaṁ rūpamaiśvaram
anekavaktranayanamanekādbhutadarśanam anekadivyābharaṇaṁ divyānekodyatāyudham

(Ch.11/9-10)

सूर्यो० ५।३७, सूर्या० ६।१२

आज पं० कैलाशपति मिश्र, भारतीय जनता पार्टी के नेता एवं अपने [illegible] को उनकी सहायता के सम्बन्ध में डा० [illegible] ठाकुर [illegible] और [illegible] के सम्बन्ध में पत्र लिखा। [illegible] इसी उद्देश्य से इस सम्बन्ध में डा० स्वामीनाथ [illegible] को भी विस्तृत पत्र लिखा। [illegible] पटना [illegible] आध्यात्मिक पते से लिखा।

शरीर, वाणी और मन से किसी भी प्राणी को पीड़ा न पहुँचाना अहिंसा है।

भाद्रपद शुक्ल ५, रविवार, 7 SEPT.

सूर्यो० ५।३८, सूर्या० ६।११

ऋषिपञ्चमीव्रत

असत्य और मिथ्या में अन्तर है। जो तीनों काल में कभी दीखता ही नहीं, उसे असत्य कहते हैं। वन्ध्यापुत्र असत्य है। शंकराचार्य जगत् को वन्ध्यापुत्र की तरह असत्य नहीं मानते। शंकराचार्य जगत् को सद्असद् विलक्षण अनिर्वचनीय मानते हैं।

आज श्री वशिष्ठ मुनि ओझा जी आये। भोजपुरी की दो कविताएँ, जो [illegible] सामग्री ले गये। उसी समय टेलीफोन में [illegible] मेरे मित्र मिश्र जी आये, स्वदेश [illegible] तिवारी पत्नी सहित आये। देर तक सत्संग होता रहा। टेलीफोन का प्रयत्न [illegible] किया गया। तिवारी जी ने [illegible] दो [illegible] दिए।

साधना की पराकाष्ठा ही निष्ठा कहलाती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिव्यमाल्याम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनम् । सर्वाश्चर्यमयं देवमनन्तं विश्वतोमुखम् ।११।
दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता । यदि भाः सदृशी सा स्याद्भासस्तस्य महात्मनः ।१२।

divyamālyāmbaradharaṁ divyagandhānulepanam sarvāścaryamayaṁ devamanantaṁ viśvatomukham
divi sūryasahasrasya bhavedyugapadutthitā yadi bhāḥ sadṛśī sā syādbhāsastasya mahātmanaḥ
(Ch.11/11-12)

सूर्यो० ५।३८, सूर्या० ६।१० — **लोलार्कषष्ठी**

सत्त्व का अर्थ अन्तःकरण, स्वभाव अर्थात् तात्पर्य पूर्वजन्म का संस्कार समुदाय है। अन्तःकरण में ही संस्कार है, जो स्वभाव रूप से कहा जा रहा है। संस्कार के पिण्डीभूत स्वरूप को स्वभाव कहते हैं। वह अन्तःकरण में ही तो रहता है।

x x x

किसी परिस्थिति में शास्त्रविधि का त्याग हो भी जाय, वह क्षम्य है किन्तु श्रद्धा का अभाव होगा तो कभी भी क्षम्य नहीं है। ऐसा कार्य सफल नहीं हो सकता।

सामान्यतः विश्वास को लोग श्रद्धा समझते हैं, वस्तुतः विश्वास और श्रद्धा में भारी अन्तर है। विश्वास में स्वार्थ है, श्रद्धा में स्नेह है।

x x x

x आध्यात्मिक साधना में सहायता देनेवाली बुद्धि का नाम सत्त्व है।

परमात्मा की प्राप्ति के उद्देश्य से किया हुआ कर्म सत्कर्म है।

निरभिमान, फलाकांक्षा न रखते हुए कर्म किया जा रहा है। ऐसे कर्म के लिये 'सत्' शब्द का प्रयोग होता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तत्रैकस्थं जगत्कृत्स्नं प्रविभक्तमनेकधा। अपश्यद्देवदेवस्य शरीरे पाण्डवस्तदा।१३।
ततः स विस्मयाविष्टो हृष्टरोमा धनञ्जयः। प्रणम्य शिरसा देवं कृताञ्जलिरभाषत।१४।

tatraikastham jagatkṛtsnaṁ pravibhaktamanekadhā apaśyaddevadevasya śarīre pāṇḍavastadā
tataḥ sa vismayāviṣṭo hṛṣṭaromā dhanañjayaḥ praṇamya śirasā devaṁ kṛtāñjalirabhāṣata
(Ch.11/13-14)

सूर्यो० ५।३९, सूर्या० ६।१

आज नई दिल्ली पर जवाहर मि[illegible] [illegible] का काम हुआ। [illegible] मंगलपुर से आ पहुँचे। [illegible] लिये। किन्तु नहीं। कमठ और गुरु भाई तो हैं किन्तु हैं बड़े लोभी, स्वार्थी और क्रोधी। मैंने उनसे [illegible] आदि पुस्तकों के लिये पूछना उचित नहीं समझा। ऐसे व्यक्ति से सावधान रहना चाहिये। उनका संबंध मधुर से कटु क्यों करें?

आज वंशनारायण की धर्मपत्नी [illegible] सिंह की पत्नी [illegible] में भर्ती हुई। पेट में दर्द है। पथरी बताया जा रहा है, संभवतः ऑपरेशन होगा। चालीस रुपये कलम मूँज-हल आदि के लिये दिया।

आज मुजफ्फरपुर से श्री बैजनाथ प्रसाद सिंह-प्रबन्धक एवं अधिवक्ता का पत्र मिला, जो मेरे प्रेषित पत्र का उत्तर-सा है। इसकी फोटो स्टेट प्रति - मन्नाबाबू को सौंपनी होगी कि वे समुचित कार्रवाई करें।

महाकवि श्री हर्ष ने 'नैषधीयचरित' में भगवान बुद्ध को 'अद्वयवादी' कहा है। (२१।८८)।

शरणागति मन-बुद्धिसे नहीं होती, प्रत्युत स्वयंसे होती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्जुन उवाच

पश्यामि देवांस्तव देव देहे सर्वांस्तथा भूतविशेषसङ्घान्। ब्रह्माणमीशं कमलासनस्थमृषींश्च सर्वानुरगांश्च दिव्यान्।१५।
अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रं पश्यामि त्वां सर्वतोऽनन्तरूपम्। नान्तं न मध्यं न पुनस्तवादिं पश्यामि विश्वेश्वर विश्वरूप।१६।

arjuna uvāca

paśyāmi devāṁstava deva dehe sarvāṁstathā bhūtaviśeṣasaṅghān brahmāṇamīśaṁ kamalāsanasthamṛṣīṁśca sarvānuragāṁśca divyān
anekabāhūdaravaktranetraṁ paśyāmi tvāṁ sarvato'nantarūpam nāntaṁ na madhyaṁ na punastavādiṁ paśyāmi viśveśvara viśvarūpa
(Ch.11/15-16)

सूर्यो० ५।३९, सूर्या० ६।८ — **श्रीराधाष्टमी**

श्री हियालाल चौधरी आज मिले। वे आते हैं तो व्यग्रता बढ़ जाती है,
वे अत्यन्त झनक-पटक वाले विक्षिप्त मानस के हैं।

मनुष्यको कर्मोंका त्याग नहीं करना है, प्रत्युत कामनाका त्याग करना है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रूपं महत्ते बहुवक्त्रनेत्रं महाबाहो बहुबाहूरुपादम् । बहूदरं बहुदंष्ट्राकरालं दृष्ट्वा लोकाः प्रव्यथितास्तथाहम् ।२३।
नभःस्पृशं दीप्तमनेकवर्णं व्यात्ताननं दीप्तविशालनेत्रम् । दृष्ट्वा हि त्वां प्रव्यथितान्तरात्मा धृतिं न विन्दामि शमं च विष्णो ।२४।

rūpaṁ mahatte bahuvaktranetraṁ mahābāho bahubāhūrupādam bahūdaraṁ bahudaṁṣṭrākarālaṁ dṛṣṭvā lokāḥ pravyathitāstathāham
nabhaḥspṛśaṁ dīptamanekavarṇaṁ vyāttānanaṁ dīptaviśālanetram dṛṣṭvā hi tvāṁ pravyathitāntarātmā dhṛtiṁ na vindāmi śamaṁ ca viṣṇo
(Ch.11/23-24)

सूर्यो० ५।४१, सूर्या० ६।२ — **श्रीअनन्तचतुर्दशीव्रत**

आज अनंत चतुर्दशी व्रत - उपवास [illegible] करके
ठाकुर [illegible] से निकालकर [illegible] के लिये प्रसाद कर दिया।
शरीर खांसी-जुकाम से पीड़ित सा है।

आप भगवान्‌को नहीं देखते, पर भगवान् आपको निरन्तर देख रहे हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दंष्ट्राकरालानि च ते मुखानि दृष्ट्वैव कालानलसन्निभानि । दिशो न जाने न लभे च शर्म प्रसीद देवेश जगन्निवास।२५।
अमी च त्वां धृतराष्ट्रस्य पुत्राः सर्वे सहैवावनिपालसङ्घैः। भीष्मो द्रोणः सूतपुत्रस्तथासौ सहास्मदीयैरपि योधमुख्यैः।२६।

daṁṣṭrākarālāni ca te mukhāni dṛṣṭvaiva kālānalasannibhāni diśo na jāne na labhe ca śarma prasīda deveśa jagannivāsa
amī ca tvāṁ dhṛtarāṣṭrasya putrāḥ sarve sahaivāvanipālasaṅghaiḥ bhīṣmo droṇaḥ sūtaputrastathāsau sahāsmadīyairapi yodhamukhyaiḥ

(Ch.11/25-26)

सूर्यो० ५।४१, सूर्या० ६।१ — **पूर्णिमा, महालयारम्भ, पूर्णिमा-श्राद्ध, चन्द्र-ग्रहण**

आज ग्रहण है। न्यास-समिति की बैठक बुलाई गई थी। एक भी सदस्य नहीं आये। दिल्ली-विभाग के अन्य लोग स्नानार्थ आये। [illegible] लोगों के [illegible]। [illegible] बना। विनयमोहनदास के गोविन्द कुछ परेशान चल रहे हैं। लोग इनको दिवालिया भी कहते हैं। उनका कुछ [illegible] करना उचित नहीं समझा। वे भी एक रहे हैं।
सबेरे मैं जप किया। रात में स्नान किया। मैं दिनभर बिस्तरे पर पड़ा रहा।
स्वामी श्यामानन्द गिरिजी का पत्र - ऋषिकेश से प्राप्त हुआ।

रो. डेरा इंगर के डा० रामजी सिंह प्रसिद्ध लेखक, चिन्तक सर्वोदयी - राजघाट सर्वसेवासंघ में रहनेवाले - सहसा आये। उनसे बहुविध बातें हुईं। 'वृन्दावन' मठ का भवन देखकर बहुत प्रभावित हुए। रिंग-रोड से उसके प्रवेश-मार्ग की व्यवस्था करने का जोरदार आश्वासन देकर गये। उन्हें वृन्दावन पत्रिका की प्रति भेंट की गई।

चरित्रकी सुन्दरता ही असली सुन्दरता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वक्त्राणि ते त्वरमाणा विशन्ति दंष्ट्राकरालानि भयानकानि। केचिद्विलग्ना दशनान्तरेषु सन्दृश्यन्ते चूर्णितैरुत्तमाङ्गैः।२७।
यथा नदीनां बहवोऽम्बुवेगाः समुद्रमेवाभिमुखा द्रवन्ति। तथा तवामी नरलोकवीरा विशन्ति वक्त्राण्यभिविज्वलन्ति।२८।
यथा प्रदीप्तं ज्वलनं पतङ्गा विशन्ति नाशाय समृद्धवेगाः। तथैव नाशाय विशन्ति लोकास्तवापि वक्त्राणि समृद्धवेगाः।२९।

vaktrāṇi te tvaramāṇā viśanti daṁṣṭrākarālāni bhayānakāni kecidvilagnā daśanāntareṣu sandṛśyante cūrṇitairuttamāṅgaiḥ
yathā nadīnāṁ bahavo'mbuvegāḥ samudramevābhimukhā dravanti tathā tavāmī naralokavīrā viśanti vaktrāṇyabhivijvalanti
yathā pradīptaṁ jvalanaṁ pataṅgā viśanti nāśāya samṛddhavegāḥ tathaiva nāśāya viśanti lokāstavāpi vaktrāṇi samṛddhavegāḥ
(Ch.11/27—29)

सूर्यो० ५।४२, सूर्या० ६।०० **श्रीविश्वकर्मापूजा, प्रतिपदा-श्राद्ध**

आज स्वामी हरिदर्शनानंद जी अचानक आ गये।
चिन्तित हैं। इन्हें डाक्टर लोग को स्मरण के केन्द्र का
ठीक पता नहीं। जहाँ वह मोहनपुर पड़े रहते हैं।
स्वामी रामेश्वरानंद आये और अपने प्रकाशन के भेंट गये।

आज राजपुर के एक ब्रह्मचारी जो देवप्रयाग वालों से
स्वामी श्यामानंद सरस्वती से ब्रह्मचारी दीक्षा लेकर अब
संन्यास दीक्षा की कामना से आये हैं। उनसे पिछला पूर्वा-
श्रम की बातें होती रहीं। भदैनी के लोग उन्हें मदद देते हैं।
वे घर वापस जा रहे हैं किन्तु सावधान हैं। मैंने उन्हें सब परिस्थितियों से
समझाकर संन्यास देने की स्वीकृति दे दी। किन्तु कार्तिक
अगहन में और वाराणसी में। कारण जानने के पूर्व उनको
का समाधान नहीं पाया।

दोपहर तक भोजन करके विश्वविद्यालय के [illegible] कार्यक्रम
जाती रहती ट्रेनें। कल १८५ रुपये मिले। १०० रुपये
धर्मानन्द पोद्दार के राजमन्दिर दे गये। [illegible]
में कौन। स्वदेश, [illegible] की पत्नी आई। वन्दे
भारत के प्रमोद से कुछ किताबें [illegible] के बाबत गईं।
पता लगाने कुमार के लिये दिया। मैंने कुल ५२२ रुपये
मनोजकुमार के पास जमा के लिये दे दिया।

रुपयोंको सबसे बढ़िया मानना बुद्धि भ्रष्ट होनेका लक्षण है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लेलिह्यसे ग्रसमानः समन्ताल्लोकान्समग्रान्वदनैर्ज्वलद्भिः। तैजोभिरापूर्य जगत्समग्रं भासस्तवोग्राः प्रतपन्ति विष्णो।३०।
आख्याहि मे को भवानुग्ररूपो नमोऽस्तु ते देववर प्रसीद। विज्ञातुमिच्छामि भवन्तमाद्यं न हि प्रजानामि तव प्रवृत्तिम्।३१।

श्रीभगवानुवाच

कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्तः। ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः।३२।

lelihyase grasamānaḥ samantāllokānsamagrānvadanairjvaladbhiḥ tejobhirāpūrya jagatsamagraṁ bhāsastavogrāḥ pratapanti viṣṇo
ākhyāhi me ko bhavānugrarūpo namo'stu te devavara prasīda vijñātumicchāmi bhavantamādyaṁ na hi prajānāmi tava pravṛttim

śrībhagavānuvāca

kālo'smi lokakṣayakṛtpravṛddho lokānsamāhartumiha pravṛttaḥ ṛte'pi tvāṁ na bhaviṣyanti sarve ye'vasthitāḥ pratyanīkeṣu yodhāḥ

(Ch.11/30—32)

सूर्यो० ५।४२, सूर्या० ५।५८ — **द्वितीया-श्राद्ध**

आज दिनेश दीक्षित का पत्नी भोजन किया।
प्रमोद कुमार नायक सपरिवार क्रुद्ध हो रहे हैं। मैं उनकी जमीन की कमी के
माप करके इन लोगों के लिये समर्पित करके योगक्षेम करता
हूँ। किन्तु इन्हें स्वार्थ के अतिरिक्त इसका कोई मान नहीं।
आज स्वामी विमलेन्द्र गिरि के पत्र का उत्तर लिखा।
इलाज आया। औषधि लिया, दो हजार रुपये और दिल्ली
भगवद्भक्त के लिये दिया। दो हजार रुपये देना चाहता था
परन्तु पैसे नहीं रहने से दे नहीं सका। भेजता हूँ, उसकी
इच्छा था। आज बिजली भी दिन भर नहीं रही।
लिखने का सोर्स कोई ठीक न होने से लगा था।

स्वामी विमलेन्द्र गिरि का पत्र छूट गया।
सैलेन्द्र कुमार आज भी अपनी पत्नी सहित आ गए जब के गृह पर रह
रहे हैं। सारनाथ घूमने दर्शन को लिये गये।

याद करो तो भगवान्‌को याद करो, काम करो तो सेवा करो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व जित्वा शत्रून्भुङ्क्ष्व राज्यं समृद्धम्। मयैवैते निहताः पूर्वमेव निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्।३३।
द्रोणं च भीष्मं च जयद्रथं च कर्णं तथान्यानपि योधवीरान्। मया हतांस्त्वं जहि मा व्यथिष्ठा युध्यस्व जेतासि रणे सपत्नान्।३४।

सञ्जय उवाच

एतच्छ्रुत्वा वचनं केशवस्य कृताञ्जलिर्वेपमानः किरीटी। नमस्कृत्वा भूय एवाह कृष्णं सगद्गदं भीतभीतः प्रणम्य।३५।

tasmāttvamuttiṣṭha yaśo labhasva jitvā śatrūnbhuṅkṣva rājyaṁ samṛddham mayaivaite nihatāḥ pūrvameva nimittamātraṁ bhava savyasācin
droṇaṁ ca bhīṣmaṁ ca jayadrathaṁ ca karṇaṁ tathānyānapi yodhavīrān mayā hatāṁstvaṁ jahi mā vyathiṣṭhā yudhyasva jetāsi raṇe sapatnān
sañjaya uvāca
etacchrutvā vacanaṁ keśavasya kṛtāñjalirvepamānaḥ kirīṭī namaskṛtvā bhūya evāha kṛṣṇaṁ sagadgadaṁ bhītabhītaḥ praṇamya

(Ch.11/33—35)

सूर्यो० ५।४३, सूर्या० ५।५७ — **तृतीया-श्राद्ध, श्रीगणेशचतुर्थीव्रत**

आज प्रातः भुवनेश्वर सिंह एडवोकेट मुजफ्फरपुर.
जे.एन.[illegible] इंजीनियरिंग की [illegible] समिति के प्रबन्धक [illegible]
आये मिले। समाचार लेकर वापस गये।
आज डा० योगेन्द्रप्रसाद शर्मा श्री राजेन्द्र शर्मा [illegible] बक्सर
[illegible] पं० राम[illegible] को पत्र लिखा। इनका अपने
स्वास्थ्य से रुग्ण हैं पत्र एवं दक्षिणा के लिये लिखा।
मनोज रचनाएँ देखे। बच्चों लोगों की फीस का [illegible]
रही।

धर्मके लिये धन नहीं चाहिये, मन चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशाङ्कः प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च । नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते।३९।
नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व । अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः।४०।
सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं हे कृष्ण हे यादव हे सखेति । अजानता महिमानं तवेदं मया प्रमादात्प्रणयेन वापि।४१।

vāyuryamo'gnirvaruṇaḥ śaśāṅkaḥ prajāpatistvaṁ prapitāmahaśca namo namaste'stu sahasrakṛtvaḥ punaśca bhūyo'pi namo namaste
namaḥ purastādatha pṛṣṭhataste namo'stu te sarvata eva sarva anantavīryāmitavikramastvaṁ sarvaṁ samāpnoṣi tato'si sarvaḥ
sakheti matvā prasabhaṁ yaduktaṁ he kṛṣṇa he yādava he sakheti ajānatā mahimānaṁ tavedaṁ mayā pramādātpraṇayena vāpi

(Ch.11/39—41)

सूर्यो० ५।४४, सूर्या० ५।५४ — **षष्ठी-सप्तमी-श्राद्ध**

आज पू० वैद खातेसे दवा दारूके लिये ५०० रुपये उठाए।
१५० रु० प्र० पत्नी को तीर्थ देवा - श्री ब्रजजी।
सहसा केन्द्रीय कारागार जबलपुर. डॉ० चन्द्रशेखर मिश्र जी
का पत्र। उनके पत्र भी आये हैं।
आज. विक्रमा ठाकुर, पटना को पत्र लिखा। प० चन्द्रशेखर
तिवारी जी को भी पत्र लिखा।

पारमार्थिक उन्नति करनेवालेकी लौकिक उन्नति स्वतः होती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि सन्न्यस्य मत्पराः । अनन्येनैव योगेन मां ध्यायन्त उपासते।६।
तेषामहं समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात्। भवामि नचिरात्पार्थ मय्यावेशितचेतसाम्।७।
मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धिं निवेशय। निवसिष्यसि मय्येव अत ऊर्ध्वं न संशयः।८।

ye tu sarvāṇi karmāṇi mayi sannyasya matparāḥ ananyenaiva yogena māṁ dhyāyanta upāsate
teṣāmahaṁ samuddhartā mṛtyusaṁsārasāgarāt bhavāmi nacirātpārtha mayyāveśitacetasām
mayyeva mana ādhatsva mayi buddhiṁ niveśaya nivasiṣyasi mayyeva ata ūrdhvaṁ na saṁśayaḥ
(Ch.12/6—8)

सूर्यो० ५।४८, सूर्या० ५।४४ — **अमावास्या, पितृ-विसर्जन**

आज स्वामी हरिदेवगिरि जी, कारागार से बाहर हो गये।
उनकी दस दिनों की जेल की सजा पूरी हो गई।
पड़ी मार कबीर की, चित से दिया उतार। [illegible]
दूर रहना। अपनी प्रतिष्ठा बनाना बहुत आवश्यक है।

x x

आज पोस्ट आफिस से हनुमानप्रसाद खाते से, ५००० रुपये उतारे।
दशहरा पूजा तथा अन्य नवमी के लिये।
आज वकील श्री केशवराम जी को रेलवे पास के बाबत,
दानापुर से मंगाकर रखने के लिये लिखा। उन्हीं के पत्र के
माध्यम से एक अप्रूव्ड 'जनरल मैनेजर' को भी
लिखा।
दानापुर के वर्तमान [illegible] पास बनाने वाले आनंद कुमार शर्मा
[illegible] को भी पत्र लिखा कि पास की [illegible]
की व्यवस्था किये रहेंगे कि [illegible] में हो।

x x x

सच्ची बातको स्वीकार करना मनुष्यका धर्म है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः । शीतोष्णसुखदुःखेषु समः सङ्गविवर्जितः ।१८।
तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी सन्तुष्टो येन केनचित्। अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान्मे प्रियो नरः ।१९।
ये तु धर्म्यामृतमिदं यथोक्तं पर्युपासते। श्रद्दधाना मत्परमा भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः ।२०।

samaḥ śatrau ca mitre ca tathā mānāpamānayoḥ śītoṣṇasukhaduḥkheṣu samaḥ saṅgavivarjitaḥ
tulyanindāstutirmaunī santuṣṭo yena kenacit aniketaḥ sthiramatirbhaktimānme priyo naraḥ
ye tu dharmyāmṛtamidaṁ yathoktaṁ paryupāsate śraddadhānā matparamā bhaktāste'tīva me priyāḥ

(Ch.12/18—20)

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे भक्तियोगो नाम द्वादशोऽध्यायः ।१२।

सूर्यो० ५।५१, सूर्या० ५।३९

दीनी पाण्डे क० ... वाला मार्कण्डेय ... की. मिश्री पर क०.
इकबाल ... ने दरियापुर कॉलेज तथा इन्द्रपुर आदि के
कॉमर्स कॉलेज सुलतानपुर के मिस बातें से ... करके उनको
प्रमोदकुमार को सौंप दिया।
स्वामी हरिदर्शनानन्द जी बड़े धूर्त किस्म। स्वार्थी उदर पोषक हैं
आडम्बरी साधु हैं। उन्हें भजन कीर्तन सत्संग - आत्मबोध की
कोई आवश्यकता नहीं। वे महामण्डल को केन्द्र बनाकर पेट
भरना और सुखभोग की लालसा में निरन्तर व्यग्र रहते हैं।
उनसे संबंध होना कि उनकी आशा छोड़ देना ही
उचित है। इसलिये दाढ़ कड़े लिखकर उन्हें महामण्डल
भेज दिया। पटना के पत्रकार - बीती के अपने भक्त प्रम
शिष्य श्री कालिका ठाकुर को एक लो ... उद्बोधनात्मक
लिख भेजा। संसार स्वार्थ की आँधी में है। माया
सबको तिगनी नाच नचाती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहिरन्तश्च भूतानामचरं चरमेव च। सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयं दूरस्थं चान्तिके च तत्।१५।
अविभक्तं च भूतेषु विभक्तमिव च स्थितम्। भूतभर्तृ च तज्ज्ञेयं ग्रसिष्णु प्रभविष्णु च।१६।
ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमसः परमुच्यते। ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं हृदि सर्वस्य विष्ठितम्।१७।

bahirantaśca bhūtānāmacaraṁ carameva ca sūkṣmatvāttadavijñeyaṁ dūrasthaṁ cāntike ca tat
avibhaktaṁ ca bhūteṣu vibhaktamiva ca sthitam bhūtabhartṛ ca tajjñeyaṁ grasiṣṇu prabhaviṣṇu ca
jyotiṣāmapi tajjyotistamasaḥ paramucyate jñānaṁ jñeyaṁ jñānagamyaṁ hṛdi sarvasya viṣṭhitam

(Ch. 13/15—17)

सूर्यो० ५।५४, सूर्या० ५।३१ सोमप्रदोष

आत्मा या चेतना का प्रकाशन तो कमोबेश सभी शरीरों में होता है। यहाँ तक कि पत्थर भी ईश्वर-चेतन (मूर्छित चेतना) है। जड़ पदार्थों में चेतना सो रही है, वनस्पतियों में स्वप्न देख रही है, पशुओं में जग रही है, और मनुष्यों में चिन्तन कर रही है। केवल ईश्वर विशुद्ध चैतन्य है, और अशरीरी है। यही आत्मा की तुरीय अवस्था है। जो निर्बन्ध होने के कारण पारदर्शी है कि उसे संपूर्ण ब्रह्मांड की घटित, अघटित सभी २ घटनाओं का नितप्रति ज्ञान होता रहता है। आत्मा का पारदर्शी प्रकाशन मानवशरीर में ही होता है। प्रकाश केवल प्रकाश है। वह न कभी मन्द होता है और नहीं प्रखर। प्रकाश [redacted] की,

की वृद्धि या ह्रास में वासना का हल्का या प्रगाढ़ होना है। पेड़ पौधे, कीड़े-मकोड़े और पशु पक्षी आदि में वासना गाढ़ी है, और उन्हें अपने गहित शरीर में आत्मा के साथ गुजारते हुए जबर भोगते रहते हैं। लालटेन का शीशा गंदा है तो प्रकाश मलिन होता है। उसे साफ कर दीजिए तो प्रकाश चमकने लगेगा। इसी तरह चित्त की दर्पण पर कर्म संस्कारों की मोटी परतें जमी हुई हैं। उसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इति क्षेत्रं तथा ज्ञानं ज्ञेयं चोक्तं समासतः। मद्भक्त एतद्विज्ञाय मद्भावायोपपद्यते।१८।
प्रकृतिं पुरुषं चैव विद्ध्यनादी उभावपि। विकारांश्च गुणांश्चैव विद्धि प्रकृतिसम्भवान्।१९।
कार्यकरणकर्तृत्वे हेतुः प्रकृतिरुच्यते। पुरुषः सुखदुःखानां भोक्तृत्वे हेतुरुच्यते।२०।

iti kṣetraṁ tathā jñānaṁ jñeyaṁ coktaṁ samāsataḥ madbhakta etadvijñāya madbhāvāyopapadyate
prakṛtiṁ puruṣaṁ caiva viddhyanādī ubhāvapi vikārāṁśca guṇāṁścaiva viddhi prakṛtisambhavān
kāryakaraṇakartṛtve hetuḥ prakṛtirucyate puruṣaḥ sukhaduḥkhānāṁ bhoktṛtve heturucyate

(Ch.13/18—20)

सूर्यो० ५।५५, सूर्या० ५।३०

विवेक के जागने से मौजूदा पैसा चमकने लगेगा। मनुष्य का
शरीर भी स्फटिक पत्थर की भाँति है और उसमें और उसमें आत्मा के
ज्ञान-प्रकाश को प्रतिबिम्बित करने की अपार शक्ति है, क्षमता है।
शरीर के कल्मष (काम, माया, क्रोध, लोभ) को निरन्तर साफ करते
रहना होगा। यह सफाई कई जन्मों की साधना से आती है।
जिस दिन वासना का कोहरा छट जायेगा, उस दिन कई जन्मों के
सुकर्म फलीभूत होंगे, आत्म-प्रकाश से बुद्धि निर्मल हो
जायेगी, उसमें विवेक जग जायेगा, नित्य-अनित्य की
पहचान होने लगेगी। मन का कोलाहल शान्त हो जायेगा,
और वह सत्यसंकल्प से युक्त होकर मनुष्य को मोक्ष के
दहलीज तक पहुँचा देगा। निर्मल मन के निर्देशन में
इन्द्रियाँ सन्मार्ग पर चलने लगेंगी। धीरे धीरे वासनाएँ
उड़ जायेंगी, अपने पराये का भेद मिट जायेगा और
इस प्रक्रिया से शरीर का अन्त ईश्वर इच्छा के लिये
हो जायेगा। ऐसी अवस्था में जीवन्मुक्त निस्पृह भाव
से अपने शरीर को वैसे ही त्याग देगा, जैसे सर्प
बिना मोह के अपनी केंचुली छोड़ देता है।

अब मैं पुनः पाप नहीं करूँगा—यह पापका असली प्रायश्चित्त है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुरुषः प्रकृतिस्थो हि भुङ्क्ते प्रकृतिजान्गुणान्। कारणं गुणसङ्गोऽस्य सदसद्योनिजन्मसु। २१।
उपद्रष्टानुमन्ता च भर्ता भोक्ता महेश्वरः। परमात्मेति चाप्युक्तो देहेऽस्मिन्पुरुषः परः। २२।
य एवं वेत्ति पुरुषं प्रकृतिं च गुणैः सह। सर्वथा वर्तमानोऽपि न स भूयोऽभिजायते। २३।

puruṣaḥ prakṛtistho hi bhuṅkte prakṛtijānguṇān kāraṇaṁ guṇasaṅgo'sya sadasadyonijanmasu
upadraṣṭānumantā ca bhartā bhoktā maheśvaraḥ paramātmeti cāpyukto dehe'sminpuruṣaḥ paraḥ
ya evaṁ vetti puruṣaṁ prakṛtiṁ ca guṇaiḥ saha sarvathā vartamāno'pi na sa bhūyo'bhijāyate

(Ch.13/21—23)

सूर्यो० ५।५५, सूर्या० ५।२९ — **व्रत-पूर्णिमा, शरत्-पूर्णिमा**

आज दोपहर गायत्री [illegible] राजपुर रोड के केन्द्रीय
कार्यालय में गये। जोगेन्द्र कुमार (किट्स [illegible] -
[illegible] बनाने वाले [illegible] बनाकर
[illegible]। [illegible]
[illegible] है। उनके [illegible]
[illegible]
[illegible] वाले [illegible] और
[illegible] की [illegible] की [illegible]
[illegible] सहयोग [illegible] किया। उन्होंने
सहर्ष सहयोग देना स्वीकार किया।
[illegible] से [illegible] के साथ देवेन्द्र [illegible]।
[illegible] से [illegible] किये।

नाशवान्में अपनापन अशान्ति और बन्धन देनेवाला है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ध्यानेनात्मनि पश्यन्ति केचिदात्मानमात्मना । अन्ये साङ्ख्येन योगेन कर्मयोगेन चापरे । २४ ।
अन्ये त्वेवमजानन्तः श्रुत्वान्येभ्य उपासते । तेऽपि चातितरन्त्येव मृत्युं श्रुतिपरायणाः । २५ ।
यावत्सञ्जायते किञ्चित्सत्त्वं स्थावरजङ्गमम् । क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात्तद्विद्धि भरतर्षभ । २६ ।

dhyānenātmani paśyanti kecidātmānamātmanā anye sāṅkhyena yogena karmayogena cāpare
anye tvevamajānantaḥ śrutvānyebhya upāsate te'pi cātitarantyeva mṛtyuṁ śrutiparāyaṇāḥ
yāvatsañjāyate kiñcitsattvaṁ sthāvarajaṅgamam kṣetrakṣetrajñasaṁyogāttadviddhi bharatarṣabha

(Ch.13/24—26)

सूर्यो० ५।५६, सूर्या० ५।२८ — पूर्णिमा, कार्तिक-स्नानारम्भ

प्रातः [illegible] पोस्टमास्टर मिले। [illegible] के साथ
[illegible] मेरे [illegible] [illegible] पर
[illegible] है। [illegible] के [illegible] पोस्टमास्टर
साहब [illegible] उनके बड़े भाई के [illegible]
के लिये। [illegible] पहुंचे। [illegible] [illegible]
[illegible] मिले [illegible] [illegible] मिले [illegible]
के बाद दोनों के [illegible] [illegible] पूजालयमें किये।
[illegible] [illegible] [illegible] जरूर।
[illegible] उतरकर १ बजे [illegible] राय के [illegible] पहुंचे,
उनके [illegible] भाई श्री दामोदर राय की [illegible]
होने पे [illegible]। [illegible] उनके भाई [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] अनुमान [illegible]। दामोदर राय [illegible]
और [illegible] समाजसेवक हैं। [illegible] [illegible]
[illegible] रात्रि विश्राम किया।

अगर अपनी सन्तानसे सुख चाहते हो तो अपने माता-पिताकी सेवा करो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समं सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन्तं परमेश्वरम्। विनश्यत्स्वविनश्यन्तं यः पश्यति स पश्यति। २७।
समं पश्यन्हि सर्वत्र समवस्थितमीश्वरम्। न हिनस्त्यात्मनात्मानं ततो याति परां गतिम्। २८।
प्रकृत्यैव च कर्माणि क्रियमाणानि सर्वशः। यः पश्यति तथात्मानमकर्तारं स पश्यति। २९।

samaṁ sarveṣu bhūteṣu tiṣṭhantaṁ parameśvaram vinaśyatsvavinaśyantaṁ yaḥ paśyati sa paśyati
samaṁ paśyanhi sarvatra samavasthitamīśvaraṁ na hinastyātmanātmānaṁ tato yāti parāṁ gatim
prakṛtyaiva ca karmāṇi kriyamāṇāni sarvaśaḥ yaḥ paśyati tathātmānamakartāraṁ sa paśyati
(Ch.13/27—29)

सूर्यो० ५।५६, सूर्यां० ५।२७

प्रातः आनन्द केशव से मिलकर हुए।
पाठेश्वर तथा उनके पुत्र प्रमोद कुमार रंजन आदि [illegible] मिलने
आये पूजा [illegible] करके चले गये। पुनः मठ में आकर
भेंट की तो काफी बातचीत हुआ।

कार्तिक कृष्ण मठ में पहुँचे पहुँचे। कुमार के शारदा तथा निर्मलानन्द
विवेकानन्द पहले से आये हुए थे। भोजन विश्राम किया।
स्वामी हरि वैराग्यानन्द पहले से आकर टिके थे।
फोन करके प्रीति नगर और [illegible] [illegible]
आये थे।

शाम को आकर [illegible] के साथ के और मेरे शिष्य
उद्धव जी आये। उन्हें ठीक [illegible] [illegible]
लिये [illegible] के साथ [illegible] प्राण में [illegible]
[illegible] सौंप दिया।
प्रमोद कुमार जी पत्नी को दवा के [illegible] ६० आठ
[illegible] [illegible] के [illegible] २० रुपये दिये।
[illegible] दवा के लिये [illegible] किया।
[illegible] १५ रु. [illegible] ८२ रु. [illegible]
मंगाया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यदा भूतपृथग्भावमेकस्थमनुपश्यति। तत एव च विस्तारं ब्रह्म सम्पद्यते तदा। ३०।
अनादित्वान्निर्गुणत्वात्परमात्मायमव्ययः । शरीरस्थोऽपि कौन्तेय न करोति न लिप्यते। ३१।
यथा सर्वगतं सौक्ष्म्यादाकाशं नोपलिप्यते। सर्वत्रावस्थितो देहे तथात्मा नोपलिप्यते। ३२।

yadā bhūtapṛthagbhāvamekasthamanupaśyati tata eva ca vistāraṁ brahma sampadyate tadā
anāditvānnirguṇatvātparamātmāyamavyayaḥ śarīrastho'pi kaunteya na karoti na lipyate
yathā sarvagataṁ saukṣmyādākāśaṁ nopalipyate sarvatrāvasthito dehe tathātmā nopalipyate

(Ch.13/30—32)

सूर्यो० ५।५७, सूर्या० ५।२६

आज प्रातः [illegible] श्री राजगुरु गणपति [illegible]
जी [illegible] सर्टिफिकेट [illegible]। उन्होंने अपने
मामा के द्वारा भेजा पत्र एवं [illegible] रुपये [illegible]
के [illegible] [illegible] के [illegible]
होगा।

कार्तिक कृष्ण ४, रविवार, 19 OCT.

सूर्यो० ५।५७, सूर्या० ५।२५

श्रीगणेशचतुर्थीव्रत (करवाचौथ)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यथा प्रकाशयत्येकः कृत्स्नं लोकमिमं रविः। क्षेत्रं क्षेत्री तथा कृत्स्नं प्रकाशयति भारत।३३।
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोरेवमन्तरं ज्ञानचक्षुषा। भूतप्रकृतिमोक्षं च ये विदुर्यान्ति ते परम्।३४।

yathā prakāśayatyekaḥ kṛtsnaṁ lokamimaṁ raviḥ kṣetraṁ kṣetrī tathā kṛtsnaṁ prakāśayati bhārata
kṣetrakṣetrajñayorevamantaraṁ jñānacakṣuṣā bhūtaprakṛtimokṣaṁ ca ye viduryānti te param
(Ch.13/33-34)

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोगो नाम त्रयोदशोऽध्यायः।१३।

सूर्यो० ५।५८, सूर्या० ५।२४

आज सायंकाल मुजफ्फरपुर के श्री त्रिवेणी प्रसाद सिंह
अपने संबंधी श्री सिद्धेश्वर प्रसाद सिंह 'मन्ना बाबू' - सरैया
एवं स्थानीय रामगजबली श्रीमान के साथ आ पहुंचे।
उन्होंने पुनः निवेदन किया कि रक्षा प्रमाण: मनी के भी बकील
हैं - वयवरिष्ठ न्यायालय के अधिवक्ता आपसे मिलने आये थे।
वे मठ की भूमि में अपना सहयोग देंगे - आप उनके सामने
नक्शा-एस्टीमेट पेश कर आयें। नक्शा-एस्टीमेट-इंजिनियर
उन दोनों और के दो मंजिले भवनों का आधुनिक ढंग रूपमें
बनाया जाये। मैं पुनः इस अनुकूल पर उनके बाद उनके
के निर्माण पर मकान के ढूंढने जाऊंगा। वहां सेवकों
को रखने लेंगे।
प्रोफेसर श्री सायंकाल आये तो उन्हें मैंने संदेश सुनाया।
रेलवे कालेज के कुछ छात्र आये। कागज में कबीर का रहस्य-
वैभव अध्यात्म वैराग्य प्राप्ति का प्रमाण पत्र लेना
मठ का नाम, प्रतिलिपि रिपोर्ट नं० का प्रकाशन।

मुझे सुख मिल जाय—यह सब पापोंकी जड़ है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

अथ चतुर्दशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

परं भूयः प्रवक्ष्यामि ज्ञानानां ज्ञानमुत्तमम्। यज्ज्ञात्वा मुनयः सर्वे परां सिद्धिमितो गताः।१।
इदं ज्ञानमुपाश्रित्य मम साधर्म्यमागताः। सर्गेऽपि नोपजायन्ते प्रलये न व्यथन्ति च।२।

śrībhagavānuvāca

paraṁ bhūyaḥ pravakṣyāmi jñānānāṁ jñānamuttamam yajjñātvā munayaḥ sarve parāṁ siddhimito gatāḥ
idaṁ jñānamupāśritya mama sādharmyamāgatāḥ sarge'pi nopajāyante pralaye na vyathanti ca

(Ch.14/1-2)

सूर्यो० ५।५९, सूर्या० ५।२३

आज प्रातः कक्का के राघव शर्मा आये। उनसे एकाएक-सा प्यार हुआ। वे काशी अपने संबंधी के यहाँ आये थे जो राजस्थान के हैं और अभिनेता हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मम योनिर्महद्ब्रह्म तस्मिन्गर्भं दधाम्यहम् । सम्भवः सर्वभूतानां ततो भवति भारत।३।
सर्वयोनिषु कौन्तेय मूर्तयः सम्भवन्ति याः। तासां ब्रह्म महद्योनिरहं बीजप्रदः पिता।४।
सत्त्वं रजस्तम इति गुणाः प्रकृतिसम्भवाः। निबध्नन्ति महाबाहो देहे देहिनमव्ययम्।५।

mama yonirmahadbrahma tasmingarbhaṁ dadhāmyaham sambhavaḥ sarvabhūtānāṁ tato bhavati bhārata
sarvayoniṣu kaunteya mūrtayaḥ sambhavanti yāḥ tāsāṁ brahma mahadyoniraham bījapradaḥ pitā
sattvaṁ rajastama iti guṇāḥ prakṛtisambhavāḥ nibadhnanti mahābāho dehe dehinamavyayam

(Ch.14/3—5)

सूर्यो० ५।५९, सूर्या० ५।२२ — डा॰ कमलाकान्त शर्मा - गायत्री राव के छोटे भाई प्रातः मिले - [illegible] एक [illegible] के मित्र के साथ)

आज [illegible] [illegible] [illegible] नोट में खबर [illegible] राष्ट्रपति के० आर० नारायणन [illegible] किया - उ० प्र० [illegible] केन्द्रीय मंत्रि मंडल का [illegible] के लोकतन्त्र के रक्षक के रूप में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अधिकारी बने।

मैंने [illegible] एवं [illegible] को [illegible] में [illegible] [illegible] पद की [illegible] [illegible] रोग का [illegible] संकेत दे दिया। [illegible] से नहीं [illegible]। २.११. [illegible] रविवार को बैठक [illegible] गयी है। [illegible] [illegible] [illegible] अपने [illegible] के लिए [illegible] को [illegible] किया, [illegible] के बाद [illegible] गये।

जहाँ लौकिक सुख मिलता हुआ दीखे, वहाँ समझ लो कि कोई खतरा है!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तत्र सत्त्वं निर्मलत्वात्प्रकाशकमनामयम् । सुखसङ्गेन बध्नाति ज्ञानसङ्गेन चानघ ।६।
रजो रागात्मकं विद्धि तृष्णासङ्गसमुद्भवम् । तन्निबध्नाति कौन्तेय कर्मसङ्गेन देहिनम् ।७।
तमस्त्वज्ञानजं विद्धि मोहनं सर्वदेहिनाम् । प्रमादालस्यनिद्राभिस्तन्निबध्नाति भारत ।८।

tatra sattvaṁ nirmalatvātprakāśakamanāmayam sukhasaṅgena badhnāti jñānasaṅgena cānagha
rajo rāgātmakaṁ viddhi tṛṣṇāsaṅgasamudbhavam tannibadhnāti kaunteya karmasaṅgena dehinam
tamastvajñānajaṁ viddhi mohanaṁ sarvadehinām pramādālasyanidrābhistannibadhnāti bhārata

(Ch.14/6—8)

सूर्यो० ६।००, सूर्या० ५।२२ — अहोईव्रत

आज मन्नाबाबू [illegible] मांगी कि राजेन्द्र सिंह अधिवक्ता, बंबई, नहीं आ सके। दिन में आकस्मिक वर्षा भी हुई। [illegible] [illegible] [illegible] पत्र लिखा। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] रहने के स्थान [illegible]। [illegible] [illegible] में [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] दिल्ली में कोई [illegible] नहीं [illegible] रहा है। [illegible] का [illegible] हो है।

मन्नाबाबू [illegible] कि स्वामीजी आगामी 22.10 को मेरे साथ मावी राजेन्द्र सिंह के [illegible] पर [illegible] [illegible] चले होंगे।

प्रमोदकुमार ने [illegible] सिंह के [illegible] [illegible] के [illegible] पर [illegible] [illegible] [illegible] किया है।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
सहसा [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] के साथ आ गये। [illegible] के पास [illegible] [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कोई [illegible] नहीं [illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible] [illegible] है तो [illegible]। [illegible] [illegible] है। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] से [illegible] के ही [illegible] [illegible] है।

अपना जीवन अपने लिये नहीं है, प्रत्युत दूसरोंके हितके लिये है।

सहसा [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] के [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सत्त्वं सुखे सञ्जयति रजः कर्मणि भारत । ज्ञानमावृत्य तु तमः प्रमादे सञ्जयत्युत। ९।
रजस्तमश्चाभिभूय सत्त्वं भवति भारत । रजः सत्त्वं तमश्चैव तमः सत्त्वं रजस्तथा।१०।
सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन्प्रकाश उपजायते । ज्ञानं यदा तदा विद्याद्विवृद्धं सत्त्वमित्युत।११।

sattvaṁ sukhe sañjayati rajaḥ karmaṇi bhārata jñānamāvṛtya tu tamaḥ pramāde sañjayatyuta
rajastamaścābhibhūya sattvaṁ bhavati bhārata rajaḥ sattvaṁ tamaścaiva tamaḥ sattvaṁ rajastathā
sarvadvāreṣu dehe'sminprakāśa upajāyate jñānaṁ yadā tadā vidyādvivṛddhaṁ sattvamityuta

(Ch.14/9—11)

मृर्यो० ६।००, सूर्या० ५।२१

आज कुछ [illegible] दी ना [illegible] [illegible] -
बच्चीओं के [illegible] [illegible] का [illegible] गया । [illegible] [illegible]
[illegible] नहीं हो रहा है ।

भगवन्नामका जप और कीर्तन—दोनों कलियुगसे रक्षा करके उद्धार करनेवाले हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उदासीनवदासीनो गुणैर्यो न विचाल्यते । गुणा वर्तन्त इत्येव योऽवतिष्ठति नेङ्गते । २३ ।
समदुःखसुखः स्वस्थः समलोष्टाश्मकाञ्चनः । तुल्यप्रियाप्रियो धीरस्तुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः । २४ ।
मानापमानयोस्तुल्यस्तुल्यो मित्रारिपक्षयोः । सर्वारम्भपरित्यागी गुणातीतः स उच्यते । २५ ।

udāsīnavadāsīno guṇairyo na vicālyate guṇā vartanta ityeva yo'vatiṣṭhati neṅgate samaduḥkhasukhaḥ svasthaḥ samaloṣṭāśmakāñcanaḥ tulyapriyāpriyo dhīrastulyanindātmasaṁstutiḥ mānāpamānayostulyastulyo mitrāripakṣayoḥ sarvārambhaparityāgī guṇātītaḥ sa ucyate
(Ch.14/23—25)

सूर्यो० ६ । ५, सूर्यो० ५ । १६ — **दीपावली**

सैयद सालार मसूद गजनी के साथ भारत आया था।
आयु केवल २२-२३ वर्ष की थी, उसने श्रावस्ती के राजा सुहेलदेव
जो जाति के पासी थे, को डोला देने के लिए दबाव डाला और न देने पर [illegible]
राजा मारा गया। राजा सुहेलदेव की स्मृति में [illegible]
किन्तु सैयद सालार गाजी मान लिया गया और उसकी पूजा
हिन्दू समाज में ब्राह्मणों के घर भी होने लगी।
अलवर नरेश [illegible] को [illegible] में [illegible]
[illegible] दिया था - राजा [illegible] के
[illegible] हुए थे। [illegible]
और [illegible]
[illegible] दीपावली के [illegible] पं० [illegible]
[illegible] देखा और [illegible]
का [illegible]
[illegible] था।

वस्तु-व्यक्तिसे सुख लेना महान् जड़ता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः। न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्। २३।
तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ। ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्म कर्तुमिहार्हसि। २४।

yaḥ śāstravidhimutsṛjya vartate kāmakārataḥ na sa siddhimavāpnoti na sukhaṁ na parāṁ gatim
tasmācchāstraṁ pramāṇaṁ te kāryākāryavyavasthitau jñātvā śāstravidhānoktaṁ karma kartumihārhasi

(Ch.16/23-24)

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे दैवासुरसम्पद्विभागयोगो नाम षोडशोऽध्यायः। १६।

सूर्यो० ६। १७, सूर्या० ५। ५ **श्रीगणेशचतुर्थीव्रत**

सौजन्यमूर्ति ख्यातिप्राप्त ज्योतिष साहित्यकार पं. गणेश लावे का बंगाली-पूर्व नगर में देहावसान का शोकसंदेश प्राप्त हुआ। उनके पुत्र शशि ~~[illegible]~~ (चि शौरि) लावे का पत्र मिला.

सारी खुशी देनेमें है, चाहने या माँगनेमें नहीं ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्मरण-पत्र

"वीर सावरकर" ले॰-शिवकुमार गोयल.

श्री सुरेन्द्र नाथ राय, (कालीन प्रशिक्षण अधिकारी
469/3 विजयपार्क विस्तार.
देहरादून (उ॰प्र॰), पिन-248001

डा॰ आदित्यनारायण सिंह (पावन)

जे॰१२/१०८ 'पावन-निवास', धूपचण्डी.

जगत गंज, वाराणसी-२

फोन नं॰- 388996

c/o राजा चेतसिंह शिक्षा-संस्थान,
नाटीइमली, वाराणसी-२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

INSURED

क्रमांक No. 5557

टिकटों का मूल्य रु० ... P.

Stamps affixed Rs.

श्री ... प्राप्त किया

...ved a [illegible]

...का नाम

...ddressed to...

तारीख मोहर

Date Stamp

पानेवाले अधिका...

Signature of Rec...

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्रमांक/No

लगाये गये टिकटों का मूल्य रु० 13
Amount of Stamps affixed Rs.
एक रजिस्ट्री बीमा* प्राप्त
Received a Registered
पानेवाले का नाम
Addressed to
बीमे की रकम (शब्दों में) (अंकों में)
Insured for Rs. (in figures)
बीमा शुल्क रु०
Insured fee Rs.
भेजनेवाले का नाम व पता
Name and address of sender
डाकघर नियमावली में दी गई शर्तों
के अधीन जारी की गई
Issued subject to terms and

नरेन्द्रनाथ शर्मा - सिपाही .

श्री सदानन्द पाण्डेय - शांडिल्य
पुत्र .
श्री देवशरण पाण्डेय
ग्रा० हथिजङ्गा . पट्टीपुरके पांडे
देवीशरण पाण्डेय - स्व०
१. अमरेश्वरी पाण्डेय बरवाली
२. शोभनाथ शरण मिश्र -
ग्रा० बारी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varana

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection